



"श्री विष्णु विद्या"

परम पद में विश्राम



Sacred Circle

एक दिव्य संस्मरण



प्रस्तावना



मेरा नाम राजेश माल्या है, मैं मुंबई का निवासी हूँ और वर्तमान में एक प्रमुख वैश्विक फिन्टेक कंपनी में ऑपरेशन्स निदेशक के रूप में कार्यरत हूँ। मैं 53 वर्ष का हूँ और पिछले साढ़े तीन वर्षों से **सेक्रिड सर्कल ग्रुप** से सक्रिय रूप से जुड़ा हूँ। इस अवधि में मैंने नियमित रूप से ध्यान

और हीलिंग सत्रों में भाग लिया है, और इन सत्रों ने मेरे जीवन को गहराई से प्रभावित किया है।

समय के साथ, मेरे भीतर एक सुंदर परिवर्तन हुआ है। मैंने न केवल दिव्य ज्ञान को आत्मसात किया है, जिससे मेरी आत्मा समृद्ध हुई है, बल्कि व्यक्तिगत रूप से भी एक नए स्तर का विकास अनुभव किया है। जीवन की चुनौतियाँ अब पहले जैसी कठिन नहीं लगती; उनका सामना अब मैं स्पष्टता, शांति और करुणा के साथ करता हूँ। मेरी चेतना का दिव्यता से संबंध और अधिक सूक्ष्म, गहन एवं परिपूर्ण हो गया है - जैसे आत्मा स्वयं परमस्रोत में विलीन होने को आतुर हो। इससे मुझे भीतर





से संतोष और आनंद की अनुभूति होती है। यह आध्यात्मिक शक्ति मेरे जीवन के हर क्षण को आनंदमय और सार्थक बना रही है।

4 से 6 अप्रैल 2025 के दौरान **माँ उमिया धाम, नागपुर** में आयोजित **सेक्रिड सर्कल ग्रुप** के पहले व्यक्तिगत शिविर में भाग लेना मेरे जीवन का एक अविस्मरणीय अनुभव रहा। इस शिविर का उद्देश्य **"श्री विष्णु विद्या"** जैसी उच्च कोटि की साधना सीखना और अनुभव करना था। **यह एक ऐसा अनुभव था जो हृदय की गहराइयों को स्पर्श करता है, आत्मा को प्रकाश से भर देता है – जिसे शब्दों में बाँधना कठिन है।** **अद्वितीय और परम सौंदर्य से परिपूर्ण।** वहाँ उपस्थित हर साधक ने सत-चित्त-आनंद का सच्चा अनुभव किया – उन्हें शुद्ध चेतना, भगवान की कृपा और गहरे आनंद का अहसास हुआ। यह ऐसा क्षण था जिसमें कई लोग परमानंद के आँसुओं से भीग उठे – एक ऐसी स्मृति जो जीवन भर गूँजती रहेगी।

इस शिविर में, हमारे श्रद्धेय **सर** ने अपनी असीम करुणा और प्रेम से हमें वह अमूल्य ज्ञान प्रदान किया जो हमें **सायुज्य मुक्ति** की दिशा में जागृत और तैयार करता है। मैंने उन शिक्षाओं को यथासंभव संजोने का प्रयास किया है।

इस पुस्तिका में मैंने न केवल शिविर के दौरान दिए गए मुख्य बिंदुओं को प्रस्तुत किया है, बल्कि कुछ ऐसे गूढ़ बिंदुओं को भी





समाहित किया है जो मैंने पूर्व ऑनलाइन सत्रों के दौरान सर से सीखे थे। यदि मेरी किसी भी प्रस्तुति में कोई त्रुटि रह गई हो तो मैं उसके लिए क्षमाप्रार्थी हूँ और आप सभी के धैर्य एवं सहानुभूति की हार्दिक सराहना करता हूँ।

इस पुस्तिका में पाठक की सहजता और प्रमुख बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित कराने हेतु मैंने कुछ वाक्यों और अनुभागों की पृष्ठभूमि रंग द्वारा उभारने का प्रयास किया है - वे केवल सजावट के लिए नहीं हैं, बल्कि भावों की गहराई और उनके महत्व को स्पष्ट रूप से उजागर करने के लिए हैं। पुस्तिका के अंत में मैंने उन प्रतिभागियों के अनुभव भी सम्मिलित किए हैं, जो इस शिविर के प्रभाव को उनके दृष्टिकोण से दर्शाते हैं। हर अनुभव एक दिव्य साक्षात्कार है - परिवर्तनकारी, अद्वितीय और अत्यंत शक्तिशाली। ये अनुभव उन प्रचुर आशीर्वादों और दिव्य ऊर्जा से भरे हैं जो इस शिविर में सहज रूप से प्रवाहित हुए।

श्री विष्णु विद्या के अंग्रेज़ी डिजिटल पुस्तिका के प्रकाशन के बाद, मैंने इसके हिंदी अनुवाद का कार्य शुरू किया—यह यात्रा समृद्ध भी रही और विनम्रता से भरी हुई भी। मैं अपनी गहन कृतज्ञता और हार्दिक आभार व्यक्त करना चाहता हूँ श्री अम्बरीष अत्रे और श्री विवेक सिन्हा के





प्रति, जिन्होंने इस अनुवाद प्रक्रिया में स्वेच्छा से सहयोग दिया और अपना समय तथा समर्पण प्रदान किया। उनकी अटूट प्रतिबद्धता और सहज प्रयासों ने इस आध्यात्मिक धरोहर की आत्मा को भाषाओं के पार सुरक्षित रखने में मदद की। इस सार्थक यात्रा में हमारे साथ कदम से कदम मिलाकर चलने के लिए आप दोनों का हृदय से धन्यवाद।

मैं **रायपुरे-सर और लीना-दीदी को हृदय से धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने इन अनुभवों को सभी सेक्रिड सर्कल साधकों के साथ साझा करने की अनुमति दी। उनका यह सहयोग सभी के लिए एक प्रेरणा और अनुग्रह का स्रोत है।**

मैं उनके प्रति कोटिशः कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ, जिनकी अटूट निष्ठा और निःस्वार्थ सेवा भावना ने वर्षों से इन दिव्य और परिवर्तनकारी सत्रों का सतत संचालन किया है। उनका यह अथक प्रयास केवल एक कर्तव्य नहीं, अपितु एक तपस्या रहा है - एक ऐसा पवित्र यज्ञ, जिससे अनगिनत जीवन आलोकित हुए हैं। उन्होंने जिस श्रद्धा और समर्पण से चेतना, सकारात्मकता और आत्मबोध का प्रकाश फैलाया है, वह अत्यंत वंदनीय है।





उनका मार्गदर्शन असंख्य साधकों के लिए न केवल प्रेरणा का स्रोत बना है, बल्कि जीवन में नवचेतना का संचार करने वाला एक दिव्य स्पर्श भी सिद्ध हुआ है। उनकी साक्षात् उपस्थिति से ही वातावरण में एक दिव्य आभा, शांति और उच्च ऊर्जा का अनुभव होता है - मानो आत्मा स्वयं किसी उच्चतर सत्ता से जुड़ गई हो।

हम सभी साधक अत्यंत भाग्यशाली और कृतार्थ हैं कि हमें उनके सान्निध्य में साधना करने का अवसर प्राप्त हुआ, और इस अमूल्य ज्ञान को आत्मसात करने का सौभाग्य मिला।



रायपुरे-सर और लीना-दीदी के प्रति अनंत कृतज्ञता और हृदय से प्रणाम, जिन्होंने इतना पवित्र और दिव्य वातावरण प्रदान किया, जहाँ यह सुंदर आध्यात्मिक अनुभव संभव हो सका।

सादर,

राजेश माल्या





दैवी प्रतिध्वनि: हर शब्द एक मंत्र, हर पृष्ठ एक द्वार



यह पुस्तक केवल श्री विद्या शिविर का एक साधारण विवरण नहीं है। इसमें गहन ज्ञान और पवित्र ऊर्जा समाहित है। इसका प्रत्येक पृष्ठ दिव्य स्पंदनों से परिपूर्ण है। इसे धीरे-धीरे, पूर्ण उपस्थिति और ध्यानमय हृदय के साथ पढ़ें। हर शब्द को अपने अंतरतम में उतरने दें—केवल एक पाठ के रूप में नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक अनुभव के रूप में। जैसे-जैसे आप इसकी मर्म में डूबते जाते हैं, वैसे-वैसे शब्दों के माध्यम से दिव्य उपस्थिति की सूक्ष्म झलक प्रकट होने लगती है।





विषय सूची

दैवी प्रतिध्वनि: हर शब्द एक मंत्र, हर पृष्ठ एक द्वार.....	7
हमारे मार्गदर्शक.....	14
कृतज्ञता एवं प्रणाम.....	17
शिविर का संक्षिप्त परिचय.....	18
शिविर के दौरान कवर किए गए विषय.....	20
श्री विष्णु विद्या.....	23
परम पद में विश्राम - आत्मा का अंतिम विश्रांति स्थान.....	27
"श्री विष्णु विद्या" शिविर की जन्म कथा - सर के शब्दों में....	30
क्षितिज: एक दिव्य आत्मा का स्मरण.....	38
ब्लू एवियन्स (Blue Avians) – गैलेक्टिक बीइंग्स से आशीर्वाद54	
परम सत्ता की समझ: गतिज (Kinetic) और स्थितिज (Potential) ऊर्जा.....	58
"विज्ञान" – अर्थात् विशेष ज्ञान; इसके माध्यम से भी परमात्मा का अनुभव संभव है।.....	60
भगवान विष्णु के दस अवतार: दिव्य संरक्षण की कथा.....	61
मत्स्य अवतार.....	62





कूर्म अवतार.....	65
वराह अवतार -	67
नरसिंह अवतार	69
अहोबिलम मंदिर, आंध्र प्रदेश	70
वामन अवतार.....	73
परशुराम अवतार	75
राम अवतार.....	77
कृष्ण अवतार.....	79
बुद्ध अवतार	81
कल्कि अवतार	84
शालिग्राम	86

वायु तत्व (विचारों) जल तत्व (भावनाओं) और अग्नि तत्व - चित्त (चेतना और रूपांतरण)का संतुलन.....	88
हमारी ग्रंथियाँ और आध्यात्मिकता से जुड़े रसायन	91
रुद्र ग्रंथि को कैसे भेदा जाए और यह क्यों आवश्यक है?.....	99
सेरेब्रोस्पाइनल फ्लूइड (CSF) - एक समग्र यात्रा.....	104
"मृत्युंजय" - शिवाजी सावंत द्वारा रचित एक कालजयी मराठी कृति	105
एस्ट्रल ट्रैवल्स और माँ अनुसूया माता	109





संत पाटीवाली आई का आगमन - परडसिंगा माता सती	
अनसूया की प्रमुख शिष्या	114
भगवान विष्णु.....	116
दस महाविद्याएं :.....	119
मोक्ष की चार अवस्थाएँ (FOUR STAGES OF LIBERATION).....	122
भक्ति—निष्ठा और आत्मसमर्पण —आध्यात्मिक उपलब्धि में	
अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।	123
वैशाख पूर्णिमा पर बुद्ध का निर्वाण.....	125
गुरु नानक देव जी और "तेरा" की कहानी.....	128
सालोक्य मुक्ति : वैकुण्ठ जाना.....	135
बालक दिवाकर के जन्म का रहस्य	139
रायपुरे सर का प्रथम समाधि अनुभव	143
आध्यात्मिक मार्ग में आने वाली बाधाएँ:	145
संत ज्ञानेश्वर: संघर्षों से तपकर महानता को प्राप्त करने की यात्रा .	146
क्वांटम भौतिकी (Quantum Physics).....	150
डबल-स्लिट प्रयोग (Double- slit Experiment)	151
क्वांटम एंटेंगलमेंट (Quantum Entanglement)	155
मिकियस सैटेलाइट प्रयोग (2017).....	160





उंदावली गुफाओं में विष्णु मूर्ति का रहस्य	163
हार्टमैथ.....	171
सायुज्य मुक्ति का अनुभव.....	175
संत नामदेव जी की कथा.....	181
बारदो:	184
आत्मज्ञान का सिद्धांत (THEORY OF ENLIGHTENMENT)	186
श्री लक्ष्मी नारायणी गोल्डन टेम्पल दर्शन के दौरान भगवान विष्णु का दिव्य संदेश.....	189
ध्यानमय आनंद की अमूल्य स्मृतियाँ.....	196
संत पाटीवाली आई की दिव्य उपस्थिति	198
मां उमिया धाम एवं परिसर	202
लीना दीदी द्वारा आयोजित प्रातःकालीन सैर एवं प्राणायाम सत्र.....	206
भक्ति रस में झूमते हुए सैक्रेड सर्कल के साधक	207
सैक्रेड सर्कल के स्वयंसेवकों के प्रति आभार एवं सराहना	209
साधकों के अनुभव.....	211
दिव्य नीला विष्णु लोक.....	211
अंगुली में सुदर्शन चक्र ऊर्जा का प्रवाह!.....	214
मैंने तुरीय अवस्था का अनुभव किया	215
सुदर्शन चक्र की उपचार शक्ति	217





मेरे प्रश्न चमत्कारिक रूप से उत्तरित हुए.....	220
चमत्कारिक उपचार.....	223
दिव्य और परिवर्तनकारी शिविर	226
विष्णु जी की ऊर्जा का अनुभव: एक अविस्मरणीय आध्यात्मिक उपलब्धि	228
परिवर्तनशील आध्यात्मिक यात्रा: भगवान विष्णु से जुड़ाव	229
एक दिव्य यात्रा: नागपुर शिविर में आनंदमय अनुभव	231
अंतर आत्मा की खोज!	234
चमत्कारी और शक्तिशाली हीलिंग - सुदर्शन चक्र द्वारा!	241
दिव्य अनुग्रह और परिवर्तन: श्री विष्णु विद्या नागपुर शिविर में मेरी यात्रा	246
परम ब्रह्म से एकत्व की परम अनुभूति	248
मेरे पहले शिविर का अनुभव— शब्दों से परे एक यात्रा	250
सबकुछ प्राप्त हो चुका था.....	253
अनुग्रह से आलोकित: मेरी आध्यात्मिक यात्रा.....	256
गुरुओं का आशीर्वाद: दिव्य क्षेत्र की यात्रा.....	259
कृतज्ञता और अनुग्रह: शिविर के मेरे अविस्मरणीय दिन	262
शून्यता से पूर्णता की ओर: मेरी दिव्य उपस्थिति की यात्रा	265
पवित्र बंधन: आत्मा की यात्रा	269
हरिद्वार से नागपुर: एक आत्मिक तीर्थयात्रा	270
नागपुर शिविर के पवित्र क्षण: ध्यान, शुद्धिकरण और दिव्य जुड़ाव.....	272
एक पवित्र रूपांतरण यात्रा: श्री विष्णु विद्या शिविर में मेरा अनुभव	276
सुदर्शन चक्र शक्ति को उपचार और विकास के लिए उपयोग करना.	279
नागपुर शिविर: कृतज्ञता, अनुभव और यादें	282





पहला ध्यान शिविर अनुभव: एक दिव्य यात्रा	287
मेरे बच्ची के साथ एक दिव्य विश्राम: एक ब्रह्मांडीय अनुभव"	289
सैक्रेड सर्कल के बारे में	291
हमारा मिशन	291
उपचार, अभिव्यक्ति और जागरूकता	293
हमारे कार्यक्रम	295
हमसे संपर्क करने में संकोच न करें	298





हमारे मार्गदर्शक



सैक्रेड सर्कल के मुख्य मार्गदर्शक श्रीमती लीना रायपुरे और श्री दिवाकर रायपुरे हैं। श्री दिवाकर रायपुरे ने आईआईटी - मद्रास, चेन्नई से एम. टेक किया है, और श्रीमती लीना रायपुरे ने इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस, नागपुर से एम. एससी की डिग्री प्राप्त की है।





दोनों ही मार्गदर्शकों को हीलिंग और ध्यान के क्षेत्र में अत्याधिक गहन और समृद्ध अनुभव प्राप्त है। उन्होंने भारत और विदेशों में अनेक गुरुओं एवं प्रशिक्षकों से अनेक आध्यात्मिक शिक्षाएँ ग्रहण की हैं।

श्री दिवाकर रायपुरे और श्रीमती लीना रायपुरे ने पिछले 28 वर्षों में 100 से अधिक विधियों का अभ्यास किया है। उन्होंने विभिन्न वैज्ञानिक सिद्धांतों और आध्यात्मिक विधियों का गहन अध्ययन किया है और अपनी स्वयं की प्रभावी और सहज शिक्षण तकनीकें विकसित की हैं।

उनकी विधियाँ अत्यंत प्रभावशाली और सरल हैं, कोई भी साधक इन्हें आसानी से सीख सकता है। उनके गुरु की कृपा से उन्हें आत्मिक जागृति प्राप्त हुई, जिससे उनके मार्गदर्शन की गहराई और दिव्यता और अधिक प्रकाशमान हुई। उनकी शिक्षाएँ न केवल ध्यान और उपचार तक सीमित हैं, बल्कि आत्म-उत्थान, चेतना की गहराई और आध्यात्मिक संतुलन को भी जागृत करती हैं। उनका ज्ञान और साधना प्रत्येक साधक के जीवन में चमत्कारी परिवर्तन लाने में सक्षम रही है।





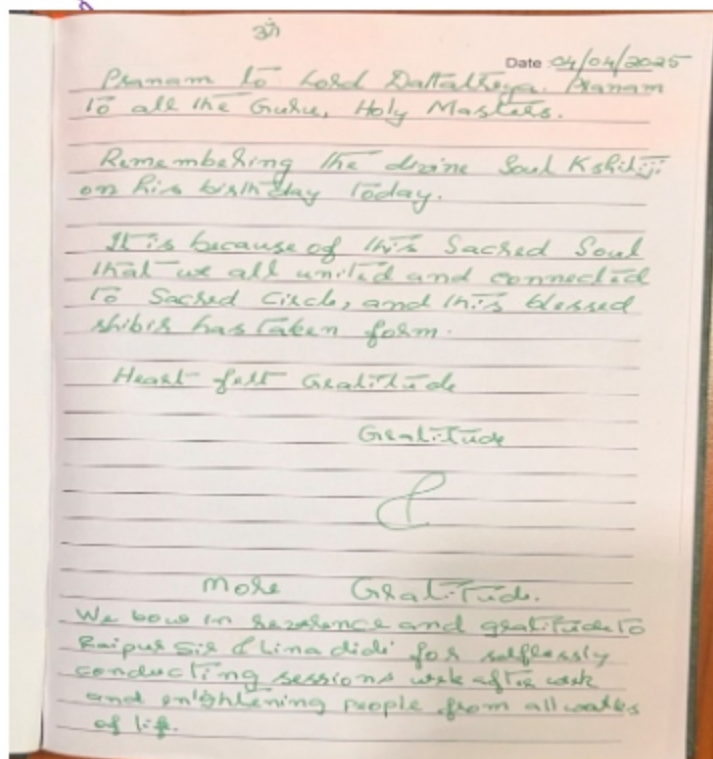
जो भी साधक इस सत्र में सहभागी रहे, उन्हें सैक्रेड सर्कल की ओर से एक विशेष उपहार प्रदान किया गया।





कृतज्ञता एवं प्रणाम

इस पुस्तिका में शिविर से संबंधित विभिन्न विषयों को साझा करने से पूर्व, मैं सर्वप्रथम परमात्मा, समस्त गुरुओं, महात्माओं, और विशेष रूप से दिव्य आत्मा श्री क्षितिज के चरणों में कोटि-कोटि कृतज्ञता और सादर प्रणाम अर्पित करता हूँ।





शिविर का संक्षिप्त परिचय



आध्यात्मिक पथ में मुक्ति की चार अवस्थाओं का वर्णन किया गया है —सालोक्य मुक्ति, सामीप्य मुक्ति, सारूप्य मुक्ति, और सायुज्य मुक्ति। इनका उल्लेख हमारे उपनिषदों, विशेषतः श्रीमद्भागवत और छांदोग्य उपनिषद में भी मिलता है।

संत ज्ञानेश्वर ने भी कहा है:

"भगवान के द्वार पर केवल एक क्षण के लिए खड़े रहने से भी चारों प्रकार की मुक्ति प्राप्त हो सकती है।" अर्थात्,





ईश्वर के द्वार तक पहुँचना ही अपने आप में पूर्णता है। लेकिन, "भगवान के द्वार तक पहुँचना" केवल मंदिर में जाना नहीं है —क्योंकि करोड़ों लोग मंदिर जाते हैं, फिर भी मुक्त नहीं हो पाते।

इसीलिए, भगवान के द्वार तक कैसे पहुँचा जाए, यह समझाने और इन चारों प्रकार की मुक्ति को अनुभव करने हेतु सेक्रेड सर्कल द्वारा एक तीन दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर 4 से 6 अप्रैल 2025 के बीच, माँ उमिया धाम (पारडी), नागपुर में संपन्न हुआ। इस शिविर में भारत के विभिन्न स्थानों और बहरीन से साधक शामिल हुए।

शिविर की पूर्व संध्या 3 अप्रैल की शाम को, ध्यान कक्ष में भगवान शिव, विष्णु, बुद्ध, यीशु, सप्तऋषियों, आकाशीय गुरुओं, गैलेक्टिक बीइंग्स, संतों, योगियों और अन्य दिव्य शक्तियों का आह्वान और प्रतिष्ठापन किया गया।





शिविर के दौरान कवर किए गए विषय

- शरीर, मन और आत्मा के स्तर पर शुद्धिकरण
- वायु तत्व (विचार) और जल तत्व (भावनाओं) का संतुलन
- चक्रों का संतुलन (Chakra balancing)
- ब्लू एवियन्स गैलेक्टिक बीइंग्स से आशीर्वाद प्राप्त करना
- परम सत्ता की समझ: गतिज (Kinetic) ऊर्जा और स्थितिज (Potential) ऊर्जा
- परम स्थिति का वर्णन
- भगवान विष्णु के दस अवतारों की भूमिका
- अवचेतन अवरोधों को हटाने की विधियाँ
- आत्म साक्षात्कार, आत्मा का विस्तार और उसकी अनुभूति
- महान केंद्रीय सूर्य (Great Central Sun) से प्राणिक द्यूब का जुड़ाव
- सेरीब्रोस्पाइनल फ्लूइड (CSF), अमृत
- कुंडलिनी जागरण
- डीएनए सक्रियण (DNA Activation)
- इच्छानुसार थीटा स्थिति (Theta State) उत्पन्न करना





- 🌸 पारडसिंगा माता सती अनुसूया की मुख्य शिष्या संत पाटीवाली आई का आगमन
- 🌸 स्केलर वेल्स उत्पन्न करने की विधि
- 🌸 चार प्रकार की मुक्ति - सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य, सायुज्य
- 🌸 उंदावली गुफा (आंध्र प्रदेश) में विष्णु प्रतिमा का रहस्य
- 🌸 टू-पॉइंट हीलिंग तकनीक और ऊर्जा संप्रेषण
- 🌸 क्वांटम फिजिक्स में एंटीगलमेंट और उसका आध्यात्मिक महत्व
- 🌸 सुदर्शन चक्र की शक्ति
- 🌸 रुद्र ग्रंथि को कैसे भेदा जाए और यह क्यों आवश्यक है
- 🌸 शरीर में विष्णु ज्योति का अनुभव – सुरक्षा एवं आनंद के लिए
- 🌸 भगवान विष्णु के साथ सायुज्यता
- 🌸 प्रकाश की अनुभूति का सिद्धांत और पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण का आध्यात्मिक प्रभाव
- 🌸 परम सत्ता के साथ एकत्व में दिव्य प्रकाश का अनुभव
- 🌸 परम सत्ता में दिव्य शून्यता (Divine Emptiness) का अनुभव





सायंकालीन गतिविधियाँ

शिविर की प्रत्येक शाम को भजन और कीर्तन आयोजित किए गए, जिनमें साधक गानों पर नृत्य करते थे। यह शिविर अत्यंत सफल रहा – “कई प्रतिभागी कृतज्ञता और परमानंद के आँसुओं से अभिभूत हो गए”





श्री विष्णु विद्या

परम पद की प्राप्ति - मोक्ष - अंतिम अवस्था

प्रारंभ में हम सभी आत्माएं, परमात्मा के साथ थीं। हम पृथ्वी पर अनुभव लेने के लिए आए थे। परंतु यहाँ आकर हम पूरी तरह से भूल गए कि हम वास्तव में कहाँ से आए हैं, और कर्म तथा पुनर्जन्म के चक्र में फँस गए। पृथ्वी आत्मा की उन्नति के लिए सबसे उत्तम स्थान है, लेकिन यहाँ द्वैत (duality) भी है। यदि हम स्वयं को सँभाल नहीं पाए, तो हम जन्म-मृत्यु-पुनर्जन्म के इस चक्र से बाहर नहीं निकल पाएँगे। जीवन की कठिनाइयाँ लोगों को आध्यात्मिकता की ओर प्रेरित करती हैं।

आम तौर पर मनुष्य खुशी, आराम और आनंद प्राप्त करने का प्रयास करता है, लेकिन हम फिसल जाते हैं। हम पृथ्वी पर आनंद लेने आए थे, लेकिन हम अपने मूल स्वरूप को भूल गए।

कई संतों ने हमें हमारे वास्तविक स्वरूप की याद दिलाने की कोशिश की, परंतु हम उसे गंभीरता से नहीं लेते।





एक दिव्य आत्मा सनत कुमार बहुत वर्षों पहले शुक्र ग्रह (Venus) से आए थे, ताकि प्रारंभिक मानवता की आध्यात्मिक उन्नति में सहायता कर सकें। सनत कुमार को विभिन्न परंपराओं में पूजनीय माना जाता है - उनका मिशन था मानवता को आत्मज्ञान के पथ पर लाना। उनकी कहानी करुणा और निःस्वार्थ सेवा की अद्भुत मिसाल है - उन्होंने धरती पर उस समय अवतरण लिया जब यहाँ आध्यात्मिक संकट था और आत्माएँ मार्ग भटक गई थीं।

सनत कुमार एक अत्यंत विकसित आत्मा माने जाते हैं और वे शम्भाला (Shambala) के साथ जुड़े हुए हैं, जो एक रहस्यमयी और पवित्र भूमि मानी जाती है। शम्भाला को दिव्य ऊर्जा और मार्गदर्शन का केन्द्र माना जाता है, जो भौतिक और आध्यात्मिक जगत को जोड़ता है।

सनत कुमार को शम्भाला के स्वामी के रूप में जाना जाता है और वे अन्य दिव्य प्राणियों के साथ मिलकर मानवता की उन्नति के लिए कार्य करते हैं।

प्राचीन मान्यताओं के अनुसार, जब पृथ्वी पर उच्च चेतना समाप्त हो रही थी और आत्मा का पतन हो रहा था, तो





ब्रह्मांडीय परिषद (Cosmic Council) ने पृथ्वी को नष्ट करने का निर्णय लिया।

लेकिन सनत कुमार ने गहरी करुणा और प्रेम से आग्रह किया कि उन्हें पृथ्वी को बचाने का अवसर दिया जाए। उनका आग्रह स्वीकार किया गया, और वे 1,44,000 जानियों के साथ धरती पर आए ताकि मानवता के भीतर की दिव्यता को पुनः जागृत किया जा सके।

उनकी शिक्षाएँ आत्म-परिवर्तन, आत्म-साक्षात्कार, और प्रेम, करुणा, विनम्रता जैसे गुणों के विकास पर आधारित हैं। वे हमें याद दिलाते हैं कि आत्मज्ञान की यात्रा भीतर से शुरू होती है - ध्यान, निःस्वार्थ सेवा, और ईश्वर में अटूट विश्वास के माध्यम से।

उनकी कहानी हमें यह याद दिलाती है कि ईश्वरीय हस्तक्षेप की शक्ति असीम होती है और मानव आत्मा की क्षमता किसी भी चुनौती को पार करने की है।

सनत कुमार की विरासत आज भी साधकों को प्रेरित करती है कि वे परमात्मा से एकत्व और मुक्ति की दिशा में कार्य करें।





यह समय ध्यान करके उच्च आयामों तक पहुँचने का अनुकूल समय है ।

आजकल बहुत से लोग उस ओर बढ़ रहे हैं। हम सभी सौभाग्यशाली हैं कि हमने इस समय में जन्म लिया है, क्योंकि यह समय पहले की तुलना में उच्च आयामों तक पहुँचने के लिए अधिक उपयुक्त है। इसलिए हमें इसका पूरा लाभ उठाना चाहिए।

कल्पवृक्ष हमें वह देता है जो हम चाहते हैं। उसी प्रकार, जब हम उच्च आयामों (Dimensions) को प्राप्त करते हैं, तो हमें भी वही प्राप्त होता है जो हम वास्तव में चाहते हैं। हमारा प्रयास यह होना चाहिए कि हम केवल पाँचवें आयाम तक ही सीमित न रहें, बल्कि उससे भी आगे बढ़कर उस परम अवस्था को प्राप्त करें जिसे परम पद कहते हैं।





परम पद में विश्राम - आत्मा का अंतिम विश्रान्ति स्थान

हमें सतत प्रयास करना चाहिए कि हम उस परम अवस्था को प्राप्त करें और उसमें स्थायी रूप से स्थित हो जाएं।

ईश्वर के गुण:

1. सर्वशक्तिमान (Omnipotent): इसका अर्थ है कि भगवान सर्वशक्तिमान हैं। उनके पास असीम शक्ति है और वे जो कुछ भी संभव है, उसे कर सकते हैं।
2. सर्वज्ञ (Omniscient): इसका अर्थ है कि भगवान सब कुछ जानते हैं—भूत, वर्तमान और भविष्य सभी की उन्हें पूर्ण जानकारी है।
3. सर्वव्यापी (Omnipresent): इसका अर्थ है कि भगवान हर स्थान पर एक साथ विद्यमान हैं। ऐसा कोई स्थान नहीं है जहाँ ईश्वर उपस्थित न हों।
4. सर्वकल्याणकारी (Omnibenevolent): इसका अर्थ है कि भगवान पूर्णतः शुभ हैं, वे समस्त शुभता के स्रोत हैं।

"परम पद में विश्राम" यह वाक्य आत्मा की उस अंतिम यात्रा को दर्शाता है जहाँ वह परम आनंद और शाश्वत शांति को प्राप्त करती है। यह उस अनंत, पारलौकिक अवस्था में विश्राम का प्रतीक है जहाँ सांसारिक माया





विलीन हो जाती है और आत्मा अपने मूल स्वरूप—ईश्वर की उपस्थिति—से पुनः एकाकार हो जाती है।

आध्यात्मिक दृष्टि से "परम पद" कोई भौतिक स्थान नहीं है, बल्कि यह एक पावन अवस्था है। यह शाश्वत चेतना के साथ एकत्व का बोध है, जहाँ अहंकार, इच्छाएँ और बंधन समाप्त हो जाते हैं। आत्मा, भौतिक अस्तित्व के बंधनों से मुक्त होकर, दिव्य प्रकाश में विलीन हो जाती है और ब्रह्म के साथ एकाकार हो जाती है।

इस परम पद की ओर यात्रा को ध्यान, निःस्वार्थ सेवा और ईश्वर के प्रति अटूट श्रद्धा जैसे साधनों द्वारा प्रकाशित किया जाता है। जब हम अपने चित्त को शांत करते हैं और अंतर्मन की स्थिरता खोजते हैं, तो इस दिव्य विश्राम की झलक प्राप्त होती है। यह समर्पण की प्रक्रिया है—कमज़ोरी नहीं, बल्कि अंतिम शक्ति और ईश्वर पर पूर्ण विश्वास का प्रतीक।

"परम पद में विश्राम" हमें वैराग्य और प्रेम को अपनाने के लिए प्रेरित करता है। यह सिखाता है कि शाश्वत आनंद किसी भौतिक वस्तु या उपलब्धि में नहीं, बल्कि विनम्रता, अंतरिक शुद्धता और ईश्वर से जुड़ाव में छिपा है। यह





हमें सांसारिक संघर्षों से ऊपर उठकर ब्रह्मांड के पवित्र लय के साथ समरस होकर जीने की प्रेरणा देता है।

संक्षेप में, "परम पद में विश्राम" आत्मा की घर वापसी है—
प्रेम, प्रकाश और अनंत शांति का शाश्वत आलिंगन।

शिविर के अंत में, जब हमने श्री विष्णु विद्या को सीखा, तब हमने उस परम अवस्था का अनुभव किया जिसे "परम पद" कहते हैं।

पहले, हमने सीखा कि विष्णु लोक कैसे पहुँचा जाए, फिर भगवान विष्णु के समीप कैसे जाया जाए, और फिर उनके समान कैसे हुआ जाए। अंततः, अपनी पहचान को खोकर परम सत्ता में विलीन कैसे हुआ जाए ।





"श्री विष्णु विद्या" शिविर की जन्म कथा - सर के शब्दों में

सभी को ज्ञात है कि 2019 के अंत में कोविड-19 नामक वायरस ने पूरी दुनिया को अपनी चपेट में ले लिया था। मार्च 2020 में भारत में भी लॉकडाउन लग गया। सब कुछ बंद हो गया – दुकानें, सिनेमाघर, ऑफिस, यहाँ तक कि लोगों का बाहर निकलना भी मना था।

उसी समय, मैंने 16 अप्रैल 2020 तक मौन में डूबकर साधना की। इस अवधि में मुझे अनेक आध्यात्मिक अनुभव हुए। मैंने कई उच्च चेतना वाले गैलेक्टिक बीइंग्स जैसे Arcturians, Pleiadians और Sirians का अनुभव किया और उनके आशीर्वाद प्राप्त किए।

इस साधना के दौरान जब भी मैं Prime Source से, परमात्मा से कनेक्ट होता था तो हर समय मुझे भगवान विष्णु के दर्शन होते थे। उस समय मैं डायरी लिखता था। तो मेरे डायरी में कई बार लिखा हुआ है कि **"आज भी मुझे विष्णु भगवान के दर्शन हुए!"**





दिनांक 1 अप्रैल 2020 को मैं ने डायरी में लिखा था, "प्राइम सोर्स से कनेक्ट करने लगा तो उनके अंत का पता ही नहीं लग रहा था! जब लगता था कि अभी उनके essence से कनेक्ट हो गए हैं, फिर अनुभव होता था कि और ऊपर जाना है. फिर बहुत ऊपर, अभी तक जितना जा रहा था उससे भी ऊपर चलते गया. फिर ऊपर जाते जाते ऊर्जा की कुछ लेयर्स दिखने लगी और फिर एक क्रिस्टल जैसा, Third eye जैसा ब्राइट लाइट दिखा. जब वहां पहुंच गया तब सब तरफ लाइट फैल गया.

तृतीय नेत्र में बहुत बड़ी अग्नि का अनुभव हुआ. पता चला कि वहां शिवलोक जैसा है. भगवान शिव के दर्शन हुए.

उसे भी ऊपर चलते गया. प्राइम सोर्स तक पहुंचाने के लिए. तब सब तरफ फैला हुआ ब्राइट व्हाइट लाइट दिखा और ऐसे लगा के अभी इसके ऊपर नहीं जाना है. यही मंजिल है. और तब ऐसे लगा कि मैं विष्णु लोक में पहुंच गया हूं. मेरे सहस्रार में विष्णु स्थापित हुए. बाद में पूरे शरीर में फैल गए और ऐसा लगा कि सामान्यतः मानव शरीर में रहते हैं तो जो अधिकतर आध्यात्मिक प्रगति





होती है वह यहां तक ही होती है. और उसके आगे और प्राइम सोर्स में जाना है.

Third eye मे बहुत देर तक रहा. विचार नहीं आ रहे थे. मेरा *being*, सफेद रोशनी से भर गया था. *Divine Matrix* का अनुभव हुआ.

सफेद रोशनी के गुब्बारो जैसा कुछ अनुभव हुआ, *the oneness* और ज्यादा *strong* बना. *Prime Source* से *connection* हो गया ”.

उस समय मैं *Pillars of Light* और *Merkaba* का भी ध्यान किया करता था. *Great Central Sun* में जाता था. 17. 4. 2020 को जब ग्रेट सेंट्रल सन गया तो वहां भगवान विष्णु के दर्शन हुए और बाद में बहुत फैलाव महसूस हुआ और फिर ऐसे लगा कि अभी जो विष्णु दिख रहे हैं वह महा विष्णु है. खड़े थे. उनके आशीष भी प्राप्त हुए.

18. 4.2020 को फिर से महा विष्णु के दर्शन हुए और उनसे कनेक्ट कैसे हो जाए उसका भी सूत्र मिला. उनसे कनेक्ट होने के बाद कोई भी हीलिंग करें या प्रश्न पूछे तो





हीलिंग भी हो जाएगी और प्रश्न का उत्तर भी मिल जाएगा, ऐसा प्रतीत हुआ. ऐसी साधना चलती रही.

15 जनवरी 2023 को मेरे डायरी में ऐसी एंट्री है:

“ दोपहर 12:30 बजे Blue Avians का ध्यान किया. ध्यान के बाद बाद भगवान विष्णु की उपस्थिति का अनुभव हुआ. उनके हाथ में चक्र था. वह चक्र मुझे देना चाहते थे, साधकों के हीलिंग के लिए. लेकिन सुदर्शन चक्र धारण करना यह बहुत ही बड़ी बात है, इसलिए मुझे हिचकीचाहट हो रही थी. मैंने उनसे पूछा, क्या मैं सचमुच यह चक्र प्रयोग में ला सकता हूँ? वह बोले, हां और उन्होंने उस चक्र के उपयोग करने की अनुमति मुझे दे दी.

उसी दिन दोपहर 4:00 बजे के सेशन में मैंने Blue Avians और भगवान विष्णु तथा भगवान कृष्ण का भी आवाहन किया Pillars of Light में. वह आए तब ऐसे लगा कि मैंने उस सुदर्शन चक्र का उपयोग करना चाहिए. भगवान विष्णु से मैंने वह चक्र मेरे दाहिने हाथ के तर्जनी (index finger) में धारण किया. वह चक्र दिव्य ऊर्जा है जो किसी भी नेगेटिविटी को नष्ट कर सकती है. उसमें 10





महाविद्याये भी है. मैंने वह चक्र याने घूमती ब्राइट व्हाइट ऊर्जा साधकों के earth star चक्र में घुमाई. ऐसे ही सभी सात चक्रों में भी घुमाई. विशेषतः विशुद्धि चक्र में. क्योंकि वहां रुद्र ग्रंथि होती है, उसका भेदन करने के लिए. फिर ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर ऐसा तीन बार घुमाया.

ध्यान के बाद साधकों का अनुभव बहुत ही अच्छा था. लीना को वह चक्र 3D गोल्डन कलर में दिख रहा था. मेरुदंड में ऊपर नीचे घूमते समय उनको बहुत आनंद आया. कई साधकों के मेरु दंड में वाइब्रेशंस का अनुभव हुआ. कई लोगों को अनुभव हुआ कि कुछ नीचे से ऊपर जा रहा है और गर्दन ऊपर की तरफ झुक रही है.

उस सुदर्शन चक्र के उपयोग का initiation और उसे उपयोग में लाने की परमिशन भगवान विष्णु ने मुझे दे दी. सुदर्शन चक्र के उपयोग के बाद मैंने वह भगवान विष्णु को वापस कर दिया. उसे कभी भी किसी भी कार्य के लिए उपयोग में लाने की मुझे परमिशन है."





21.1.2023 को मैं और लीना कर्नाटक के उडुपी शहर गए थे. वहां का श्रीकृष्ण मंदिर बहुत प्रसिद्ध है. हमने वहां के मूर्ति के दर्शन किए और मंदिर के सभागार में आकर ध्यान में बैठ गए. उस समय वहां भगवान श्रीकृष्ण की चेतना का अनुभव हुआ. वे बहुत अनुशासित, नो-नॉनसेंस गुरु की तरह प्रकट हुए। उन्होंने मुझे सुदर्शन चक्र स्थायी रूप से सौंपा और कहा: "अब यह हमेशा तुम्हारे पास रहेगा, इसे लौटाने की आवश्यकता नहीं है। और इसकी दीक्षा भी देना है।" उस पल में, मैं श्रद्धा और उत्तरदायित्व दोनों में डूब गया था। जो कभी एक पवित्र अस्त्र था, अब वह मेरे उद्देश्य को निखारने के लिए एक दिव्य शक्ति बन गया था. जो न केवल व्यक्तिगत उत्थान के लिए, बल्कि दूसरों की सेवा के लिए भी उपलब्ध है.

इस प्रकार, उडुपी की हमारी यात्रा हमारे आध्यात्मिक पथ का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अध्याय बन गई। जो आशीर्वाद हमें मिले, जो दिव्य साक्षात्कार हुए, और जो मौन अंतर्दृष्टियाँ प्रकट हुईं-ये सभी मानो ब्रह्मांड ने बड़ी कोमलता से पहले से ही हमारे लिए साज-सज्जा कर रखी हो।





इस दौरान उडुपी की माया पै जी (Sacred Circle साधक) से भी भेट हुई.

इस प्रवास के दौरान कारकला की कल्या रिता के घर गए. वह हमे वहां के Gomteshwar बाहुबली की मूर्ति दिखाने ले गई . उसके बाद हम शंकराचार्य जी के Sringeri मठ में भी गए.

सुदर्शन चक्र का अनुभव बहुत ही दिव्य, भव्य और शक्तिशाली था. साधकों को यह सिखाना भी था. लेकिन इसे ऑनलाइन 2 घंटे के सेशन में सिखाना ठीक नहीं लग रहा था. उतनी बड़ी शक्ति ग्रहण करना है तो साधकों का वैसा ही ग्रहणशील मन और समर्पण भाव होना चाहिए. इसलिए मैं सोच रहा था कि जब कभी आवासीय शिबिर होगा, तब साधकों को यह विद्या सिखायेंगे.

दिसम्बर 2024 में जम्मू के विद्युत जी ने जम्मू में एक आवासिय शिबीर का आयोजन करने की ईच्छा प्रदर्शित की. लेकिन किसी कारण से वह शिबिर नहीं हो पाया. यह शिविर किस जगह आयोजित किया जाए इस की चर्चा एक रविवार के सत्र में हुई. तब कई साधकों ने कहा कि यह शिविर नागपुर में ही होना चाहिए क्योंकि नागपुर





क्षितिज की भूमि है. विशेषता राजेश मल्या जी ने जोर देकर कहा कि यह शिविर नागपुर में ही होना चाहिए और 4 अप्रैल को ही शुरू होना चाहिए. क्योंकि 4 अप्रैल क्षितिज का जन्मदिन है. इस प्रकार 4 से 6 अप्रैल 2025 को यह शिविर नागपुर में करने का निर्णय हुआ.

शिविर में क्या सिखाया जाएगा, यह पहले तय नहीं था, लेकिन लगभग 100 साधकों के पंजीकरण के बाद स्पष्ट हुआ कि उन्हें उच्च स्तरीय साधना सिखानी चाहिए। तभी अंतर्मन से एक प्रेरणा आई कि इस शिविर में सुदर्शन चक्र की दीक्षा दी जाए। साथ ही, भारतीय दर्शन में वर्णित **चार प्रकार की मुक्ति** – सालोक्य, सानिध्य, स्वरूप्य और सायुज्य – पर विस्तार से चर्चा कराते हुए, परम पद का अनुभव भी करवाया जाए।

इसी कारण इस विशेष शिविर को नाम दिया गया – **“श्री विष्णु विद्या शिविर”**।

यह है श्री विष्णु विद्या शिविर की जन्म कथा!





क्षितिज: एक दिव्य आत्मा का स्मरण



क्षितिज, जो अब केवल स्मृति में नहीं, बल्कि चेतना के ऊर्ध्व आयाम में आनंद में है। उसकी जन्मतिथि 4 अप्रैल 1995 है, और शरीर का त्याग 29 मई 2016 को हुआ। लेकिन यह केवल एक सांसारिक यात्रा का अंत

नहीं था, बल्कि एक दिव्य उपस्थिति की शुरुआत थी, जो आज भी अनगिनत आत्माओं का मार्गदर्शन कर रही है।

लीना दीदी कहती हैं: जब क्षितिज गर्भ में था, तब उसकी वृद्धि (growth) बहुत अच्छी थी। लेकिन जन्म के समय उसे बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। ऐसी स्थिति आ गई थी कि डॉक्टर सीजेरियन भी नहीं कर सकते थे। अंततः मजबूरन forceps का प्रयोग करना पड़ा, जिससे उसकी सांस रुक गई और उसके मस्तिष्क को चोट पहुंची। वह अत्याधिक सक्रिय (hyper active) हो गया। जन्म से





तेईस महीने तक वह ठीक था, बस थोड़ा अधिक सक्रिय था। उसे झटके (convulsions) आते थे। उसे ठीक करने के लिए हमने बहुत प्रयास किए।

भारत के नामांकित सभी प्रकार के डॉक्टर-ऑलोपैथिक, होम्योपैथिक और आयुर्वेदिक-को दिखाया। लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ।

एक बार एक आयुर्वेदिक डॉक्टर ने उसे हीरक भस्म का भारी डोज दिया, जिससे उसे लगातार 40 घंटे तक झटके आते रहे। फिर भी वह जीवित रहा। डॉक्टरों के लिए यह एक आश्चर्यजनक मामला था, क्योंकि इतने झटकों के बाद कोई भी जीवित नहीं बच सकता। इसी कारण डॉक्टरों ने क्षितिज का केस कई सम्मेलनों और संगोष्ठियों में प्रस्तुत किया।

लेकिन इसके बाद क्षितिज बेड रेस्टर्ड हो गया। वह खुद चल नहीं सकता था, बोल नहीं सकता था। हमें समय पर भोजन देना पड़ता था, और हमेशा किसी न किसी का उसके पास रहना जरूरी था।

जब पारंपरिक चिकित्सा विफल हो गई, तो हमने वैकल्पिक उपचार विधियों की ओर रुख किया - रेकी,





प्राणिक हीलिंग, सिल्वा मेथड, और कुंडलिनी जागरण। फिर भी कोई असर नहीं हुआ। पर इन सबके बीच, हम आध्यात्मिकता की ओर मुड़ गए। हमने क्षितिज के बारे में चिंतित होना छोड़ दिया। शायद इसका भी कोई उद्देश्य था – कि हम आध्यात्मिक मार्ग से जुड़ें। यद्यपि शारीरिक प्रगति थम गई, एक गहरी आध्यात्मिक यात्रा शुरू हो गई।



इसी बीच, **पाटी वाली आई** से मुलाकात हुई। कभी हम उनके घर जाते थे, तो कभी वह खुद क्षितिज से मिलने आती थी।

पाटी वाली आई की गुरु पारडसिंगा वाली माता अनुसूया थीं, जो बहुत

प्रसिद्ध संत थीं। पाटी वाली आई उनकी प्रमुख शिष्या हैं। वह त्रिकाल जानी हैं। उन्होंने बताया कि **क्षितिज एक दिव्य आत्मा है। "उसकी चिंता मत करो। आप भी अध्यात्म में जुड़ जाओ।"**





पाटी वाली कई बार नागपुर आती थीं। हमारे घर अक्सर शाम को आती थीं। रात का खाना खाने के बाद उनका सत्संग होता था, जिसमें आध्यात्मिक बातें होती थीं। यह सत्संग कई बार रात के 2 बजे तक चलता था।



कई बार उनकी गुरु अनुसूया माता की चेतना उनके शरीर में प्रकट होती थी। तब पाटी वाली आई की भाषा और बोलचाल का ढंग भी बदल जाता था। वह बिल्कुल अनुसूया माता जैसी ही प्रतीत होने लगती थी।

एक रात ऐसी ही अनुसूया माता की चेतना का आगमन हुआ। उन्होंने गहरी आध्यात्मिक बातें बताईं। फिर कहा, **"कपुर जला।"** यह उनके जाने का संकेत होता था। हर बार कपुर जलाने के बाद उनकी चेतना पाटीवाली आई के शरीर से चली जाती थी। लेकिन इस बार, कपुर जलाने के बाद उन्होंने कपुर के ऊपर हाथ घुमाया, उसे लिया और उठकर क्षितिज के कमरे में चली गयी। हम दोनों (दिवाकर





जी और मैं) भी उनके पीछे गए। कमरे में क्षितिज बिस्तर पर सो रहा था। बिस्तर पर मच्छरदानी लगी थी।

उस समय, पाटीवाली आई में अनुसूया माता की चेतना थी। वह थोड़ी देर रुकी, फिर मच्छरदानी उठाने लगी। हम दोनों ने मिलकर उनको मच्छरदानी उठाने में मदद की। क्षितिज बिस्तर पर दीवार की तरफ मुंह किए सो रहा था। अनुसूया माता ने कुछ पल उसे देखा।

जैसे ही क्षितिज ने उनकी उपस्थिति का अनुभव किया, उसने मुंह घुमाकर उनकी ओर देखा और आंखें खोल दी। दोनों एक-दूसरे की आंखों में कुछ देर तक देखते रहे। उसके बाद माता ने अपने हाथों में फूल लिए और क्षितिज के पास रख दिए, फिर हाथ जोड़कर उठने लगी। क्षितिज ने फिर मुंह दीवार की तरफ कर लिया और आंखें बंद कर लीं। इसके बाद अनुसूया माता पाटीवाली आई के शरीर से चली गई। हमें आज तक नहीं पता कि उनके बीच क्या मौन संवाद हुआ। लेकिन जिस प्रकार क्षितिज ने उनकी आँखों में देखा, मुंह घुमाया, वैसा वह सामान्य स्थिति में कभी नहीं करता था।





लगता है, क्षितिज हमेशा दिव्य **जागृती मे रहता था**. रात को मैं उसे बेड पर सुलाती थी और वह सो जाने के बाद मैं घर के कई काम करती थी. उसके बाद जब मैं उसके पास जाती थी, तो वह हमेशा अपना दाहिना पैर हिलाता था. शायद कह रहा हो कि मुझे पता है कि तुम मेरे पास आयीं हो. वह कितनी भी गहरी नींद मे हो, तो भी वह यह करता ही था. इतना ही नहीं सुबह मैं जब उसके पास से उठ जाती थी, तब भी वह वैसा ही पैर हिलाता था, जैसे कह रहा हो कि मुझे पता है कि तुम अभी जा रहीं हो. बाकी समय वह कभी भी इस तरह से पैर नहीं हिलाता था!



योगी जीवन का प्रमाण: इसी बीच हमारी आध्यात्मिक यात्रा जारी रही। हमने शिवयोग, ओशोधारा, इंडियन पराशक्ति चिकित्सा, समर्पण, विपश्यना, सिद्ध सन्मार्ग आदि शिविर किए। अम्मा का आशीर्वाद भी लिया। इसके साथ ही, हम

ओम तपोवन के **गुरु नारायण स्वामी** के संपर्क में आए।





उनके कुछ शिविरों का आयोजन नागपुर और बल्लारशाह में किया।

उनके पास प्राण शक्ति का गहरा ज्ञान है। उनकी हीलिंग बहुत प्रभावशाली है। अध्यात्म में भी वह बहुत अच्छा मार्गदर्शन करते हैं और लोगों को जागरूक करते हैं। हजारों लोगों का उद्धार उन्होंने किया है।

एक बार, गुरु नारायण स्वामी हमारे घर नागपुर आए। उन्होंने क्षितिज को देखा और उसके प्राण प्रवाह को महसूस किया। उसकी सुषुम्ना नाड़ी चल रही थी। कुछ और देखा और कहा, **“यह योगी जीव है। इसकी हीलिंग नहीं होगी। यह अपने अस्तित्व से लोगों को जागरूक करने आया है।”** उस दिन पाटीवाली आई भी हमारे घर पर थी। उन्हें देखकर उन्होंने कहा, **“यह तो साक्षात् शक्ति है..!”**

उसी समय, इंटरनेट का उपयोग दुनिया में तेजी से बढ़ रहा था। दिवाकर जी बहुत आध्यात्मिक किताबें पढ़ते थे। वे खोजते रहते थे कि क्या दुनिया में कई ऐसी शक्ति है, जो क्षितिज को ठीक कर सकती है।





एक बार उन्हें एक वेबसाइट मिली, “मास्टर्स ऑफ़ द स्पिरिट वर्ल्ड” वहां कोई भी कुछ भी प्रश्न पूछ सकता था। स्पिरिट वर्ल्ड के मास्टर्स प्रश्नों का उत्तर देते थे। उन्होंने भी क्षितिज के बारे में प्रश्न पूछा कि क्षितिज कि तबियत ऐसी क्यों है? उस वेबसाइट पर, हमें कोई नहीं जानता था।

स्पिरिट वर्ल्ड के मास्टर ने उत्तर दिया: **क्षितिज एक महान आत्मा है। उसने जानबूझकर कठिन जीवन का पाठ चुना है, जिसके लिए आप दोनों ने सहमति दी। आप भाग्यशाली हैं कि ऐसी सुंदर आत्मा आपके जीवन में है। आप उसके लिये उतना नहीं कर रहे हैं, जितना वह आपकी आध्यात्मिक उन्नति के लिये कर रहा है।** यह जीवन एक-दूसरे के साथ प्रेम से बिताइए।

कई महीनों बाद, मैंने भी उनसे ऐसा ही प्रश्न पूछा, **क्षितिज का नाम नहीं लिखा था। फिर भी वही उत्तर मिला।”**





पूर्वजन्म की कथा: लीना दीदी की एक पूर्वजन्म की स्मृति ने क्षितिज के जन्म के रहस्य को अधिक स्पष्ट कर दिया। वह बताती हैं:

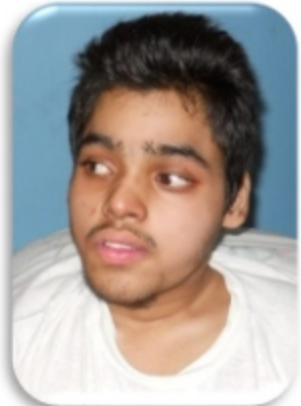
“मेरा पूर्व जन्म तिब्बत में हुआ था। मैं एक आश्रम में रहती थी, साधना करती थी और आश्रम के अन्य कार्य भी करती थी। एक दिन, जब मैं आश्रम में झाड़ू लगा रही थी, तभी एक दिव्य संन्यासी आया। वह युवा था, और उसके चेहरे पर तेज था। वह आश्रम के प्रमुख से मिला और कुछ देर बाद जाने के लिए निकला। मैंने उन्हें प्रणाम किया और कहा, ‘**आप कुछ दिन यहां ठहर जाइए। मुझे लगता है कि मैं आपकी सेवा करूँ।**’ उन्होंने कहा, ‘**अभी मुझे कुछ जरूरी काम है। जाना होगा।**’ फिर, थोड़ी देर रुककर, वह बोला, ‘**मैं अगली जन्म में आपको सेवा का मौका दूंगा।**’ वह संन्यासी कोई और नहीं, इस जन्म का क्षितिज था। और इस जन्म में, उसने मेरे पुत्र के रूप में जन्म लेकर अपना वचन पूरा किया।

मुझे आज भी उसकी मदद मिलती है। जब कुछ समझ नहीं आता, तो मैं उसे याद कर पूछती हूँ, और तुरंत उत्तर मिल जाता है।





यह बात क्षितिज के शरीर छोड़ने के बाद की है। एक बार हम ध्यान करने के लिए एक आश्रम जा रहे थे। रास्ते में टैक्सी पेट्रोल पंप पर रुकी, और ड्राइवर ने मुझसे पैसे मांगे। मैं भुगतान के लिए अपना क्रेडिट कार्ड ढूंढने लगी, लेकिन वह मुझे नहीं मिल रहा था। मैंने आँखें बंद कीं और क्षितिज से मन ही मन कहा, "बेटा, मैंने क्रेडिट कार्ड कहाँ रखा है?" तुरंत मुझे एक vision आया जिसमें मुझे मेरे सूटकेस का एक कोना दिखाई दिया। मैंने दिवाकर जी से कहा, "चलो, कार्ड कहाँ है, यह पता चल गया।" हमने ड्राइवर को नकद भुगतान किया और वहाँ से निकल गए। जब मैं आश्रम पहुँची और अपना सूटकेस खोलकर उस जगह को देखा, जो मुझे vision में दिखाई दिया था, तो मैंने पाया कि मेरा क्रेडिट कार्ड वाकई वहीं रखा हुआ था !



कभी-कभी वह मुझसे आज की पीढ़ी के किशोर की तरह बात करता है। ये किशोर अपनी माताओं के प्रति श्रद्धा नहीं रखते! वे उन्हें दोस्त की तरह मानते हैं और उनसे





ऐसे लहजे में बात करते हैं, जैसे अपने दोस्त से कर रहे हों।

मैं एक अत्यंत भावुक अनुभव साझा करना चाहती हूँ, जो इस बात को स्पष्ट करेगा:

4 अप्रैल 2022 को, मैं कर्नाटक के होसपेट में तुंगभद्रा परियोजना पर थी। दिवाकर जी तुंगभद्रा बोर्ड के अध्यक्ष थे, और उन्हें अक्सर हैदराबाद से दौरे पर वहां जाना पड़ता था। मैं भी उनके साथ जाती थी।

हम एक शांत और मनमोहक अतिथि गृह 'वैकुंठ' में ठहरते थे, जो तुंगभद्रा बांध के पास एक छोटी पहाड़ी पर स्थित है। वह अतिथिगृह एक शांत और गरिमापूर्ण स्थान है। प्रत्येक सुबह मैं उसकी विशाल बालकनी में बैठकर ध्यान में चली जाती। उस बालकनी से बाँध का सुन्दर नजारा, हरे भरे पेड़ और मंद सुहानी हवा का अनुभव होता था।

उस विशेष सुबह, जैसे ही मैंने अपनी आँखें बंद कीं, मैं लगभग तुरंत ही एक गहरे ध्यानावस्था में पहुंच गई। सामान्यतः मैं ध्यान की शुरुआत 'पिलर्स ऑफ लाइट' (Pillars of Light) तकनीक से करती हूँ। लेकिन उस दिन, मैं इतनी सहजता से शांति में डूब गई कि मुझे





एहसास ही नहीं हुआ कि मैंने यह आरंभिक चरण छोड़ दिया था ।

कुछ क्षण बाद, एक विचार धीरे से उभरा: **"अरे, मैंने तो अभी तक 'पिलर्स ऑफ लाइट' बनाए ही नहीं!"** इस अहसास के साथ, मैंने जल्दी से उस विधि को शुरू करने की कोशिश की। उसी पल क्षितिज आ गया। मैंने उसकी उपस्थिति को महसूस किया- कोमल, सूक्ष्म, फिर भी स्पष्ट रूप से निकट। और एक किशोर बालक की तरह उसने कहा: **"इसे ही तो 'कर्मकांड' कहते हैं...! जब तुम पहले से ही एकत्व में हो, तो ध्यान में प्रवेश के 'प्रारंभिक तकनीक' को करने की क्या आवश्यकता है? बस ध्यान का आनंद लो। कई लोग अनावश्यक रूप से कर्मकांड में उलझे रहते हैं...!"**

उसके मज़ाक में कहे यह शब्द मुझे ऐसे लगे जैसे कोई विद्युत की तरह गहन ज्ञान का झटका मिला हो।





उस क्षण तक, मैंने कर्मकांड को एक पूरी तरह अलग चीज़ समझा था। लेकिन उस दिन, मुझे एहसास हुआ - ध्यान की कोई तकनीक भी यांत्रिक बन सकती है, अगर उसमें होश न हो।

इस घटना के कई दिन बाद, मैं हैदराबाद में हमारे ध्यान कक्षा में ध्यान के लिए बैठी। समय कम था, तो मैंने जल्दी से 'पिलर्स ऑफ लाइट' बनाए और ध्यान में प्रवेश की प्रक्रिया शुरू की। उस दिन, वह फिर आया। इस बार, एक कोमल लेकिन दृढ़ स्वर में उसने कहा: "ऐसे नहीं - विधि को सही तरीके से अपनाओ..!" मैं चकित हो गई। मैंने सीखा कि दिव्य मार्गों में भी शॉर्टकट को हल्के में नहीं लेना चाहिए।

मार्गदर्शक आत्मा: क्षितिज का जीवन छोटा था, लेकिन उद्देश्य बड़ा। वह ध्यान सिखाने आया था। वह अभी भी हमारे बीच है - अदृश्य है, पर सक्रिय। आज हमारे गुप के कई साधकों का स्पिरिट गाइड है। जब वे उससे कुछ पूछते हैं, तो उन्हें तुरंत उत्तर मिल जाता है। अच्छे से साधना





करने के लिए उसकी मदद मांगो, तो भी उसकी सहायता मिलती है।

मई 2025 में, मेरी एक मित्र का जवान बेटा गुस्से में कहीं चला गया। उसने किसी को कोई जानकारी नहीं दी थी - कहां जा रहा है, और उसका मोबाइल भी स्विच ऑफ था। मेरी दोस्त बहुत परेशान हो गई। तब उसे क्षितिज की याद आई। उसने कहा, **"बेटा, मैं तुम्हारी मौसी हूं! मेरा बेटा जहां भी हो, उसे सकुशल घर भेज दो!"** और चमत्कारिक रूप से, वह बेटा थोड़े ही समय वापस घर लौट आया।

दिवाकर जी ने एक ध्यान में साधकों को मिस्र की astral यात्रा कराई थी। साधक astrally वहाँ के स्फिंक्स के पास गए। वहीं, एक साधिका को एक युवा भारतीय योगी का दर्शन हुआ। वह उनका स्पिरिट गाइड है। उसने उसका नाम पूछा, तो उस योगी ने कहा, **'शिजु'।** कुछ दिनों बाद, एक अन्य ध्यान सत्र में उसने क्षितिज का चित्र देखा। उस साधिका ने कहा कि, **"मिस्र के स्फिंक्स के पास जिस भारतीय योगी ने दर्शन दिए, वह क्षितिज ही था।"**

ऐसे कई किस्से हैं...





लीना दीदी कहती हैं कि “**क्षितिज हमारा प्रथम गुरु है। उसने हमें ध्यान में अग्रसर होने के लिए मौन से ही बहुत परिस्थितियां पैदा कीं। उसने हमें धैर्य सिखाया। उसकी शारीरिक स्थिति ऐसी थी कि हमने ध्यान की ओर रुख किया। उसके शरीर छोड़ने के कुछ महीने पहले वह मुझे ध्यान का बहुत गहरा अनुभव कराता था । अब भी, जब मुझे किसी स्थिति में स्पष्टता चाहिए होती है, तो मैं उससे पूछती हूं, और तुरंत उत्तर मिल जाता है। ये उत्तर बहुत गहरे और प्रगल्भ होते हैं।**”

क्षितिज केवल एक प्रिय स्मृति नहीं हैं - वह एक जीवंत, मार्गदर्शक चेतना हैं। वह हमारे प्रथम गुरु हैं - जिन्होंने हमें ध्यान सिखाया, हमारे भीतर श्रद्धा जगाई, और आज भी ब्रह्मांडीय विस्तार में सूक्ष्म रूप से हमारे भीतर विद्यमान हैं। उनका अस्तित्व हमें याद दिलाता है कि मृत्यु अंत नहीं, बल्कि एक रूपांतरण है। दिव्यता केवल शरीर में नहीं बसती - वह असीम प्रेममयी चेतना है।





वह चले नहीं गए।

.....वह हमारे ध्यान की साँस हैं,

.....हमारे प्रश्नों के स्पष्ट उत्तर हैं,

.....हमारी प्रार्थनाओं के पीछे की शांति हैं।

....वह ब्रह्मांडीय विस्तार में एक मार्गदर्शक ज्योति हैं – सदा विद्यमान, सदा देने वाले।

'क्षितिज' उस दिव्य चेतना का नाम है – जो हमें अब भी स्पर्श करती है, सिखाती है, और प्रेम का संदेश देती है।





ब्लू एवियन्स (BLUE AVIANS) – गैलेक्टिक बीइंग्स से आशीर्वाद



ऊपरी शरीर पक्षी जैसा और निचला शरीर मानव जैसा होता है।

आध्यात्मिक दृष्टिकोण से, "ब्लू एवियन्स" (Blue Avians) को एक प्रकार के आकाशीय या divine being के रूप में जाना जाता है, जो उच्च आयामी चेतना और शांति से जुड़े हुए हैं। ऐसा माना जाता है कि ये अत्यंत विकसित, शांतिप्रिय और आत्मा से गहराई से जुड़े हुए





होते हैं। इन्हें अक्सर पक्षी रूपी या पक्षी जैसे दिव्य प्राणियों के रूप में चित्रित किया जाता है।

ब्लू एवियन्स के बारे में विस्तृत जानकारी इस प्रकार है:

✿ **उच्च आयामी बीड़ंग:** ब्लू एवियन्स को अक्सर उच्च आयामों और ऊर्जा के स्तरों से संबंधित माना जाता है।

✿ **शांतिप्रिय और सहानुभूतिशील:** ये प्राणी अत्यंत शांत और सहानुभूतिपूर्ण होते हैं। यही कारण है कि वे भौतिक जगत की तीव्र भावनाओं को सहन करना कठिन समझते हैं।

✿ **संवेदनशील और अंतर्ज्ञानी:** उन्हें बहुत ही संवेदनशील और उच्च स्तर की अंतर्ज्ञान शक्ति से युक्त माना जाता है। उनकी टेलीपैथिक संवाद करने की क्षमता मानी जाती है।

✿ **ज्ञान और समझ:** इनका मुख्य उद्देश्य ब्रह्मांड को समझना और शांति व संतुलन फैलाना होता है।

✿ **तारकीय बीज (Star Seeds):** इन्हें "स्टार सीड्स" माना जाता है—अर्थात् इनका जन्म किसी अन्य ग्रह,





तारे या गैलेक्सी में हुआ और वे पृथ्वी पर मानवता की सहायता के लिए आए।

✦ **गैलेक्टिक संरक्षक:** कुछ मान्यताओं में उन्हें गैलेक्सी के रक्षक माना जाता है, जो मानव जाति के मार्गदर्शन और सुरक्षा के लिए कार्य करते हैं।

✦ **उन्नत तकनीक:** इन्हें प्रकाश तरंगों (Light waves) के ज़रिए दिव्य ज्ञान और अत्याधुनिक तकनीकों की समझ रखने वाले प्राणी के रूप में भी देखा जाता है।

सारांश: ब्लू एवियन्स एक आकर्षक और प्रतीकात्मक अवधारणा हैं, जो उच्च चेतना, शांति और ब्रह्मांडीय संपर्क की संभावना को दर्शाते हैं।

वे हमें निम्नलिखित रूपों में सहायता करते हैं:

- हीलिंग (चिकित्सा), व्यक्तिगत विकास, चक्रों का संतुलन, आध्यात्मिक सहायता
- टेलीपैथी, एकत्व का अनुभव (Oneness)
- मनुष्यों की युगों से सहायता करते आए हैं
- हमें 12वें आयाम (12th Dimension) तक पहुँचने में सहायता करते हैं
- विश्व शांति में सहयोग करते हैं





- अन्य गैलेक्सी के प्राणियों के साथ संवाद कर सहायता करते हैं

ब्लू एवियन ध्यान विधि (Meditation)

पिलर्स ऑफ़ लाइट मेडिटेशन करें और ईश्वर, ब्लू एवियन्स, और अन्य गैलेक्टिक प्राणियों का आह्वान करें। उनकी उपस्थिति और ऊर्जा को महसूस करें और ब्लू एवियन्स गैलेक्टिक बीइंग्स का आशीर्वाद प्राप्त करें।





परम सत्ता की समझ: गतिज (KINETIC) और स्थितिज (POTENTIAL) ऊर्जा

ऊर्जा अनेक रूपों में विद्यमान होती है, लेकिन इसके दो मूलभूत प्रकार होते हैं:

1. गतिज ऊर्जा (Kinetic Energy): यह गति की ऊर्जा होती है। कोई भी वस्तु जो गति में होती है, उसमें गतिज ऊर्जा होती है। उदाहरणस्वरूप: चलती हुई कार, बहती हुई नदी या घूमता हुआ चक्र - इन सभी में गतिज ऊर्जा होती है।
2. स्थितिज ऊर्जा (Potential Energy): यह वह ऊर्जा होती है जो किसी वस्तु में उसकी स्थिति या अवस्था के कारण संग्रहित होती है। उदाहरणस्वरूप: किसी पहाड़ी के ऊपर रखा पत्थर गुरुत्वाकर्षण की स्थितिज ऊर्जा रखता है। इसी प्रकार, संकुचित स्प्रिंग में लोच की स्थितिज ऊर्जा होती है।

अब, इस ऊर्जा की अवधारणा को आध्यात्मिकता से जोड़ते हुए:

- **ईश्वर और देवी-देवताओं को स्थितिज ऊर्जा के रूप में समझा जा सकता है।** परमात्मा वह असीम स्रोत हैं, जिनमें असीम संभावना और सृजन की शक्ति निहित है। वे सर्वव्यापक, अनंत और सृष्टि की समस्त शक्ति





के मूल स्रोत हैं। उन्हें उस पहाड़ी के ऊपर रखे पत्थर की भांति समझा जा सकता है—जिसमें शक्ति तो है, लेकिन वह स्थिर अवस्था में है।

- **जब** यही दिव्य ऊर्जा सृष्टि में प्रकट होती है, तो वह **गतिज ऊर्जा बन जाती है। यह सक्रिय शक्ति बन जाती है, जो सृष्टि का संचालन करती है, जीवन को संचारित करती है और प्रकृति के नियमों को नियंत्रित करती है। देवी-देवताओं की क्रियात्मकता इसी गतिज शक्ति का प्रतीक है, जो ब्रह्मांडीय चेतना की सक्रिय अभिव्यक्ति है।**





“विज्ञान” – अर्थात् विशेष ज्ञान; इसके माध्यम से भी परमात्मा का अनुभव संभव है।

- भक्ति ईश्वर से जुड़ने का प्रमुख माध्यम है।
- ईश्वर की भक्ति में लीन हो जाना ही सच्ची साधना है।
- इस दौरान ‘जो भजे हरि को सदा’ यह भजन भी बजाया गया।
- [YouTube लिंक:](https://youtu.be/dmfMXOz_RYo)
https://youtu.be/dmfMXOz_RYo

हर कार्य में ईश्वर के प्रति श्रद्धा और जागरूकता रखें, और अन्य किसी बात का विचार न करें—तभी ईश्वर से निरंतर संपर्क बना रहेगा। *पिलर्स ऑफ लाइट मेडिटेशन करें और ब्लू एवियन्स को बुलाएँ तथा उनसे सहायता प्राप्त करें।*





भगवान विष्णु के दस अवतार: दिव्य संरक्षण की कथा

हिंदू धर्म में भगवान विष्णु को त्रिमूर्ति का एक महत्वपूर्ण अंग माना जाता है।

विष्णु को पालनहार कहा जाता है, जो समय-समय पर धर्म की रक्षा के लिए अवतरित होते हैं।

अपने दस अवतारों के माध्यम से, भगवान विष्णु ने हर युग में अधर्म का नाश किया और धर्म की पुनः स्थापना की।

ये अवतार मानव विकास की प्रक्रिया और प्रकृति के संरक्षण का प्रतीक हैं। ये हमें करुणा, न्याय और सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं।





मत्स्य अवतार - इस अवतार के माध्यम से, प्रलय में खोए हुए वेदों को पुनः प्राप्त कर सुरक्षित किया गया।



इस अवतार में प्रभु ने जलप्रलय से गिरी हुई वेदों की रक्षा की और उन्हें सुरक्षित रखा।

भगवान विष्णु का यह पहला अवतार एक रोचक पौराणिक कथा है। कहा जाता है कि भगवान

विष्णु ने एक मछली (मत्स्य) का रूप धारण किया ताकि वे एक महाप्रलय से संसार की रक्षा कर सकें।

यह कथा राजा मनु से शुरू होती है, जो एक धार्मिक राजा थे। एक सुबह पूजा करते समय उन्हें अपने हाथ में एक छोटी मछली मिली। मछली ने उनसे बड़ी मछलियों से रक्षा करने की प्रार्थना की। मनु ने दया से उसे एक पात्र में रखा, परंतु वह मछली जल्दी ही बड़ी होती गई। अंत में उसे समुद्र में छोड़ा गया, जहां उसने अपना दिव्य रूप





प्रकट किया और मनु को आने वाली जलप्रलय की चेतावनी दी।

विष्णु ने मनु को एक विशाल नाव बनाने का निर्देश दिया और उसमें सभी जीवों के बीज, सप्तर्षियों और आवश्यक चीजें रखने को कहा। जब प्रलय आया, तब मत्स्य भगवान ने नाव का मार्गदर्शन किया और जीवन की निरंतरता सुनिश्चित की। इस अवतार के माध्यम से न केवल मानवता को बचाया गया, बल्कि वैदिक ज्ञान की रक्षा कर एक नई सभ्यता की नींव भी रखी गई।

अन्य संस्कृतियों में प्रलय की कथाएँ:

अटलांटिस की कथा (Atlantis)

अटलांटिस की कथा प्राचीन यूनानी दार्शनिक प्लेटो की रचनाओं *Timaeus* और *Critias* में मिलती है। प्लेटो के अनुसार, अटलांटिस एक अत्यंत समृद्ध और उन्नत सभ्यता थी, जो "हर्क्यूलिस के स्तंभों" (आज का जिब्राल्टर जलडमरूमध्य) के पार स्थित थी। यह एक आदर्श समाज था, परंतु समय के साथ वहां के लोग लालची और भ्रष्ट हो गए। देवताओं के क्रोध से भूकंप और बाढ़ आई, और अटलांटिस एक ही दिन और रात में समुद्र में डूब गया।





नूह की नौका (Noah's Ark)

बाइबिल की *Genesis* पुस्तक में वर्णित नूह की नौका की कथा भी एक प्रलय की कहानी है। इसमें ईश्वर नूह को आदेश देते हैं कि वह एक विशाल नौका बनाए और उसमें हर प्रजाति के एक-एक जोड़े को तथा अपने परिवार को साथ ले। यह नौका 40 दिन और रात की वर्षा के दौरान जीवन की रक्षा करती है। जब जल घटता है, तो नौका अरारात पर्वत पर ठहरती है। नूह एक कबूतर छोड़ते हैं, जो जैतून की पत्ती लेकर लौटता है - यह प्रलय के अंत का संकेत होता है। यह कथा विश्वास, आज्ञाकारिता और ईश्वर की करुणा का प्रतीक है, और इंद्रधनुष ईश्वर के उस वचन का प्रतीक है कि वह फिर कभी पृथ्वी को जलप्रलय से नष्ट नहीं करेगा।





कूर्म अवतार - इस अवतार में भगवान ने देवताओं और असुरों के बीच अमृत वितरण के दौरान संतुलन बनाए रखा और न्यायपूर्वक अमृत का वितरण सुनिश्चित किया (इस प्रक्रिया में मोहिनी अवतार भी लिया)।



कूर्म अवतार कूर्म अवतार भगवान विष्णु का दूसरा अवतार है, जो स्थिरता और सहारा का प्रतीक है। यह अवतार समुद्र मंथन की कथा में प्रमुख है। इस कथा में देवताओं (देव) और राक्षसों (असुर) ने मिलकर अमृत (अमरता का अमृत) प्राप्त करने के लिए समुद्र का मंथन किया।

उन्होंने मंदराचल पर्वत को मंथन मथानी और वासुकी नाग को रस्सी बनाया। परंतु पर्वत का भार बहुत अधिक था,





जिससे वह समुद्र में डूबने लगा। उस समय भगवान विष्णु ने विशाल कछुए (कूर्म) का रूप धारण किया और समुद्र में जाकर पर्वत को अपनी पीठ पर सहारा दिया, जिससे मंथन सुचारु रूप से चल सका।

इस मंथन से देवी लक्ष्मी सहित कई रत्न निकले, साथ ही अत्यंत विष "हालाहल" भी निकला, जिसे भगवान शिव ने संसार की रक्षा हेतु पिया। अंत में अमृत प्रकट हुआ और भगवान विष्णु ने मोहिनी रूप में उसका न्यायपूर्वक वितरण किया।

यह अवतार धैर्य, सहनशीलता और ईश्वरीय सहयोग की महत्ता को दर्शाता है। कछुए का रूप सहनशक्ति और संतुलन का प्रतीक है, जो ईश्वर द्वारा विश्व में संतुलन बनाए रखने के लिए लिया गया।





वराह अवतार - यह अवतार दृढ़ संकल्प और हर बाधा को पार करने की क्षमता का प्रतीक है।



वराह अवतार वराह अवतार भगवान विष्णु का तीसरा अवतार है, जो शक्ति और संतुलन की पुनः स्थापना का प्रतीक है।

इस अवतार में भगवान विष्णु ने एक

शक्तिशाली वराह (सूअर) का रूप धारण किया और पृथ्वी को बचाया, जिसे राक्षस हिरण्याक्ष ने समुद्र में डुबो दिया था।

हिरण्याक्ष ने पृथ्वी को गहरे जल में खींच लिया था, जिससे ब्रह्मांडीय संतुलन बिगड़ गया। तब भगवान विष्णु ने वराह रूप धारण कर समुद्र में प्रवेश किया, हजारों वर्षों तक राक्षस से युद्ध किया और उसे पराजित किया। तत्पश्चात्, उन्होंने अपनी सशक्त दांतों से पृथ्वी को





उठाया और उसे पुनः उसकी यथास्थान पर स्थापित किया।

यह अवतार दर्शाता है कि प्रकृति की रक्षा और संतुलन बनाए रखना मनुष्य का कर्तव्य है। समुद्र के जल में पृथ्वी को खोज निकालना, पर्यावरणीय और ब्रह्मांडीय संतुलन की पुनः स्थापना का प्रतीक है।

यहाँ में पृथ्वी से बाहर 170 ट्रिलियन लीटर जल मौजूद है। यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी दर्शाता है कि जल ब्रह्मांड में व्यापक है और यह अवतार जल, प्रकृति एवं संरक्षण के महत्व को रेखांकित करता है।





नरसिंह अवतार - यह अवतार दिव्य की सर्वव्यापकता और उन भक्तों की रक्षा का प्रतीक है जो धर्म का पालन करते हैं।



नरसिंह नरसिंह अवतार भगवान विष्णु का चौथा अवतार है, जो ईश्वरीय रक्षा और बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है। इस रूप में भगवान विष्णु ने आधे मानव और आधे सिंह का रूप धारण किया ताकि वे अपने परम भक्त प्रह्लाद की रक्षा कर सकें और ब्रह्मांड में संतुलन स्थापित कर सकें।

कथा के अनुसार, हिरण्यकश्यप नामक एक शक्तिशाली राक्षस राजा ने ब्रह्मा से वर प्राप्त किया था, जिसके अनुसार उसे न कोई मानव, न कोई पशु मार सकता था; न दिन में, न रात में; न घर के अंदर, न बाहर; न धरती पर, न आकाश में; और न किसी शस्त्र से। इस वर से अभिमानित होकर उसने स्वयं को भगवान घोषित कर दिया और विष्णु के भक्तों को सताने लगा, जिसमें उसका पुत्र प्रह्लाद भी शामिल था।





प्रह्लाद, अपने पिता के क्रोध और अत्याचार के बावजूद, भगवान विष्णु की भक्ति में अडिग रहा। जब हिरण्यकश्यप ने प्रह्लाद को मारने का प्रयास किया, तब भगवान विष्णु ने नरसिंह रूप में प्रकट होकर वर की सभी शर्तों को तोड़ते हुए—संध्या समय (न दिन न रात), घर के द्वार पर (न अंदर न बाहर), अपनी जांघ पर रखकर (न धरती न आकाश), अपने नाखूनों से (बिना शस्त्र)—हिरण्यकश्यप का वध किया। यह अवतार हमें यह सिखाता है कि ईश्वर अपने भक्तों की रक्षा के लिए किसी भी सीमा को पार कर सकते हैं और धर्म की स्थापना के लिए किसी भी रूप में आ सकते।

अहोबिलम मंदिर, आंध्र प्रदेश



आहोबिलम (या आहबीलम) एक मंदिरों का समूह है, जो आंध्र प्रदेश के कुरनूल जिले के नल्लमला पर्वत श्रृंखला में





स्थित है। यह स्थान भगवान नरसिंह के नौ रूपों की पूजा के लिए प्रसिद्ध है। लगभग 5 किलोमीटर के दायरे में फैले इस मंदिर परिसर में नौ प्रमुख नरसिंह मंदिर हैं, साथ ही नीचे पर्वत तलहटी में प्रह्लादावरद मंदिर स्थित है। यह एकमात्र स्थान है जहाँ भगवान नरसिंह के सभी नौ स्वरूपों की पूजा होती है।

यह स्थान पौराणिक रूप से अत्यंत पवित्र माना जाता है क्योंकि यहीं भगवान नरसिंह ने हिरण्यकश्यप का वध किया और प्रह्लाद की रक्षा की थी। प्रारंभिक मंदिरों का निर्माण 8वीं शताब्दी में चालुक्य राजाओं ने किया था, लेकिन वर्तमान संरचनाएँ अधिकतर विजयनगर साम्राज्य (लगभग 15वीं शताब्दी) के समय की हैं। हालांकि 1578 में मुगलों द्वारा इन मंदिरों को काफी क्षति पहुँचाई गई थी।

इस मंदिर परिसर में भगवान नरसिंह के नौ रूपों के लिए नौ मंदिर हैं, जो भगवान के विभिन्न स्वरूपों को दर्शाते हैं—कहीं वे उग्र हैं, कहीं शांत, कहीं ध्यानमग्न और कहीं प्रेममयी।





1. ज्वाला नरसिंह - सबसे उग्र रूप, जिसमें भगवान हिरण्यकशिपु का वध करते समय प्रकट होते हैं।
2. अहोबिल नरसिंह - मुख्य देवता, उग्र नरसिंह, जो ऊपरी अहोबिलम में विराजमान हैं।
3. मलोला नरसिंह - सबसे करुणामय रूप, जिसमें वे लक्ष्मी देवी के साथ विराजते हैं।
4. क्रोड़ा नरसिंह - वराह-नरसिंह स्वरूप, जिसमें भगवान वराह रूप में प्रकट होते हैं।
5. करण्जा नरसिंह - करंज वृक्ष के नीचे विराजमान देवता, जो धनुष धारण किए हुए हैं (दुर्लभ स्वरूप)।
6. भार्गव नरसिंह - ऋषि भार्गव द्वारा पूजित स्वरूप।
7. योगानंद नरसिंह - ध्यानमग्न मुद्रा में भगवान, जिन्होंने प्रह्लाद को योग का ज्ञान दिया।
8. छत्रवाट नरसिंह - वट वृक्षों से घिरे हुए, जो संगीत को प्रिय मानते हैं।
9. पावन नरसिंह - सबसे शांत और सरल रूप, जिन्हें पार्षो का नाशक माना जाता है।





वामन अवतार -यह अवतार विनम्रता, भक्ति और
ब्रह्मांड में संतुलन के महत्व को दर्शाता है।



वामन अवतार भगवान विष्णु
का पाँचवाँ अवतार है, जो
विनम्रता और ब्रह्मांडीय
संतुलन की पुनर्स्थापना का
प्रतीक है। इस रूप में, विष्णु
एक बौने ब्राह्मण के रूप में
प्रकट हुए ताकि असुर राजा
महाबली के गर्व को शांत किया
जा सके और देवताओं के लिए
तीनों लोकों को पुनः प्राप्त किया जा सके।

महाबली, भले ही एक उदार और न्यायप्रिय शासक थे,
लेकिन अत्याधिक शक्तिशाली हो गए थे, जिससे देवताओं
और असुरों के बीच शक्ति-संतुलन प्रभावित हो रहा था।
इस स्थिति को सुधारने के लिए, भगवान विष्णु वामन
(एक छोटे ब्राह्मण बालक) के रूप में अवतरित हुए।
महाबली ने एक भव्य यज्ञ में अपनी दयालु प्रवृत्ति के
अनुसार, वामन को कोई भी वरदान देने का वचन दिया।





वामन ने विनम्रता से तीन पग भूमि की मांग की, जिसे वे अपने पैरों से नार्पेंगे। महाबली ने इसे स्वीकार कर लिया, हालांकि उनके गुरु शुक्राचार्य ने उन्हें वामन के दिव्य स्वरूप के बारे में चेतावनी दी थी। जैसे ही वचन दिया गया, वामन ने विशाल रूप धारण कर लिया। अपने पहले पग से उन्होंने पृथ्वी को ढक लिया; दूसरे पग से उन्होंने स्वर्ग को पार कर लिया। तीसरे पग के लिए, महाबली ने अपना सिर समर्पित कर दिया, जिससे उनकी विनम्रता और भक्ति का परिचय मिला। महाबली की इस महानता से प्रसन्न होकर, विष्णु ने उन्हें पाताल लोक का शासन सौंपा और वर्ष में एक बार अपने लोगों से मिलने का वरदान दिया, जिसे केरल में ओणम पर्व के रूप में मनाया जाता है।





परशुराम अवतार- न्याय, अनुशासन और धर्म की रक्षा का प्रतीक



परशुराम अवतार भगवान विष्णु का छठा अवतार है, जो न्याय, अनुशासन और धर्म की रक्षा का प्रतीक माना जाता है। परशुराम का अर्थ है 'फरसे वाले राम', और वे ब्राह्मण योद्धा के रूप में चित्रित किए जाते हैं—जिनमें एक ऋषि की बुद्धि और

क्षत्रिय का पराक्रम समाहित था।

ऋषि जमदग्नि और रेणुका के पुत्र परशुराम का जीवन उनके माता-पिता के प्रति अटूट भक्ति और प्रबल न्यायप्रियता से भरा हुआ था। उनसे जुड़ी सबसे प्रसिद्ध कथा अत्याचारी राजा कार्तवीर्य अर्जुन की है, जिसने ऋषि जमदग्नि की कामधेनु गाय को हड़पने का प्रयास किया और बाद में जमदग्नि की हत्या कर दी। इस अन्याय से क्रोधित होकर, परशुराम ने अपने पिता की मृत्यु का प्रतिशोध लेने का संकल्प लिया। अपने रोष में, परशुराम





ने उन क्षत्रियों के खिलाफ अभियान चलाया, जो भ्रष्ट और दमनकारी हो चुके थे। कहा जाता है कि उन्होंने 21 बार पृथ्वी को क्षत्रियों से मुक्त कर संतुलन और धर्म की पुनर्स्थापना की। हालांकि वे एक योद्धा के रूप में प्रसिद्ध हैं, फिर भी उनकी भगवान शिव के प्रति गहन भक्ति भी उल्लेखनीय है—यही कारण है कि उन्हें शिव से दिव्य फरसा प्राप्त हुआ। परशुराम को चिरंजीवी (अमर) माना जाता है और यह विश्वास किया जाता है कि कलियुग के अंत में, जब **भगवान विष्णु का अंतिम अवतार कल्कि प्रकट होंगे**, तब परशुराम उनके गुरु और मार्गदर्शक के रूप में **पुनः उपस्थित होंगे**।





राम अवतार - कर्तव्य, न्याय, आदर्श, समर्पण का प्रतीक, जो कभी अपने वचन से नहीं हटता।



भगवान राम भगवान राम को आदर्श जीवन मूल्यों—सदाचार, सम्मान और धर्म (कर्तव्य) का प्रतीक माना जाता है। वे अयोध्या के राजकुमार थे, राजा दशरथ और रानी कौशल्या के ज्येष्ठ पुत्र। जब उनके पिता ने रानी कैकेयी को दिया हुआ वचन निभाया, तो राम ने बिना किसी संकोच के 14 वर्षों का वनवास

स्वीकार कर लिया। उनके साथ उनकी पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण भी गए।

वनवास के दौरान, राक्षसों के राजा रावण ने सीता का अपहरण कर लिया। राम ने उन्हें बचाने के लिए एक महान यात्रा की शुरुआत की। इस अभियान में उन्हें हनुमान, सुग्रीव और वानर सेना का साथ मिला। अनेक संघर्षों के बाद राम ने लंका पर चढ़ाई की और रावण को हराकर सीता को वापस लाया।





वनवास समाप्त होने पर जब राम अयोध्या लौटे, तो पूरे नगर में उत्सव मनाया गया और उनका भव्य राज्याभिषेक हुआ। इसी खुशी में दीप जलाए गए और तभी से दिवाली का पर्व आरंभ हुआ। राम की यह कथा सिर्फ एक साहसिक गाथा नहीं, बल्कि एक गहरी आध्यात्मिक यात्रा है—जो हमें निष्ठा, प्रेम और न्याय जैसे शाश्वत मूल्यों की याद दिलाती है।





कृष्ण अवतार - यह दर्शाता है कि कोई व्यक्ति शांतिपूर्ण और आनंदमय जीवन जीते हुए भी अपने सभी लक्ष्यों को प्राप्त कर सकता है, जो अनेक बाधाओं से भरे होते हैं।



कृष्ण अवतार, भगवान विष्णु का आठवाँ अवतार, श्रीकृष्ण, हिंदू धर्म की सबसे प्रिय और प्रेरणादायक गाथाओं में से एक हैं। द्वापर युग में जब अधर्म बढ़ रहा था और अत्याचारी राजा कंस जैसे दुष्ट बलवान हो रहे थे, तब भगवान विष्णु ने धरती पर धर्म की पुनर्स्थापना के लिए श्रीकृष्ण के रूप में जन्म लिया।

श्रीकृष्ण का जन्म मथुरा की कारागार में माता देवकी और पिता वसुदेव के यहाँ हुआ था। कंस से नवजात कृष्ण को बचाने के लिए, वसुदेव ने उन्हें रातों-रात यमुना पार कर गोकुल पहुंचाया, जहाँ नंद बाबा और यशोदा माँ ने उन्हें स्नेहपूर्वक पाला।

उनका बचपन आनंद, शरारत और चमत्कारों से भरा हुआ था—माखन चुराना, पूतना राक्षसी और कालिया नाग का वध करना, और गोवर्धन पर्वत उठाकर ग्रामवासियों को इंद्र





की भारी वर्षा से बचाना, ये सभी प्रसंग उनकी बाल लीलाओं को अमर बना गए।

युवा होते ही कृष्ण ने मथुरा लौटकर कंस का अंत किया और अपने माता-पिता को मुक्त कराया। बाद में उन्होंने समुद्र किनारे द्वारका नगरी बसाई, जो उनकी राजनीति और प्रशासन की कुशलता का प्रतीक बनी।

महाभारत के युद्ध में कृष्ण की भूमिका केवल एक सारथी की नहीं थी—उन्होंने अर्जुन को जीवन का गूढ़ ज्ञान दिया, जो "भगवद गीता" के रूप में आज भी कर्म, भक्ति और आत्मज्ञान का अमूल्य स्रोत है।

श्रीकृष्ण का जीवन केवल चमत्कारों की कहानी नहीं, बल्कि प्रेम, करुणा, बुद्धिमत्ता और धर्म के संतुलन की जीवंत मिसाल है। वे आज भी केवल एक देवता ही नहीं, बल्कि एक सखा, एक मार्गदर्शक और एक जीवन-दर्शन के रूप में लोगों के हृदयों में बसे हैं।





बुद्ध अवतार - अहिंसा और करुणा का संदेश



बुद्ध अवतार को हिंदू परंपरा में भगवान विष्णु का नौवां अवतार माना जाता है। यह विशेष अवतार है क्योंकि इसमें भगवान विष्णु ने पारंपरिक योद्धा रूपों को छोड़कर एक शांतिप्रिय और ज्ञानपूर्ण मार्ग को अपनाया, इस अवतार का

उद्देश्य उस समय के वैदिक अनुष्ठानों के दुरुपयोग को रोकना और लोगों को पशु बलि से दूर कर अहिंसा, करुणा और आत्मज्ञान की ओर प्रेरित करना था।

भगवान विष्णु ने सिद्धार्थ गौतम के रूप में लुंबिनी (आज का नेपाल) में जन्म लिया। वे राजा शुद्धोधन और रानी माया के पुत्र थे। राजसी विलासिता में पले-बढ़े सिद्धार्थ का हृदय संसार के दुःखों को देखकर विचलित हो गया। सत्य की खोज में उन्होंने राजसी जीवन त्याग दिया और वर्षों की तपस्या और ध्यान के बाद बोधगया में बोधिवृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त कर 'बुद्ध' - 'बोधिसत्व' बन गए।





बुद्ध के उपदेश, जिन्हें धर्म कहा जाता है, चार आर्य सत्य और अष्टांगिक मार्ग पर आधारित हैं, जो मनुष्य को दुःख और पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति की राह दिखाते हैं।

अष्टांगिक मार्ग - मोक्ष की ओर मार्ग

अष्टांगिक मार्ग बौद्ध धर्म की मूल शिक्षा है, जिसे तीन भागों में बाँटा गया है: प्रज्ञा (बुद्धिमत्ता), शील (नैतिक आचरण), और समाधि (मानसिक अनुशासन)।

प्रज्ञा (बुद्धिमत्ता)

1. सम्यक दृष्टि - सत्य और चार आर्य सत्य को समझना।
2. सम्यक संकल्प - त्याग, दया और अहिंसा के विचारों को अपनाना।

शील (नैतिक आचरण)

3. सम्यक वाणी - सत्य बोलना और हानिकारक वचनों से बचना।
4. सम्यक कर्म - नैतिकता से युक्त कर्म करना, किसी को नुकसान न पहुँचाना।
5. सम्यक आजीविका - ऐसा जीवनयापन करना जो दूसरों को हानि न पहुँचाए।





समाधि (मानसिक अनुशासन)

6. सम्यक प्रयास - शुभ गुणों को विकसित करना और अशुभ भावनाओं को त्यागना।
7. सम्यक स्मृति - शरीर, भावनाओं, चित्त और वस्तुओं की सजगता बनाए रखना।
8. सम्यक समाधि - ध्यान साधना के माध्यम से चित्त को एकाग्र करना।

इस मार्ग को अक्सर धर्म चक्र (धर्म के चक्र) के रूप में दर्शाया जाता है, जिसमें सभी अंग एक-दूसरे से जुड़े होते हैं, और मिलकर आध्यात्मिक विकास का मार्ग बनाते हैं।





कल्कि अवतार - आशा और धर्म की पुनर्स्थापना



कल्कि अवतार भगवान विष्णु का दसवाँ और अंतिम अवतार है, जो कलियुग के अंत में प्रकट होंगे, जो वर्तमान अंधकार और नैतिक पतन का युग है। कल्कि के आगमन का वर्णन धर्म की पुनर्स्थापना के लिए किया

गया है और अधर्म का अंत होगा। वे संसार से बुराई को समाप्त करेंगे और सृष्टि के चक्र को पुनः आरंभ करेंगे, जिससे सत्य युग आएगा, जो सत्य और सदाचार का युग है। कल्कि को अक्सर एक भव्य सफेद घोड़े देवदत्त पर सवार एक वीर योद्धा के रूप में दर्शाया जाता है, जो जलते हुए तलवार को धारण करते हैं। उनका दिव्य स्वरूप न्याय और पुनर्निर्माण का प्रतीक है।

शास्त्रों के अनुसार, कल्कि का जन्म शंभल नामक गाँव में विष्णुयश और सुमति के यहाँ होगा। उनका आगमन कलियुग के अराजकता के समापन का सूचक होगा। कल्कि दुष्ट शक्तियों, भ्रष्ट शासकों और अनैतिक प्राणियों





को हराकर संसार में संतुलन और सामंजस्य पुनः स्थापित करेंगे। माना जाता है कि वे परशुराम, विष्णु के एक अन्य अवतार, द्वारा प्रशिक्षित किए जाएंगे, जो उन्हें उनके मिशन में मार्गदर्शन देंगे। कल्कि अवतार आशा और उज्ज्वल भविष्य का संदेश है, जो मानवता को कठिन समय में भी धर्म की स्थापना करने की प्रेरणा देता है।





शालिग्राम - भगवान विष्णु का पाषाण स्वरूप



जलंधर और वृंदा की कथा हिंदू धर्म में भक्ति, शक्ति और भगवान की लीलाओं से भरपूर एक अत्यंत रोचक प्रसंग है।

जलंधर भगवान शिव की तीसरी आँख की ज्वाला से उत्पन्न होकर समुद्र में जन्मा एक बलशाली और अभिमानी असुर था। वृंदा (उसकी पत्नी), भगवान विष्णु की परम भक्त और एक पतिव्रता स्त्री थी। उसकी पतिव्रता के कारण जलंधर को कोई भी देवता पराजित नहीं कर सकता था। जलंधर के अहंकार ने उसे देवताओं से युद्ध करने और माता पार्वती को पाने का दुस्साहस करवा दिया। तब भगवान शिव ने उसका अंत करने का संकल्प लिया। लेकिन वृंदा की तपस्या से जलंधर को सुरक्षा प्राप्त थी।





तब भगवान विष्णु ने जलंधर का रूप धारण कर वृंदा को छल से भ्रमित किया। जब वृंदा का पतिव्रत धर्म भंग हुआ, तो जलंधर की रक्षा समाप्त हो गई और भगवान शिव ने उसे युद्ध में मार दिया।

जब वृंदा को सत्य का ज्ञान हुआ, तो उसने दुःख और क्रोध में भगवान विष्णु को शिला बनने का श्राप दिया और लक्ष्मी जी से वियोग का शाप भी दिया। तब से भगवान विष्णु का एक रूप शालिग्राम शिला के रूप में पूजनीय हुआ।



वृंदा की मृत्यु के बाद वह तुलसी के रूप में पुनर्जन्म लीं, जो आज भी हिंदू धर्म में पवित्रता और भक्ति की प्रतीक मानी जाती हैं। तुलसी के पत्ते भगवान विष्णु को समर्पित पूजन में अनिवार्य माने जाते हैं।





वायु तत्व (विचारों) जल तत्व (भावनाओं) और अग्नि तत्व - चित्त (चेतना और रूपांतरण)का संतुलन

प्राचीन योग और आयुर्वेदिक परंपराओं के अनुसार, हमारे शरीर और मन पर पंचतत्त्वों का गहरा प्रभाव होता है। इनमें से दो महत्वपूर्ण तत्व – वायु और जल – क्रमशः विचारों और भावनाओं को संचालित करते हैं। जब ये संतुलित रहते हैं, तो मानसिक और भावनात्मक शांति का अनुभव होता है।

वायु - मन (विचारों का प्रवाह)

वायु तत्व हमारे मन और विचारों को प्रभावित करता है। जब यह संतुलित होता है, तो व्यक्ति को मानसिक स्पष्टता, रचनात्मकता और एकाग्रता प्राप्त होती है। लेकिन अगर यह असंतुलन में हो जाए, तो व्यक्ति बेचैनी, चिंता और उलझे हुए विचारों का अनुभव करता है। विचारों की गति भी हवा की तरह होती है—कभी धीमी, कभी तेज़।





योग और ध्यान के माध्यम से वायु तत्व को संतुलित किया जा सकता है, जिससे मन स्थिर और शांत होता है।

जल - भावनाएं (संवेदनशीलता और संबंध)

जल तत्व, प्राचीन वैदिक परंपराओं में भावनाओं और संबंधों से जुड़ा हुआ है। यह लचीलापन, कोमलता और पोषण का प्रतीक है। जिस प्रकार जल हर आकार में ढल जाता है, उसी तरह यह तत्व हमें भावनात्मक रूप से जुड़ने और दूसरों की भावनाओं को समझने में मदद करता है। संतुलित जल तत्व वाला व्यक्ति संवेदनशील, करुणाशील और सहानुभूति से भरपूर होता है। भावनाओं का यह प्रवाह हमारे भीतर प्रेम, अपनापन और संबंधों की मिठास बनाए रखता है।

अग्नि - चित्त (चेतना और रूपांतरण)

अग्नि तत्व का गहरा संबंध चित्त (मनोचेतना) से होता है। यह तत्व परिवर्तन और शुद्धिकरण का प्रतीक है। जिस प्रकार अग्नि कचरे को जलाकर राख बना देती है, उसी तरह यह आंतरिक अग्नि (चित्ताग्नि) नकारात्मक विचारों, अज्ञानता और मानसिक विकर्षणों को जलाकर शुद्ध





चेतना को प्रकट करती है। संतुलित अग्नि तत्व हमें ध्यान में स्थिरता, आत्म-जागरूकता और उच्च चेतना की ओर ले जाता है।

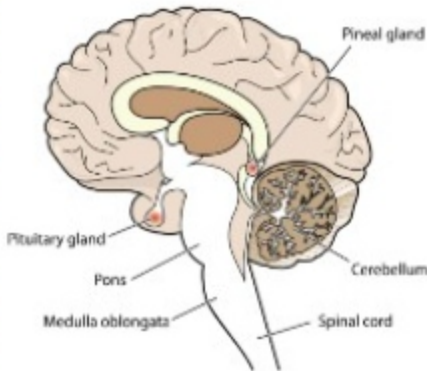
इन सभी तत्वों को संतुलित करने हेतु ध्यान और साधना का अभ्यास कराया गया, जिससे शरीर, मन और आत्मा के बीच सामंजस्य स्थापित हो सके।





हमारी ग्रंथियाँ और आध्यात्मिकता से जुड़े रसायन

पीनियल ग्रंथि - 'तीसरी आंख', "आध्यात्मिक जागृति का केंद्र"



पीनियल ग्रंथि, जिसे अक्सर "तीसरी आंख" कहा जाता है, मस्तिष्क के मध्य स्थित एक छोटी सी मटर के आकार की अंतःसावी ग्रंथि है। यह ग्रंथि सदियों से

वैज्ञानिकों और संतों को आकर्षित करती रही है, क्योंकि इसका संबंध आध्यात्मिक अनुभवों और आंतरिक दृष्टि से जोड़ा गया है।

यह ग्रंथि मस्तिष्क के एपिथैलेमस भाग में, दोनों गोलार्धों के बीच स्थित होती है, और इसका आकार छोटे से पाइन कोन (चीड़ के फल) की तरह होता है।

मुख्यतः यह ग्रंथि मेलाटोनिन हार्मोन का निर्माण करती है, जो शरीर की नींद-जागरण की जैविक घड़ी (सर्कैडियन





रिदम) को नियंत्रित करता है। यह हार्मोन प्रकाश के अनुसार शरीर को दिन और रात के चक्रों में समायोजित करता है।

प्राचीन सभ्यताओं और दार्शनिकों, विशेषकर रेने देकार्त ने इस ग्रंथि को "आत्मा का आसन" कहा था। वे मानते थे कि यह ग्रंथि आत्मा और शरीर के बीच का दिव्य सेतु है। आधुनिक विज्ञान पीनियल ग्रंथि को अंतःस्रावी (endocrine) तंत्र का एक महत्वपूर्ण हिस्सा मानता है, हालाँकि इसके सभी कार्यों की पूरी समझ अभी विकसित हो रही है। यह छोटी सी मटर के दाने जैसी ग्रंथि, केवल हार्मोन उत्पन्न करने वाली इकाई नहीं है — कई आध्यात्मिक परंपराओं में इसे "तीसरी आँख" कहा जाता है, जो भौतिक और आध्यात्मिक जगत के बीच एक सेतु की तरह कार्य करती है।

पीनियल ग्रंथि को योग और ध्यान साधना में आज्ञा चक्र (Third Eye Chakra) से जोड़ा जाता है। यह ऊर्जा केंद्र आत्मनिरीक्षण, अंतर्ज्ञान और उच्च चेतना का प्रतीक माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि जब यह चक्र जाग्रत होता है, तो व्यक्ति की आत्मिक समझ गहरी होती है और वह ब्रह्मांडीय ज्ञान से जुड़ने लगता है।





ध्यान (Meditation), कल्पना (Visualization) और विशुद्ध मानसिक एकाग्रता के अभ्यासों से इस ग्रंथि को सक्रिय किया जा सकता है। इससे व्यक्ति को गहरे ध्यान और आध्यात्मिक अनुभवों का साक्षात्कार हो सकता है – जो इंद्रियों की सीमा से परे होते हैं।

प्राचीन सभ्यताओं, विशेष रूप से मिस्र की संस्कृति में भी, इस ग्रंथि को आत्मजागृति से जोड़ा गया था। मिस्रवासियों ने इसे "Eye of Horus" (होरस की आँख) के रूप में दर्शाया, जो आध्यात्मिक दृष्टि और रक्षा का प्रतीक है।

योग, ध्यान और सात्विक जीवनशैली के माध्यम से पीनियल ग्रंथि को जागृत किया जा सकता है, जिससे अंतःदृष्टि, स्पष्टता और दिव्य चेतना की अनुभूति होती है।





पिट्यूटरी ग्रंथि - आत्मिक विकास की 'मास्टर कुंजी'

पिट्यूटरी ग्रंथि को अक्सर "मास्टर ग्रंथि" कहा जाता है, क्योंकि यह शरीर की अन्य हार्मोन ग्रंथियों को नियंत्रित करती है। यह मटर के आकार की छोटी सी ग्रंथि हमारे मस्तिष्क के आधार में, सेला टर्सिका नामक हड्डी के अंदर स्थित होती है।

यह ग्रंथि शरीर में संतुलन बनाए रखने, तनाव के प्रति प्रतिक्रिया देने, विकास और प्रजनन क्रियाओं को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हाइपोथैलेमस के साथ इसका गहरा संबंध इसे हार्मोन संतुलन का एक सटीक नियंत्रक बनाता है।

आध्यात्मिक दृष्टिकोण से इसकी विशेषता:

- **दुनिया और दिव्यता के बीच सेतु:** पिट्यूटरी ग्रंथि को योग और ध्यान में आज्ञा चक्र (तीसरी आँख) से जोड़ा जाता है। यह माना जाता है कि यह भौतिक शरीर और आत्मिक संसार के बीच सेतु का कार्य करती है।
- **आध्यात्मिक अवस्थाओं पर हार्मोन का प्रभाव:** यह ग्रंथि मेलाटोनिन जैसे हार्मोन के उत्पादन में सहायक होती है, जो गहरे ध्यान, आत्मशांति और आध्यात्मिक अनुभवों को प्रभावित करते हैं।



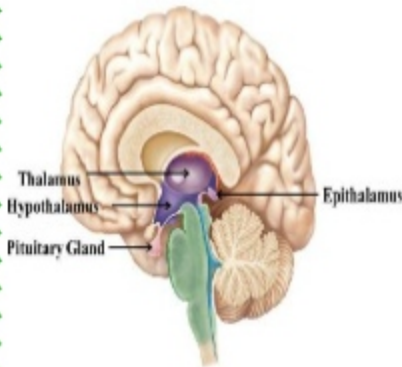


- **दिव्य ऊर्जा का रिसीवर और ट्रांसमीटर:** कुछ आध्यात्मिक परंपराएँ मानती हैं कि यह ग्रंथि दिव्यता की तरंगों को ग्रहण और प्रेषित करती है, जिससे व्यक्ति ब्रह्मांडीय चेतना से जुड़ सकता है।
- **पीनियल ग्रंथि के साथ सामंजस्य:** यह पीनियल ग्रंथि (जो सहस्रार चक्र से जुड़ी है) के साथ मिलकर कार्य करती है, जिससे आध्यात्मिक प्रगति और आत्मबोध को बल मिलता है।





थैलेमस - चेतना और इंद्रियबोध का मध्यस्थ



थैलेमस मस्तिष्क का एक अत्यंत महत्वपूर्ण भाग है, जिसे अक्सर "ब्रेन का रिले स्टेशन" कहा जाता है। यह अंडाकार आकार की संरचना मस्तिष्क के

मध्य-मस्तिष्कीय (डार्येसफैलन) क्षेत्र में गहराई में स्थित होती है और यह मुख्य रूप से ये मैटर से बनी होती है।

इसका मुख्य कार्य:

- **इंद्रिय संकेतों का प्रसंस्करण और संचरण:** यह हमारे शरीर की सभी इंद्रियों (सूँघने को छोड़कर) से आने वाली जानकारी को मस्तिष्क के उपयुक्त हिस्सों तक पहुँचाता है, जिससे हम उन्हें समझ और अनुभव कर सकें।
- **जागरूकता और सतर्कता बनाए रखना:** थैलेमस हमें सतर्क और जागरूक बनाए रखता है, यह तय करता है कि किस सूचना पर तुरंत ध्यान देना आवश्यक है।
- **भावनात्मक और स्मृति विकास में योगदान:** यह लिम्बिक प्रणाली से जुड़ा होता है, जिससे यह





भावनाओं का संतुलन, याददाश्त बनाना, और सीखने की प्रक्रिया में सहायक होता है।

- **संचालन और संतुलन में सहायता:** थैलेमस, सेरिबेलम और मोटर कॉर्टेक्स के बीच संचार स्थापित करता है, जिससे शरीर की गति और संतुलन बना रहता है। थैलेमस मस्तिष्क में एक ऐसा महत्वपूर्ण केंद्र है जो इंद्रियों से प्राप्त सूचनाओं और शारीरिक गतिविधियों को आपस में जोड़ने का कार्य करता है। यह न केवल संवेदी और गतिशील कार्यों का समन्वय करता है, बल्कि विचार, समझ, और स्मरण जैसी उन्नत मानसिक प्रक्रियाओं को भी सशक्त रूप से सहयोग देता है। थैलेमस मस्तिष्क का एक अत्यंत महत्वपूर्ण हिस्सा है जो इंद्रिय और भावनात्मक सूचनाओं के आदान-प्रदान का कार्य करता है। यह एक तरह से "रिले स्टेशन" की तरह काम करता है, जो हमारे बाहरी और भीतरी अनुभवों को मस्तिष्क के अलग-अलग हिस्सों तक पहुँचाता है। अध्ययनों से यह संकेत मिला है कि थैलेमस, पैराइटल कॉर्टेक्स और कॉडेट जैसे अन्य मस्तिष्क क्षेत्रों के साथ मिलकर आध्यात्मिक अनुभवों की अनुभूति में भाग लेता है।





इन अनुभवों में अक्सर किसी उच्च शक्ति से जुड़ाव, आत्म-से-पार चेतना (transcendence) या सम्पूर्ण ब्रह्मांड से एकत्व की भावना शामिल होती है।

जब हम ध्यान या प्रार्थना जैसी आध्यात्मिक साधनाएँ करते हैं, तो थैलेमस हमारी एकाग्रता और जागरूकता को नियंत्रित करता है। यह इंद्रिय-प्रवेशों को छांटकर केवल आवश्यक और सूक्ष्म अनुभूतियों पर ध्यान केंद्रित करने में मदद करता है, जिससे साधना और अनुभव गहराते हैं। इस प्रक्रिया से व्यक्ति को आत्मिक शांति, भावनात्मक गहराई और ब्रह्मांडीय चेतना से जुड़ाव का अनुभव हो सकता है। इस तरह, थैलेमस न केवल शारीरिक और मानसिक कार्यों में, बल्कि आध्यात्मिक चेतना के विकास में भी एक अदृश्य पुल का कार्य करता है।





रुद्र ग्रंथि को कैसे भेदा जाए और यह क्यों आवश्यक है?

तीनों ग्रंथियों - ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र - का आत्मिक चेतना के विकास में गहरा महत्व होता है।

1. ब्रह्मा ग्रंथि - मूलाधार चक्र में स्थित यह कुण्डलिनी शक्ति की सुप्त अवस्था का स्थान है।

✿ यह हमारी मूल प्रवृत्तियों, जीवित रहने की आवश्यकताओं और भौतिक सुख-सुविधाओं की ओर आसक्ति को नियंत्रित करती है।

✿ यह ग्रंथि हमें भोजन, आश्रय, संतानोत्पत्ति, और इंद्रिय सुखों की ओर बांधती है।

✿ यह तमोगुण से संबंधित होती है, जो जड़ता, अज्ञान और अस्तव्यस्तता का प्रतीक है।

✿ जब यह ग्रंथि अवरुद्ध रहती है, तो भय, असुरक्षा और सांसारिक सुखों से अत्याधिक आसक्ति पैदा होती है।

✿ यह ग्रंथि मृत्यु के भय और भौतिक संसार से मोह को दर्शाती है, जो आध्यात्मिक प्रगति को रोकता है।

इस ग्रंथि को भेदने पर कुण्डलिनी शक्ति ऊर्ध्वगामी होती है और व्यक्ति भय और स्वार्थ से मुक्त होकर उच्च चेतना की ओर अग्रसर होता है।





2. विष्णु ग्रंथि - हृदय चक्र में स्थित यह प्रेम, करुणा और शांति का केन्द्र है।

- ✚ यह हमारी भावनात्मक प्रवृत्तियों, सामाजिक पहचान और अहंकार को नियंत्रित करती है।
- ✚ यह ग्रंथि हमें संबंधों, स्वीकृति और सामाजिक भूमिका से बांधती है।
- ✚ यह रजोगुण से संबंधित होती है, जो इच्छा, कर्म और अहंकार का प्रतीक है।
- ✚ जब यह ग्रंथि अवरुद्ध होती है, तो व्यक्ति अत्याधिक गर्व, भावनात्मक असंतुलन और प्रशंसा की चाह में फंसा रहता है।
- ✚ यह ग्रंथि सामाजिक पहचान और व्यक्तिगत भावनात्मक बंधनों से जुड़ी होती है, जो आत्मिक उन्नति में बाधा बनती है।

इस ग्रंथि को भेदने पर भावनात्मक संतुलन प्राप्त होता है, और व्यक्ति निःस्वार्थ प्रेम व अहंकार-मुक्त स्थिति को प्राप्त करता है।





3. **रुद्र ग्रंथि - विशुद्धि और आज्ञा चक्र में स्थित यह आत्मज्ञान और पारलौकिक सत्य की अनुभूति का द्वार है।**

- यह मन, बुद्धि और 'मैं' की भावना से जुड़ी होती है।
- यह ग्रंथि व्यक्ति को उसके अहं, बौद्धिक गर्व और आत्म-पहचान से बांधती है।
- यह सात्त्विक गुण से संबंधित होती है, जो पवित्रता, विवेक और आध्यात्मिक आकांक्षा का प्रतीक है।
- जब यह ग्रंथि अवरुद्ध होती है, तो व्यक्ति अपने विचारों से ही चिपका रहता है, ज्ञान का घमंड करता है और ईश्वर में पूर्ण समर्पण से कतराता है।
- यह ग्रंथि अंतिम बाधा होती है, जो व्यक्ति को ईश्वर से एकात्म होने से रोकती है।

इस ग्रंथि को भेदने पर कुण्डलिनी ऊर्जा सहसार चक्र तक पहुँचती है और आत्म-साक्षात्कार तथा ब्रह्म से एकता की स्थिति प्राप्त होती है।





रुद्र ग्रंथि के जागरण से होने वाले चमत्कार:

1. अनंत अंतर ज्ञान (Infinite Inner Knowledge):

- ❖ भविष्य की घटनाओं का पूर्वाभास होने लगता है।
- ❖ अंतर्ज्ञान (Intuition) तीव्र हो जाता है।
- ❖ निर्णय लेने की क्षमता अत्यंत सटीक और तीव्र हो जाती है।
- ❖ आंतरिक चेतना से स्पष्ट मार्गदर्शन प्राप्त होने लगता है।

2. अवलौकिक बोध (Extraordinary Awareness):

- ❖ व्यक्ति को आध्यात्मिक सत्य का प्रत्यक्ष अनुभव होता है।
- ❖ जीवन के रहस्य अपने आप स्पष्ट होने लगते हैं।
- ❖ आत्मज्ञान की अनुभूति सहज हो जाती है।

3. बुद्धिमत्ता का विस्तार (Expansion of Intellect):

- ❖ विचारों की गहराई और स्पष्टता बढ़ती है।
- ❖ जटिल समस्याओं को सरल तरीकों से सुलझाने की क्षमता विकसित होती है।
- ❖ स्मरण शक्ति में अद्भुत वृद्धि होती है।

इस ग्रंथि को भेदने से कुण्डलिनी शक्ति सहसार चक्र तक पहुँचती है, जहाँ आत्मा का पूर्ण जागरण होता है। यह स्थिति आत्म-साक्षात्कार की चरम अवस्था होती है,





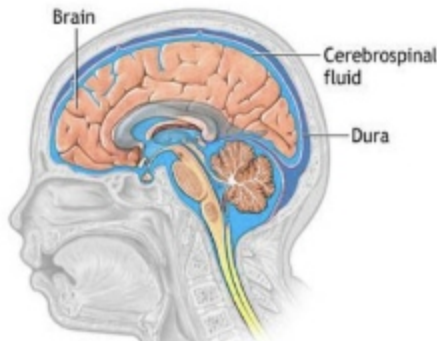
जिसमें व्यक्ति अपने सीमित 'स्व' से मुक्त होकर दिव्यता के साथ एकाकार हो जाता है। इस अवस्था में अहंभाव समाप्त हो जाता है और साधक ब्रह्म से एकत्व का अनुभव करता है- यहीं पर आत्मा और परमात्मा का मिलन होता है।

यह वही क्षण होता है जहाँ 'मैं' मिट जाता है और केवल 'वह' शेष रहता है।





सेरेब्रोस्पाइनल फ्लूइड (CSF) - एक समग्र यात्रा



सेरेब्रोस्पाइनल फ्लूइड (CSF) : मानव खोपड़ी की गहराई और रीढ़ की हड्डी के बीच से बहता है एक पारदर्शी और रहस्यमय द्रव्य है। यह द्रव्य मस्तिष्क

और मेरुदंड के लिए एक गतिशील कवच की तरह कार्य करता है, इन्हें जीवन की दैनिक हलचलों और झटकों से कोमलता से संरक्षित रखता है।

एक कुशन की भांति, यह द्रव्य, आघातों को सोख लेता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि शरीर की गति के दौरान मस्तिष्क सुरक्षित बना रहे।

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से CSF का विकास

- प्राचीन युग - दूसरी शताब्दी ईस्वी में ग्रीक चिकित्सक *गैलेन* ने सबसे पहले मस्तिष्क के चारों ओर बहने वाले इस जलसमान द्रव्य का उल्लेख किया।





- पुनर्जागरण काल - वेसालियस और लियोनार्डो दा विंची जैसे महान शल्य वैज्ञानिकों ने मस्तिष्क के वेंट्रिकल्स का अध्ययन कर इस विषय को आगे बढ़ाया।
- आधुनिक युग - 19वीं और 20वीं सदी में न्यूरोविज्ञान के क्षेत्र में शोधकर्ताओं ने CSF की संरचना और उसकी परिसंचरण प्रक्रिया को विस्तार से समझा।

आध्यात्मिक दृष्टिकोण में CSF का महत्व, आध्यात्मिक परंपराओं में CSF को भौतिक शरीर और सूक्ष्म आत्मिक चेतना के बीच एक सेतु माना जाता है। इसका स्पंदनशील प्रवाह जीवन की लय को दर्शाता है – जैसे हृदय की धड़कन, श्वास का उतार-चढ़ाव, और प्रकृति के चक्र। कुछ दर्शनों में विश्वास किया जाता है कि CSF का संतुलित और सहज प्रवाह ध्यान की गहराइयों तक पहुँचने और चेतना के उच्च स्तर तक जाने का मार्ग प्रशस्त करता है।

प्राचीन योगिक परंपराएँ कहती हैं कि कुण्डलिनी शक्ति मस्तिष्क और मेरुदंड की CSF नाड़ियों के माध्यम से ऊपर की ओर उठती है, जिससे आत्म-जागरण होता है।





न्यूरोलॉजिकल आत्मिक विकास (Neurological Spiritual Development)

- ❖ न्यूरल प्लास्टिसिटी (Neural Plasticity):
ध्यान अभ्यास मस्तिष्क की संरचना और कार्यप्रणाली में वास्तविक और मापनीय परिवर्तन ला सकता है।
- ❖ बदले हुए चेतनात्मक अनुभव (Altered States):
उन्नत साधकों के मस्तिष्क में ध्यान के गहरे चरणों के दौरान विशिष्ट न्यूरोलॉजिकल पैटर्न देखे गए हैं।
- ❖ रासायनिक परिवर्तन (Biochemical Changes):
आध्यात्मिक साधनाएँ CSF की रासायनिक संरचना और उसके प्रवाह में परिवर्तन ला सकती हैं।
- ❖ चेतना पर शोध (Consciousness Research):
नई वैज्ञानिक खोजें इस बात की गहराई से पड़ताल कर रही हैं कि दिव्य अनुभवों के पीछे जैविक कारण क्या हो सकते हैं।





"मृत्युंजय" - शिवाजी सावंत द्वारा रचित एक कालजयी मराठी कृति

"मृत्युंजय" एक ऐसी साहित्यिक रचना है जो महाभारत के सबसे जटिल और करुण पात्र कर्ण के जीवन को आत्मीयता से उकेरती है।

मुख्य विषयवस्तु: यह उपन्यास अस्तित्व के अर्थ की खोज को कर्ण के दृष्टिकोण से प्रस्तुत करता है। उसकी कठिनाइयाँ, उसके आंतरिक द्वंद्व, और उसके कर्तव्यनिष्ठ स्वभाव को इतने मानवीय ढंग से दर्शाया गया है कि पाठक कर्ण को एक नायक के रूप में महसूस करता है, जो अंत तक अपनी मर्यादा में जीता है।

कथन शैली: इस उपन्यास की रचना शैली अत्यंत अनूठी है – इसमें केवल कर्ण ही नहीं, बल्कि कुंती, वृशाली (कर्ण की पत्नी), श्रीकृष्ण और अन्य पात्रों की आत्मकथात्मक शैली में संवाद प्रस्तुत किए गए हैं। इस दृष्टिकोण से यह कथा बहुस्तरीय बन जाती है, जो कर्ण के जीवन के विविध पहलुओं और महाभारत की घटनाओं को गहराई से उजागर करती है।

महत्त्व: "मृत्युंजय" केवल कर्ण की आत्मकथा नहीं है, बल्कि यह मानव भावनाओं, नैतिकताओं और नियति के बीच होने वाले संघर्ष की गहन पड़ताल करती है।





यह कर्ण की निष्ठा, दुर्योधन के प्रति उसकी मित्रता, और अंततः उसके त्रासदीपूर्ण भाग्य को उजागर करती है - जो इसे एक समय से परे महान रचना बना देती है।

सम्मान और अनुवाद: इस उपन्यास को कई भाषाओं - हिंदी, अंग्रेज़ी, कन्नड़, मलयालम आदि - में अनुवादित किया गया है। इसे इसके साहित्यिक सौंदर्य, भावनात्मक गहराई और चरित्रों की सजीवता के लिए अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

"मृत्युंजय" एक ऐसा दर्पण है जिसमें हम अपने ही जीवन के प्रश्नों और संघर्षों को कर्ण की आँखों से देख सकते हैं। यह आत्मा की अमरता, कर्तव्य की तपस्या, और व्यक्ति की आत्म-यात्रा का अमर आख्यान है।





एस्ट्रल ट्रैवल्स और माँ अनुसूया माता

रायपुरे-सर ने बताया - "2020 में जब Covid-19 कि वजह से lockdown लग गया था, उस समय मैंने एस्ट्रल ट्रैवेलिंग का अभ्यास शुरू किया था। इस प्रक्रिया में मेरी एस्ट्रल बॉडी मेरे भौतिक शरीर से बाहर निकलकर अलग-अलग स्थानों की यात्रा करती थी। कई बार, मेरे गाइड्स मुझे विशेष स्थानों पर ले जाते थे।

3 मई 2020 को, मैंने एस्ट्रल ट्रैवल के दौरान माउंट कैलाश की यात्रा की। वहाँ मुझे भगवान शिव और मां पार्वती के चैतन्य रूप का अनुभव हुआ। उन्होंने मुझ पर एक गहन ऊर्जात्मक प्रक्रिया की, जिसमें मेरे कई चक्र और संवेदनाएं (senses) सक्रिय हो गईं। मुझे ऐसा लगा मानो वहाँ अनेक दिव्य आत्माएं भी मौजूद थीं।

4 मई 2020 को मेरी यात्रा एक स्टारशिप तक पहुँची, जो Arcturians की थी। वहाँ पहुँचते ही मेरी एथेरिक बॉडी में तीव्र वाइब्रेशन्स होने लगे और मुझे अत्याधिक भावनात्मक अनुभव हुआ। उस starship में एक विशाल खिड़की थी जिससे अंतरिक्ष और पृथ्वी दोनों के दृश्य स्पष्ट दिखते थे।





वहाँ Arcturians ने एक विशेष स्थान पर मुझे ले जाकर मेरे अन्दर कुछ ऊर्जात्मक प्रक्रियाएँ कीं।

इसके अगले दिन, मैं Orion स्टार सिस्टम की यात्रा पर गया। वहाँ एक अद्भुत ग्रह था जिसकी धरती हल्की grey जैसी लग रही थी। वहाँ मुझे कुछ झोपड़ीनुमा ढाँचे और लैबोरेटरी जैसी संरचनाएँ दिखाई दीं, लेकिन वहाँ कोई रह नहीं रहा था। बाद में वहाँ कुछ तारकीय प्राणी (Star Beings) भी दिखे - वे बहुत लंबे कद के थे. लेकिन वह बहुत मददगार और सौम्य स्वभाव के थे।

इन सभी में सबसे मेरी भावनात्मक और दिव्य यात्रा हुई थी मां अनुसूया माता के साथ। आप उन्हें **"अनुसूया माता पारडसिंगा वाली"** के नाम से जानते होंगे।

अनुसूया माता का परिचय:

मां सती अनुसूया माता का जन्म 5 मई 1926 को महाराष्ट्र के नागपुर जिले के पारडसिंगा गांव में हुआ था। उन्होंने अपना जीवन त्याग, सेवा और दिव्यता में बिताया। निरक्षर होने के बावजूद, वह वेदों, शास्त्रों और आध्यात्मिक अनुशासनों की गहन जानवती थीं। उन्होंने





पंच महाभूतों और अष्ट सिद्धियों में पूर्ण सिद्धि प्राप्त की थी। सांसारिक समस्याओं के समाधान के लिए सैकड़ों भक्त सदा उनके चारों ओर एकत्र रहते थे। वह उनकी समस्याओं को सहजता से सुलझा देती थीं।



वह भक्तों से एक रहस्यमयी स्थानीय भाषा में संवाद करती थीं, जो दिव्य संकेतों और प्रतीकों से परिपूर्ण होती थी। उदाहरण के लिए, अगर किसी को अपने मुकदमे के लिए एक अच्छे वकील रखने की सलाह देनी होती, तो वह कहतीं—

“एक अच्छे नारद को नियुक्त करो!” आप में से कई जानते हैं कि देवर्षि नारद क्या करते थे...!

यदि किसी महिला को कन्या संतान का वरदान मिलने वाला होता, तो वह कहतीं—**“घर जाओ, तुम्हारे आंगन में एक ‘इमली’ आएगी।”** और यदि पुत्र प्राप्ति का





संकेत देना होता, तो कहतीं—“**घर जाओ, तुम्हारे द्वार पर एक 'आम' आएगा...!**”

उनके शब्दों की यह रहस्यमयी भाषा एक पवित्र शिल्प की तरह थी—हर वाक्य जैसे एक दिव्य ताना-बाना, जिसमें नियति, देवत्व और भक्ति एक साथ बुनते थे।

समाज के उत्थान के लिए उन्होंने अस्पतालों, विद्यालयों की स्थापना की और शिक्षा के महत्व पर मार्गदर्शन दिया। 10 जनवरी 1997 को उन्होंने महासमाधि ली। उनकी भव्य प्रतिमा परडसिंगा में स्थित है, जहाँ आज भी भक्तों को दिव्य शांति की अनुभूति होती है।

सर ने बताया कि, “11 मई 2020 को मैंने एक और एस्ट्रल यात्रा की। इस बार भी मैं एक Arcturian स्पेसशिप पर गया। वहाँ मुझे पुनः मां अनुसूया माता के दर्शन हुए। उन्होंने मेरी आत्मिक चेतना का पूर्ण नियंत्रण लिया और मुझे एक लंबी यात्रा पर ले गईं - वहाँ मुझे एक डार्क स्पेस और फिर एक नई दुनिया का अनुभव हुआ।

वहाँ एक विशाल पोर्टल था, जो किसी एटॉमिक स्ट्रक्चर जैसा प्रतीत हो रहा था - उसमें रंग-बिरंगे कण परिक्रमा





कर रहे थे। माता ने मेरी एथेरिक बॉडी को उस पोर्टल से जोड़ दिया और मैं सीधे एक अद्भुत ब्रह्मांड में पहुँच गया। यह अनुभव लगभग सवा घंटे तक चला। यह दिव्य लोकों का अद्भुत अनुभव था, और इस परम आनंद की अनुभूति से मुझे आध्यात्मिक रूप से पूर्णता का भाव प्राप्त हुआ।

अंत में माता ने मुझसे पूछा - **"मैंने तुम्हें इतने दिव्य लोकों की यात्रा कराई, इसके बदले में तुम मुझे क्या दोगे?"** पहले मुझे लगा शायद वे उनके मंदिर को डोनेशन की बात कर रही हैं, लेकिन फिर उन्होंने स्पष्ट किया कि वे मुझसे कुछ भौतिक नहीं चाहती।

उन्होंने कहा - **"बस तुम बच्चों को आध्यात्मिक बातें सिखाते रहो, जो स्पिरिचुअल क्लासेज़ तुम लेते हो, उन्हें बंद मत करना।"**

यह मेरे जीवन का एक अद्वितीय, दिव्य, और अत्यंत भावनात्मक अनुभव था।"





संत पाटीवाली आई का आगमन - परडसिंगा माता सती अनसूया की प्रमुख शिष्या



4 अप्रैल 2025 की
शाम लगभग 5:40
बजे, जब संत
पाटीवाली आई सभागार
में प्रवेश कर रही थीं।
लगा मानो समय ठहर
गया हो।

मन एक गहरे भाव से
भर उठा, शब्द गुम हो
गए, और आँखों से
अनायास आँसू बहने
लगे – ये आँसू न दुख
के थे, न खुशी के,

बल्कि आत्मा की गहराइयों से उपजी पहचान और समर्पण
के थे। जब मैंने उनके चरण स्पर्श किए, तो जैसे एक
शांति की लहर भीतर उतर आई... जैसे कोई बच्चा माँ की
गोद में लौट आया हो।





अगली सुबह, जब मैं निःशब्द बैठकर नाश्ता कर रहा था, तभी ब्रह्मांड ने एक चमत्कारी क्षण मेरे लिए रचा। लीना दीदी और सर, पाटीवाली आई के साथ हमारे टेबल के पास आकर बैठ गए। उसी दिव्य संयोग में सर ने मेरा पाटीवाली आई से परिचय कराया।

उन्होंने मेरी ओर देखा... और जो शब्द उन्होंने कहे, वे मेरे अस्तित्व की गहराइयों तक उतर गए। उनका मार्गदर्शन जीवन भर मेरे अंतःकरण में अंकित रहेगा। उनके शब्द मेरे लिए प्रेरणा का स्रोत बन गए हैं।

मैं उन्हें हृदय में बसाकर, पूरी निष्ठा और श्रद्धा के साथ उनके अनुसार जीवन जीने का प्रयास करूंगा।





भगवान विष्णु

भगवान विष्णु ब्रह्मांड के रक्षक और पालनहार हैं। उनका मुख्य कार्य ब्रह्मांड में संतुलन बनाए रखना है ताकि जीवन और व्यवस्था बनी रहे। जब भी संसार पर बुराई, अराजकता या असंतुलन का संकट आता है, तो विष्णु अवतार लेकर हस्तक्षेप करते हैं। उनके दस प्रमुख अवतारों को दशावतार कहा जाता है, जो अलग-अलग युगों में धरती पर धर्म की पुनर्स्थापना के लिए प्रकट होते हैं।

हर अवतार में वे शक्तिशाली शत्रुओं का सामना करते हैं और कभी-कभी अपने प्राणों को भी जोखिम में डाल देते हैं। भगवान विष्णु को अक्सर उनकी परम साथी, लक्ष्मी माता, जो धन और समृद्धि की देवी हैं, के साथ दर्शाया जाता है। दोनों मिलकर संरक्षण और समृद्धि का सुंदर संतुलन प्रदर्शित करते हैं।





विष्णु जी की आकृति में चार भुजाएँ होती हैं, जिनमें वे चार प्रतीकात्मक वस्तुएँ धारण करते हैं, जिनका अर्थ इस प्रकार है:

1. **शंख** - यह सृष्टि के प्रारंभिक ध्वनि 'ॐ' का प्रतीक है और अच्छाई की बुराई पर विजय का संदेश देता है। शंख की ध्वनि नकारात्मकता को दूर भगाती है और सकारात्मक ऊर्जा फैलाती है।





2. **सुदर्शन चक्र** - यह घूमने वाला चक्र समय के चक्र, ब्रह्मांड की अनंतता और दिव्य न्याय की शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है। यह विष्णु की बाधाओं को दूर करने और ब्रह्मांडीय व्यवस्था बनाए रखने की क्षमता को दर्शाता है।
3. **गदा** - यह शक्ति, अधिकार और चुनौतियों को पार करने की क्षमता का प्रतीक है। यह हमें अनुशासन और नैतिकता का पालन करने की याद दिलाती है।
4. **पद्म** - कमल का फूल पवित्रता, आध्यात्मिक जागरूकता और मोक्ष का प्रतीक है। कीचड़ से उगकर भी कमल का फूल स्वच्छ रहता है, जो आध्यात्मिक विकास और मुक्ति की संभावनाओं को दर्शाता है।





दस महाविद्याएं :

महाविद्याएं आदिपराशक्ति के दस रूप हैं, जो देवी की विभिन्न शक्तियों और आध्यात्मिक ज्ञान का प्रतिनिधित्व करती हैं। इन्हें तांत्रिक परंपराओं में पूजनीय माना जाता है और ये साधकों को मोक्ष के पथ पर मार्गदर्शन प्रदान करती हैं।

1. **काली** - **समय**, परिवर्तन और विनाश की देवी। वह अज्ञानता के अंत और जीवन-मृत्यु के चक्र का प्रतिनिधित्व करती हैं। काली का स्वरूप हमें सिखाता है कि पुराने अंधकार को समाप्त कर नई शुरुआत कैसे होती है।
2. **तारा** - **उद्धार** की देवी, जो भक्ति मार्ग पर चलने वालों को जीवन सागर से पार लगाती हैं। वह करुणा और परम ज्ञान की प्रतीक हैं। उनकी उपासना जीवन की कठिन राहों में मार्गदर्शक बनती है।
3. **त्रिपुरसुंदरी (षोडशी)** - **सौंदर्य**, प्रेम और आध्यात्मिक पूर्णता की देवी। वे भौतिक और आध्यात्मिक लोकों के संतुलन का साकार रूप हैं। उनका स्वरूप अद्वितीय दिव्य सौंदर्य और चैतन्य का संगम है।





4. **भुवनेश्वरी** - **सम्पूर्ण** ब्रह्मांड की अधिष्ठात्री देवी, जो अनंत आकाश और सृजन की शक्ति का प्रतिनिधित्व करती हैं। वे शून्यता में से सृष्टि की उत्पत्ति की दिव्य प्रेरणा हैं।
5. **भैरवी** - **तीव्र** और उग्र शक्ति की देवी, जो विनाश और परिवर्तन का रूप हैं। वे भय और अज्ञान को नष्ट कर आत्मबल और जागरूकता की राह प्रशस्त करती हैं।
6. **छिन्नमस्ता** - **आत्मबलिदान** और चेतना की देवी, जिन्होंने स्वयं अपना सिर काट कर परिवर्तन और सृजन-विनाश के संतुलन को दर्शाया। उनका रूप गूढ़ लेकिन अत्यंत शक्तिशाली है।
7. **धूमावती** - **एकाकी** और विरक्त स्वरूप वाली विधवा देवी। वे अस्तित्व के अंधकारमय पक्ष, विरक्ति और अंतहीन शून्यता का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो जीवन के गहरे सत्य से साक्षात्कार कराती हैं।
8. **बगलामुखी** - **शक्ति** और नियंत्रण की देवी, जो शत्रुओं को स्तब्ध करने और भक्तों की रक्षा करने की अलौकिक सामर्थ्य रखती हैं। वे वाणी और विचारों पर नियंत्रण की देवी भी मानी जाती हैं।





9. **मातंगी** - **आंतरिक** ज्ञान, संगीत और सृजनात्मकता की देवी। वे वाणी, कला, और शुद्ध बुद्धि की शक्ति का साकार स्वरूप हैं।
10. **कमला** - **समृद्धि**, धन और प्रजनन की देवी। उन्हें लक्ष्मी का एक रूप माना जाता है और वे भौतिक और आध्यात्मिक संपन्नता का संतुलन दर्शाती हैं।





मोक्ष की चार अवस्थाएँ (FOUR STAGES OF LIBERATION)

1. **सालोक्य** - ईश्वर के लोक में वास करने की स्थिति। साधक को ईश्वर के समीप रहने का सौभाग्य प्राप्त होता है, जहाँ वह दिव्यता को प्रत्यक्ष अनुभव करता है।
2. **सामीप्य** - ईश्वर के निकट रहने की अवस्था। इस स्तर पर आत्मा और ईश्वर के बीच की दूरी मिटने लगती है और साधक का हृदय ईश्वर की करुणा और कृपा से सराबोर हो जाता है।
3. **सारूप्य** - ईश्वर के समान रूप धारण करने की अवस्था। साधक की चेतना ईश्वर की चेतना से एकरूप हो जाती है; वह ईश्वर के गुणों को स्वयं में धारण कर लेता है।
4. **सायुज्य** - ईश्वर में पूर्ण विलय की अंतिम अवस्था। यह मोक्ष का चरम शिखर है, जहाँ आत्मा और परमात्मा के बीच कोई भेद नहीं रहता - केवल पूर्ण एकत्व और परम शांति।





भक्ति—निष्ठा और आत्मसमर्पण —आध्यात्मिक उपलब्धि में अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

जिस प्रकार किसी पात्र को शुद्ध रखना आवश्यक होता है ताकि उसमें भरे अमृत का स्वाद और पवित्रता बनी रहे, वैसे ही हमारा शरीर, मन और आत्मा भी शुद्ध होने चाहिए, ताकि हम दिव्य कृपा को पूर्ण रूप से प्राप्त और अनुभव कर सकें। यदि कोई बर्तन अशुद्ध हो, तो उसमें रखा अमृत, अपनी प्राकृतिक मधुरता के बावजूद अशुद्ध हो जाता है। इसी प्रकार, जब हमारा अंतःकरण नकारात्मकता, व्यर्थ की चिंताओं या अनसुलझे भावनात्मक बोझ से घिरा रहता है, तब जीवन की गहन बुद्धि और दिव्य आशीर्वाद को पूर्ण रूप से आत्मसात करना कठिन हो जाता है।

स्वयं को निर्मल करने के लिए जागरूक प्रयास आवश्यक हैं—ध्यान, आत्म-चिंतन, प्रार्थना और सेवा भाव से हम अपने भावनात्मक और मानसिक अवरोधों को दूर कर सकते हैं। जब हम अपने भीतर पवित्रता का पोषण करते हैं, तब दिव्य ज्ञान, प्रेम और आनंद का अमृत स्वतः ही प्रवाहित होने लगता है, जिससे हमारा जीवन समृद्ध





होता है और हमारी आत्मा अनोखे सौंदर्य से ऊर्ध्वगामी होती है।

यह एक सतत प्रक्रिया है, जहां साधना और सद्भावना से हम अपने अस्तित्व को दिव्यता के लिए तैयार करते हैं। जैसे कमल की पंखुड़ियाँ धीरे-धीरे प्रस्फुटित होती हैं और सूर्य की रश्मियों को आत्मसात करती हैं, वैसे ही हमारा हृदय भी सतत शुद्धि से उज्ज्वल होता है और परमात्मा की कृपा को सहज ही अनुभव करता है।





वैशाख पूर्णिमा पर बुद्ध का निर्वाण



भगवान बुद्ध की यात्रा में **निरंजना नदी** पार करने का प्रयास एक महत्वपूर्ण मोड़ था, जो उन्हें आत्मज्ञान की ओर ले गया।

सिद्धार्थ गौतम (बुद्ध) ने वर्षों तक अत्याधिक तपस्या और कठोर साधना की, जिससे उनका शरीर दुर्बल और क्षीण हो गया। बिहार की वर्तमान लीलजा नदी (प्राचीन निरंजना नदी) के तट पर वह कठोर आत्मसंयम में लीन थे, परंतु अंततः उन्होंने महसूस किया कि यह मार्ग उन्हें उस परम सत्य की ओर नहीं ले जा रहा था, जिसे वे खोज रहे थे।





एक दिन, जब वे नदी पार करने लगे, तो उनकी देह इतनी दुर्बल थी कि वे चलने में असमर्थ हो गए। नदी के बीच पहुँचते ही उनका शरीर इतना कमजोर हो गया कि वे आगे कदम बढ़ाने में असमर्थ हो गए और एक शाखा का सहारा लेने लगे।

उसी क्षण, जब वे अत्याधिक दुर्बलता में थे, उन्हें एक गहन बोध हुआ—परम ज्ञान और आत्मशांति अति त्याग या अति भोग से प्राप्त नहीं हो सकते, बल्कि जीवन में **मध्यम मार्ग** अपनाने से ही सत्य की प्राप्ति संभव है।

इस अद्भुत अंतर्दृष्टि ने उन्हें पुनः बल प्रदान किया, और वे नदी पार करने में सफल हुए। कुछ समय बाद, एक गाँव की बालिका **सुजाता** ने उन्हें दूध और खीर का पात्र भेंट किया, जिससे उनके शरीर को पोषण मिला और उन्होंने अपनी चेतना पुनः जागृत की। इस नवप्राप्त ऊर्जा और आत्मबल के साथ, वे **बोधि वृक्ष** के नीचे ध्यानस्थ हुए और संकल्प किया कि जब तक आत्मज्ञान प्राप्त नहीं होगा, वे उठेंगे नहीं। इसी स्थान पर उन्होंने निर्वाण प्राप्त किया और **बुद्ध** बने।





यह कहानी हमें संतुलन, धैर्य और आत्मसमर्पण का महत्व सिखाती है—आत्मबोध की यात्रा में न तो कठोरता और न ही विलासिता, बल्कि सम्यक मार्ग ही हमारे अंतःकरण को दिव्यता तक पहुँचाता है।

बुद्ध का जीवन हमें सिखाता है कि आत्मज्ञान की यात्रा भीतर की शुद्धता और संतुलित साधना से ही संभव है।





गुरु नानक देव जी और "तेरा" की कहानी

जब गुरु नानक देव जी छोटे थे, उनके पिता ने उन्हें पास की एक दुकान में काम करने के लिए भेजा। उनकी



जिम्मेदारी थी ग्राहकों के लिए माल तौलना और हिसाब रखना—एक छोटे व्यापारी की तरह। गुरु नानक जी जब सामान तौलते, तो गिनती करते: "एक, दो, तीन... दस, ग्यारह, बारह..." लेकिन जैसे ही वह तेरह पर पहुंचे, उन्होंने कहा "तेरा", जो पंजाबी भाषा में तेरह (13) का अर्थ भी रखता है और "तेरा" यानी "तेरा प्रभु" (सब कुछ ईश्वर का है) का भाव भी व्यक्त करता है।





जैसे ही उन्होंने **"तेरा"** कहा, वह ईश्वरीय प्रेम में इतना डूब गए कि उन्हें यह अहसास हुआ—**"सब कुछ परमात्मा का है, कुछ भी मेरा नहीं है।"** इस दिव्य अनुभूति में वह इतना तल्लीन हो गए कि आगे गिनने के बजाय केवल **"तेरा, तेरा, तेरा..."** ही दोहराते रहे।

वे दुकान, ग्राहकों और व्यापार को भूल गए—उनकी चेतना केवल परमात्मा की भक्ति में रम गई। लोगों ने देखा कि युवा नानक वहाँ खड़े हैं, उनकी आँखें दिव्य आनंद से चमक रही हैं, और वे मंत्रमुग्ध होकर **"तेरा"** का उच्चारण कर रहे हैं। जब उनके पिता को इस बारे में बताया गया, तो वे चिंतित हो गए कि नानक काम करने के बजाय कुछ और कर रहे हैं।

कुछ वर्षों बाद, जब गुरु नानक देव जी को बेईन नदी में दिव्य ज्ञान प्राप्त हुआ, और वे तीन दिन बाद लौटे, तो उन्होंने सबसे पहला जो सत्य साझा किया, वह था **"एक आँकार"—परम सत्य का संदेश।** उन्होंने इस अनुभव को एक दिव्य रचना में प्रस्तुत किया, जिसे आज मूल मंत्र (Mool Mantar) कहा जाता है, और जो सिख धर्म का मूल सिद्धांत है। उन्होंने उच्चारित किया:





**"इक ओंकार, सत नाम, करता पुरख, निर्भउ, निरवैर,
अकाल मूरत, अजूनी, सैभं, गुर प्रसाद।"**

- **इक ओंकार:** ईश्वर एक है।
- **सत नाम:** उसका नाम सत्य है।
- **करता पुरख:** वह सृष्टि का रचयिता है।
- **निर्भउ:** वह निडर है।
- **निरवैर:** वह किसी से द्वेष नहीं करता।
- **अकाल मूरत:** वह अनादि और शाश्वत है।
- **अजूनी:** वह जन्म और मृत्यु से परे है।
- **सैभं:** वह स्वयंभू है।
- **गुर प्रसाद:** उसे गुरु की कृपा से जाना जा सकता है।

यह घटना 1499 के आसपास हुई थी, जब गुरु नानक देव जी ने परम सत्य का अनुभव किया। उनके इस संदेश ने ईश्वर की एकता और उन दिव्य गुणों को उजागर किया, जो मानव सीमाओं से परे हैं।

गुरु नानक देव जी के सभी उत्तराधिकारी गुरु भी भक्ति और गुरु के प्रति आत्मसमर्पण के महत्व पर जोर देते रहे। उन्होंने परमात्मा और गुरु की महिमा में कई सुंदर शब्द (भजन) रचे, जो आज भी भक्ति मार्ग में लोगों को आनंद और प्रेरणा प्रदान करते हैं ।





"सिंमर सिंमर, सिंमर नाम जीवा, तन मन होए निहाला --

-----यह शब्द पवित्र गुरबाणी के स्रोत से निकला एक दिव्य अमृत है, जिसे **पंचम गुरु श्री गुरु अर्जुन देव जी** ने रचा था। जब यह शब्द सत्संग में गूँजा, तो संपूर्ण वातावरण श्रद्धा और भक्ति से भर गया।

सभी साधक इस पावन शब्द में लीन होकर उसका गान करने लगे। एक अद्भुत और अलौकिक अनुग्रह की लहर उन पर छा गई। किसी की आँखों से खुशी के आँसू बह रहे थे, तो किसी के होठों पर आत्मिक आनंद से भरी मुस्कान खिली हुई थी।

इस संसार के दुख, चिंता और व्यथा उस क्षण जैसे कहीं खो गए – और उसके स्थान पर मन में एक अवर्णनीय शांति, संतोष और समर्पण का भाव उतर आया।

इस शब्द की पंक्तियाँ ईश्वर के नाम का बार-बार स्मरण करने और उसका जाप करने की महिमा का वर्णन करती हैं। यह बताता है कि जब हम अपने मन, वचन और कर्म से परमात्मा के नाम में लीन हो जाते हैं, तो शरीर और मन दोनों को शांति और आनंद की अनुभूति होती है।





गुरुओं की करुणा और कृपा से हमें एक खास आत्मिक ऊर्जा मिलती है। जब हम उनके चरणों में झुकते हैं, तो ऐसा लगता है जैसे हम अमृत पी रहे हों – ऐसा अमृत जो हमारे शरीर, मन और आत्मा तीनों को गहराई से शक्ति और शांति देता है। इस शब्द को सुनने के लिए:

<https://youtu.be/aTX74VhK8u8?si=Eis16lnzMgblRyx>

शब्द	आध्यात्मिक अर्थ
सिंमर सिंमर, सिंमर नाम जीवा, तन मन होए निहाला	बार-बार नाम का स्मरण करने से आत्मा जीवित होती है। इससे तन और मन दोनों में गहराई से आनंद और शांति की अनुभूति होती है। यह शब्द आत्मा को परम स्रोत से जोड़ने वाला है।
चरण कमल तेरे धोए धोए पीवां, मेरे सतगुरु दीन दयाला	गुरु के चरणों को धोकर पीने की बात प्रतीकात्मक है, जो दर्शाती है कि भक्त गुरु की शिक्षा को अमृत मानकर आत्मसात करता है। यह पूर्ण समर्पण और करुणा की अनुभूति है।
पारब्रह्म परमेश्वर सतगुरु, आपे कर निहाला	गुरु ही परमेश्वर का प्रत्यक्ष रूप हैं। वे अपने करुणामय स्वरूप से स्वयं भक्त को कृपा प्रदान करते हैं और उसे आनंदित करते हैं।





शब्द	आध्यात्मिक अर्थ
चरण धूल तेरी सेवक मांगे, तेरे दर्शन को बलिहारा	सेवक गुरु के चरणों की धूल को मांगता है - यह नम्रता और पूर्ण समर्पण का प्रतीक है। वह गुरु के दर्शन के लिए अपना सब कुछ अर्पण करने को तैयार है।
मेरे राम राये, ज्यों राखे त्यों रहिये	यह पंक्ति पूर्ण समर्पण की भावना को दर्शाती है। जैसे ईश्वर रखे, उसी में सुख मानकर रहना ही भक्ति का सार है।
दुख पावे ता नाम जपावे, सुख तेरा देता लहिये	जब दुःख आए तो भी ईश्वर के नाम का जाप करते रहें, क्योंकि सच्चा सुख और समाधान उसी से प्राप्त होता है।
मुक्त भुक्त जुक्त तेरी सेवा, जिसे तू आप करावे	सेवा के माध्यम से ही सच्चा मोक्ष और आनंद मिलता है। यह सेवा उन्हीं को मिलती है जिन्हें स्वयं प्रभु प्रेरणा देते हैं।
तहां बैकुंठ जहां कीर्तन तेरा, तू आपे श्रद्धा लावे	जहां प्रभु का कीर्तन होता है, वह स्थान बैकुंठ के समान हो जाता है। प्रभु स्वयं ही भक्तों के हृदय में श्रद्धा उत्पन्न करते हैं।
कुर्बान जाऊं उस बेला सुहावे, तूं मने द्वारे आवा	जब प्रभु कृपा करके हमारे जीवन में आते हैं, वह क्षण सबसे पावन होता है। भक्त उस क्षण के लिए अपना सर्वस्व अर्पित करने को तैयार होता है।





शब्द	आध्यात्मिक अर्थ
नानक को प्रभु भए कृपाला, सतगुरु पूरा पाया	यह अंतिम पंक्ति बताती है कि नानक जी को प्रभु की असीम कृपा प्राप्त हुई और उन्हें पूर्ण सतगुरु का सान्निध्य मिला - यही जीवन का परम लक्ष्य है।

सच्चा 'सिमरन' केवल शब्दों का उच्चारण नहीं, बल्कि आत्मा का परमात्मा से जुड़ाव है - जिससे हमारा चित्त शुद्ध होता है और हम ईश्वर जैसे गुणों को स्वयं में विकसित करने लगते हैं।





सालोक्य मुक्ति : वैकुण्ठ जाना

महाराष्ट्र के संत ज्ञानेश्वर ने कहा था, "ईश्वर के द्वार पर केवल एक क्षण खड़े रहने से भी चारों प्रकार की मुक्ति मिल सकती है।"

देवाचिये द्वारीं उभा क्षणभरी ।
तेणें मुक्ति चारी साधिलिया ॥ १ ॥

हरि मुखें ह्यणा हरि मुखें ह्यणा ।
पुण्याची गणना कोण करीं ॥ २ ॥

असोनि संसारीं जिव्हे वेगु करीं ।
वेदशास्त्र उभारी बाह्या सदा ॥ ३ ॥

ज्ञानदेवो ह्यणे व्यासाचिये खुणे ।
द्वारकेचे राणे पांडवां घरीं ॥ ४ ॥

इसका अर्थ है कि ईश्वर के द्वार पर एक पल की भी उपस्थिति आत्मा को सभी प्रकार की मुक्ति - सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य और सायुज्य - प्रदान कर सकती है। सत्र के दौरान इसी विचार को समर्थन देने वाला एक मराठी भजन प्रस्तुत किया गया, जिसकी हिंदी में पंक्तियाँ बाईं ओर दी गई हैं।





वैकुण्ठ - यह स्थान स्वर्णिम दीवारों से घिरा हुआ है और इसके भव्य द्वारों की रक्षा जय और विजय जैसे दिव्य द्वारपाल करते हैं। इन द्वारों से दिव्यता झलकती है और जब इन्हें पार किया जाता है तो आत्मा एक ऐसे लोक में प्रवेश करती है जो पृथ्वी के किसी भी सौंदर्य से कहीं अधिक मोहक होता है - वहाँ मनोरम उपवन हैं, पवित्र नदियाँ बहती हैं, रत्नों से सजे पथ हैं, और चारों ओर अमरता का दिव्य वातावरण व्याप्त है।

विष्णु लोक का प्रकाश सूर्य या चंद्रमा से नहीं आता, बल्कि स्वयं भगवान श्री विष्णु की दिव्य आभा से उत्पन्न होता है। वहाँ कल्पवृक्ष जैसे दिव्य वृक्ष हैं, जो साधक की





प्रत्येक इच्छा पूर्ण करते हैं। फूल वहाँ कभी मुरझाते नहीं, और सदैव खिले रहते हैं। अमृत की नदियाँ बहती हैं, जिनके किनारे वसंत ऋतु जैसे वन फैले हैं जहाँ कोई दुख नहीं होता।

हंस (दिव्य राजहंस), मोर और अन्य पवित्र पक्षी श्रीहरि की महिमा में मधुर गीत गाते हैं। विष्णु लोक के हृदय में क्षीर सागर स्थित है , उसके मध्य में भगवान श्री विष्णु शेषनाग पर विराजमान हैं। उनका चेहरा शांत और सौम्य है, चार भुजाओं में शंख, चक्र, गदा और कमल धारण



किए हुए हैं। उनके समीप माँ लक्ष्मी विराजती हैं, जो करुणा और समृद्धि की देवी हैं।





वैकुण्ठ की यात्रा हेतु ध्यान प्रक्रिया -

इस सत्र में "पिलर्स ऑफ लाइट" (प्रकाश स्तंभ ध्यान) का प्रयोग किया गया, जिसके माध्यम से साधकों ने भगवान शिव, भगवान विष्णु, भगवान बुद्ध और प्रभु यीशु के आशीर्वाद से वैकुण्ठ की ओर आध्यात्मिक यात्रा की। इस यात्रा में साधकों ने "मेरकबा" - एक दिव्य प्रकाश वाहन - का उपयोग किया। मेरकबा एक ऊर्जात्मक संरचना है जो आत्मा को उच्चतर लोकों की यात्रा में सक्षम बनाती है। यह ध्यान केवल कल्पना नहीं, बल्कि आत्मा की अनुभूति और भगवान की कृपा से साक्षात् यात्रा थी।





बालक दिवाकर के जन्म का रहस्य

पहली बार, श्री दिवाकर सर ने अपने जीवन के एक गहरे और रहस्यमय अध्याय को साझा किया—अपने जन्म की कहानी, जो दिव्य संकेतों और आध्यात्मिक प्रतीकों से ओतप्रोत थी। उनका जन्म 1965 में महाराष्ट्र के शांत छोटे से गाँव महादवाड़ी में हुआ था। उनके माता-पिता साधारण किसान थे, जो अपनी ज़मीन से गहराई से जुड़े हुए थे। उनका घर सादगी और हँसी से गूँजता था। पाँच भाई-बहनों—सुधाकर, धनुर्धर, श्रीकृष्ण, दिवाकर और कमल—में से हर एक का परिवार में अपना अनूठा स्थान था।

श्रीकृष्ण का जन्म जीस वर्ष हुआ था उस वर्ष रायपुरे परिवार के लिए अपार समृद्धि आई थी। फसल शानदार हुई थी, और जीवन में हर चीज़ सहजता से घटित हो रही थी। उनकी माँ, जो अत्याधिक संवेदनशील थीं, मानती थीं कि यह समृद्धि श्रीकृष्ण के जन्म के कारण आई थी। लेकिन नियति ने एक अलग ही राह चुनी। दुर्भाग्य से, वह बालक पाँच महीनों के भीतर ही इस दुनिया को छोड़ गया, और उनके जाने से घर में शोक और अनुत्तरित प्रश्नों की एक लहर दौड़ गई। हालाँकि उनका जीवन बहुत छोटा था, उनकी माँ के दिल में उनका स्थान हमेशा बना रहा।





कई वर्षों बाद, दिवाकर सर ने अपनी माँ की एक अनमोल स्मृति को याद किया—एक ऐसा क्षण जो हमेशा उनके हृदय में बसा रहा। उनकी माँ ने उनसे कहा, "जब तुम पैदा हुए और मैं घर के प्रसव कक्ष में थी, तब सुबह का समय था—लगभग 5 बजे। उस पवित्र निस्तब्धता में, मैंने एक दिव्य स्वरूप को अपने कमरे के बाहर खड़ा देखा। उनका रंग गहरा नीला था, वे तेजस्वी और अलौकिक प्रतीत हो रहे थे। मैं समझ गई कि यह कोई ईश्वरीय शक्ति थी। लेकिन मैं क्रोधित थी... मैंने रोते हुए कहा, 'मुझे तुमसे बात नहीं करनी! तुम्हें देखना नहीं चाहती! तुमने मेरे श्रीकृष्ण को मुझसे छीन लिया।' उस दिव्य शक्ति ने शांति पूर्वक करुणा से उत्तर दिया, 'हाँ, मैंने श्रीकृष्ण को वापस ले लिया। लेकिन मैं फिर आया हूँ... और तुम्हें उनके स्थान पर एक अन्य बालक दिया है। उसे स्वीकार कर, प्रसन्न रहो।" वह बालक कोई और नहीं, बल्कि दिवाकर (हमारे रायपुरे सर) थे।

उनके जन्म के कई महीनों बाद भी उनकी माँ गहरे दुःख में डूबी रही। उनकी सेहत लगातार गिरती जा रही थी। चिंतित परिजन ने सुझाव दिया कि वे एक पूजनीय संत के पास जाएँ, जो उनके गाँव से लगभग 35 किलोमीटर दूर रहते थे। वहाँ पहुँचने पर, संत ने दिवाकर सर की माँ से रहस्यमयी शब्दों में कहा, "जो चला गया वह धनलक्ष्मी का प्रतीक था, और जो अब जन्मा है, वह विद्या लक्ष्मी का आशीर्वाद है।"





इन शब्दों ने उनकी माँ को कुछ हद तक सांत्वना दी, और उनका दुःख थोड़ा हल्का हुआ।

दिवाकर के लिए जीवन कठिन चुनौतियों से भरा रहा। समृद्ध परिवार जल्द ही कठिनाइयों में घिर गया। आर्थिक संकटों ने उन्हें अस्थायी रूप से स्कूल छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया। फिर भाग्य ने एक मोड़ लिया, और कुछ महीनों बाद वे अपनी शिक्षा जारी रखने में सफल रहे। परिवार ने अंततः चूरचूरा गाँव में बसने का निर्णय लिया, लेकिन संघर्ष उनके साथ चलता रहा।

बचपन में, दिवाकर को एक औसत छात्र माना जाता था। एक बार, दो अंकों की संख्या का गुणन सीखते समय वे पूरी तरह से उलझ गए। शिक्षक ने कई बार समझाने की कोशिश की, लेकिन गणित की यह गुत्थी उनके लिए अबूझ बनी रही। धीरे-धीरे, निराशा दोनों तरफ बढ़ने लगी—शिक्षक की सहनशीलता कम होती जा रही थी, और दिवाकर का आत्मविश्वास डगमगाने लगा।

फिर, एक शाम जब वे अकेले बैठे थे, कुछ अनोखा हुआ। अचानक, उनके दिमाग में एक चिंगारी कौंधी। जो बात अब तक उन्हें समझ नहीं आ रही थी, वह पल भर में स्पष्ट हो गई। अगले दिन, उन्होंने आत्मविश्वास से कक्षा में सवाल हल कर लिया। आश्चर्यचकित शिक्षक ने पूछा, **"तुमने इसे रातभर**





में कैसे सीख लिया?" दिवाकर बस मुस्करा दिए। भीतर जल उठी वह चिंगारी कभी नहीं बुझी।

उस क्षण के बाद, उनकी शैक्षणिक यात्रा ने उड़ान भरी। उनके गाँव के स्कूल में केवल तीसरी कक्षा तक की ही पढ़ाई होती थी, आगे की शिक्षा जारी रखने के लिए उन्हें प्रतिदिन लगभग 10 किलोमीटर पैदल चलना पड़ता था। लेकिन इन कठिनाइयों ने उनके संकल्प को डिगाने के बजाय और मजबूत कर दिया। उन्होंने अपनी पढ़ाई में उत्कृष्टता हासिल की और चौथी, सातवीं और दसवीं बोर्ड परीक्षाओं में जिले में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया।

आखिरकार, वह अपने जिले के पहले छात्र बने जिन्होंने एसएससी मेरिट सूची में अपना नाम दर्ज कराया। उनके भीतर जुनून, दृढ़ता और प्रतिभा की लौ जलती रही, जिसने उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने शासकीय अभियांत्रिकी महाविद्यालय, अमरावती से सिविल इंजीनियरिंग की पढ़ाई की और फिर प्रतिष्ठित आईआईटी मद्रास से एम.टेक. की डिग्री प्राप्त की।

आज, रायपुरे सर भारत सरकार के जल संसाधन मंत्रालय में एक वरिष्ठ अधिकारी के रूप में देश की सेवा कर रहे हैं—संघर्ष, कृपा और शायद दिव्य योजना का एक जीवंत उदाहरण।





रायपुरे सर का प्रथम समाधि अनुभव

जब दिवाकर लगभग 8 वर्ष के थे, उनका परिवार चूरचूरा नामक एक निकटवर्ती गाँव में बस गया। लेकिन कठिनाइयों ने उनका पीछा नहीं छोड़ा। परिवार का जीवन संघर्षों से घिरा रहा, और रोज़मर्रा की ज़रूरतें पूरी करना भी चुनौतीपूर्ण बन गया।

कई बार, दिवाकर को परिवार की गाय-भैंसों की देखभाल का जिम्मा संभालना पड़ता था। उन्हें मवेशियों को जंगल में चराने ले जाना होता, और फिर शाम को वापस लाना पड़ता। कभी-कभी तेज़ धूप में तपते हुए या बारिश में भीगते हुए, वह अपने कर्तव्य को पूरा करने के लिए डटे रहते। इन प्रारंभिक संघर्षों ने उनके भीतर गहरी ज़िम्मेदारी और अडिग संकल्प की भावना पैदा की, जो आगे चलकर उनके व्यक्तित्व की आधारशिला बनी।





एक दिन, वह मवेशियों को गाँव के तालाब के पास के जंगल में चराने ले गए। लेकिन अचानक वे उनकी नज़रों से ओझल हो गए। उन्होंने इधर-उधर बहुत तलाश की, लेकिन मवेशी कहीं नहीं मिले। स्थिति कठिन हो चली थी। यदि मवेशी किसी किसान के खेत में घुस जाते, तो विवाद होना तय था। हताशा और आत्मग्लानि ने उन्हें घेर लिया।



तालाब (बाँध) के किनारे चलते हुए, वह गहरे जंगल में प्रवेश कर गए। एक वृक्ष के नीचे बैठकर उन्होंने घंटों ध्यान किया। उन्होंने अपने जीवन और मानवीय कठिनाइयों पर गहन विचार किया। धीरे-

धीरे, उनका मन हल्का और स्पष्ट होता चला गया। उनके भीतर एक अपूर्व आनंद और उल्लास की अनुभूति हुई। सारा दुख विलीन हो गया। उन्हें एक अवर्णनीय आनंद और असीम शांति का अनुभव हुआ। समय का बोध समाप्त हो गया—वह भावनाओं से परे की अवस्था थी। यह उनकी पहली समाधि का अनुभव था। तब उनकी आयु 12 वर्ष थी।





आध्यात्मिक मार्ग में आने वाली बाधाएँ:

आध्यात्मिक पथ पर चलते समय, आपको कई प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। लेकिन यह कठिनाइयाँ आपके संकल्प को और मजबूत करने का अवसर भी होती हैं। ऐसे अवरोध मुख्य रूप से दो प्रकार के होते हैं:

- **आंतरिक** - अवचेतन मन से उत्पन्न होने वाले संदेह, भय और इच्छाएँ।
- **बाहरी** - सामाजिक, पारिवारिक या परिस्थितिजन्य बाधाएँ, जैसी कि संत ज्ञानेश्वर ने अपने जीवन में झेली थीं।





संत ज्ञानेश्वर: संघर्षों से तपकर महानता को प्राप्त करने की यात्रा



संत ज्ञानेश्वर, जिन्हें दयानेश्वर भी कहा जाता है, 13वीं शताब्दी के एक महान संत, कवि और दार्शनिक थे। वह अपने गहन आध्यात्मिक ज्ञान और मराठी साहित्य में अमूल्य योगदान के लिए जाने जाते हैं।

मात्र 21 वर्ष की आयु में इस संसार से विदा लेने के बावजूद, उनकी विरासत कालजयी रही है।

1275 ई. में जन्मे ज्ञानेश्वर ने भगवद गीता पर 'ज्ञानेश्वरी' नामक टीका लिखी, जिससे जनसामान्य के लिए आध्यात्मिक ज्ञान सुलभ हुआ। उन्होंने अद्वैत वेदांत, योग साधना, और भगवान विठोबा (श्री विष्णु के अवतार) की भक्ति पर विशेष जोर दिया।

उनका जीवन न केवल आध्यात्मिक ज्ञान से भरा था, बल्कि असाधारण घटनाओं से भी। उन्होंने एक भैंस को वेद मंत्रों का उच्चारण करवा दिया और एक चलते हुए





दीवार पर बैठकर योगी चांगदेव के अहंकार को विनम्रता में बदल दिया।

जीवन की कठिनाइयाँ और उनका सामना सामाजिक बहिष्कार: उनके पिता, विठ्ठल पंत, पहले सन्यासी बन गए थे लेकिन बाद में गृहस्थ जीवन में लौट आए। उस समय के सामाजिक मानदंडों के अनुसार, यह स्वीकार्य नहीं था। इस कारण उनके पूरे परिवार को समाज से अलग कर दिया गया।

उन्होंने इन सामाजिक भेदभावों से ऊपर उठकर अपने अद्वितीय आध्यात्मिक ज्ञान और प्रेमभाव से पूरे समाज को शिक्षित किया। उन्होंने समानता और करुणा का संदेश दिया।

माता-पिता का निधन: वह और उनके भाई-बहनों को अल्पायु में ही अनाथ होना पड़ा।

कठिनाइयों के बावजूद, ज्ञानेश्वर ने आध्यात्मिक पथ अपनाया और अपने ज्ञान एवं लेखन से लाखों लोगों को दिशा दी।

प्रवचन में चुनौतियाँ: उस समय धार्मिक ग्रंथ संस्कृत में थे, जो आम जनता की पहुँच से बाहर थे। जब उन्होंने





मराठी भाषा में लिखना शुरू किया, तो इसका विरोध हुआ। उन्होंने **ज्ञानेश्वरी ग्रंथ** लिखा, जिसने आध्यात्मिक ज्ञान को जनसामान्य तक पहुँचाया और वारकरी भक्ति आंदोलन का आधार बना।

चमत्कारी घटनाएँ: संत ज्ञानेश्वर को कई संदेहियों और चुनौतियों का सामना करना पड़ा, जिनमें से एक योगी चांगदेव थे। चांगदेव ने हजारों वर्षों तक मृत्यु को कई बार टालकर अद्भुत योग शक्तियाँ प्राप्त की थीं, लेकिन उनका अहंकार बढ़ गया, और उन्होंने युवा संत ज्ञानेश्वर को चुनौती देने का प्रयास किया। उन्होंने ज्ञानेश्वर को एक खाली पत्र भेजा, क्योंकि वे तय नहीं कर पा रहे थे कि उन्हें बालक कहकर संबोधित करें या संत कहें। **इसका उत्तर ज्ञानेश्वर की बहन, मुक्ताबाई ने दिया:** *"हालाँकि आपकी चौदह सौ वर्ष की उम्र के बाद भी, तुम उतने ही शून्य हो जितना तुम्हारा पत्र।"* ज्ञानेश्वर के इस उत्तर ने चांगदेव को विनम्र कर दिया और उन्होंने स्वयं ज्ञानेश्वर से मिलने का निश्चय किया। चांगदेव अत्यंत भव्य अंदाज़ में पहुंचे – वे एक बाघ की सवारी कर रहे थे और एक साँप को चाबुक के रूप में थामे हुए थे, अपने योगबल और चमत्कारों का प्रदर्शन कर रहे थे। लेकिन ज्ञानेश्वर और उनके भाई-बहनों ने उनका स्वागत एक अनोखे और





चमत्कारी तरीके से किया वे चलती हुई दीवार पर सवार होकर चांगदेव से मिलने आए। यह दृश्य यह दर्शाता था कि जानेश्वर न केवल जीवों पर बल्कि निर्जीव वस्तुओं पर भी नियंत्रण रखते हैं, और उनकी सिद्धियाँ चांगदेव की शक्तियों से कहीं आगे हैं। इस दिव्य चमत्कार को देखकर चांगदेव को अपनी सीमाएँ और अभिमान का अहसास हुआ। उन्होंने जानेश्वर के चरणों में नतमस्तक होकर उनकी आध्यात्मिक महानता को स्वीकार किया। यह मिलन चांगदेव के जीवन में एक नया मोड़ था, और वे जानेश्वर के भक्त बन गए। संत जानेश्वर की दृढ़ता, विश्वास और आत्मिक शक्ति ने न केवल कठिन परिस्थितियों को साधना के अवसर में बदला, बल्कि समाज में भी गहरे परिवर्तन लाए।

उन्होंने 1296 ईस्वी में आलंदी में समाधि प्राप्त की, और आज भी वहाँ उनका स्मारक स्थान उनके विराट आध्यात्मिक योगदान की स्मृति में पूजनीय बना हुआ है। उनकी प्रेरणा आज भी करोड़ों लोगों का मार्गदर्शन करती है।





क्वांटम भौतिकी (QUANTUM PHYSICS)

(नीचे दिया गया सामग्री इंटरनेट पर सार्वजनिक रूप से उपलब्ध जानकारी से लिया गया है।)

न्यूटन के नियम केवल पदार्थ और कण (particle) स्तर तक ही प्रभावी होते हैं। लेकिन जब हम सूक्ष्म जगत में प्रवेश करते हैं—परमाणुओं (atoms) और उपपरमाण्विक कणों (subatomic particles) के स्तर पर—तब चीजें एकदम अलग तरीके से व्यवहार करने लगती हैं। न्यूटन के नियम उन अनोखी क्वांटम गतिविधियों (quantum behavior) को नहीं समझा पाते, जैसे सुपरपोज़िशन (superposition), तरंग-कण द्वैतता (wave - particle duality), या क्वांटम उलझन (quantum entanglement)। इसे क्वांटम यांत्रिकी (Quantum Mechanics) समझा जा सकता है।

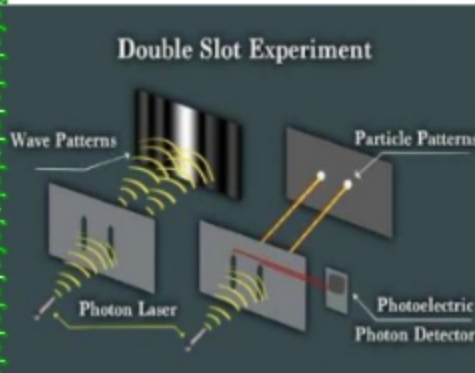
डबल-स्लिट प्रयोग (Double-slit experiment) क्वांटम यांत्रिकी (Quantum Mechanics) और तरंग-कण द्वैतता (wave- particle duality) को समझने के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रयोग है। इस प्रयोग में कणों के व्यवहार को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है:





डबल-स्लिट प्रयोग (DOUBLE- SLIT EXPERIMENT)

कल्पना कीजिए कि हमारे पास दो संकरी दरारें (slits) हैं और उनके पीछे एक बाधा (barrier) है, जो कणों को



पकड़ने का कार्य करती है। जब हम इन दरारों पर इलेक्ट्रॉन (electron) या फोटॉन (photon) जैसे कणों को

छोड़ते हैं, तो सामान्यतः यह अपेक्षा की जाती है कि ये छोटे गोलियों (bullets) की तरह व्यवहार करेंगे और बाधा पर सीधे दो स्पष्ट पैटर्न बनाएंगे। लेकिन वास्तविकता इससे बिल्कुल अलग होती है।

- **तरंग (wave) जैसा व्यवहार:** जब दोनों दरारें खुली होती हैं, तो कण बाधा पर व्यतिकरण (interference) पैटर्न बनाते हैं, जिससे वे तरंगों की तरह परस्पर क्रिया करते प्रतीत होते हैं। इन तरंगों की शिखाएँ (peaks) और गर्त (troughs) आपस में ओवरलैप कर





जाती हैं, जिससे बाधा पर सफेद और काली पट्टियाँ बनती हैं।

- **कण (particle) जैसा व्यवहार:** यदि हम एक डिटेक्टर से यह देखने की कोशिश करें कि कौन-से छिद्र से कण निकल रहा है, तो व्यतिकरण (interference) पैटर्न गायब हो जाता है, और कण एक पारंपरिक इकाई की तरह व्यवहार करने लगते हैं, जो केवल एक दरार से होकर गुजरते हैं।

यह क्वांटम यांत्रिकी का अद्भुत पहलू है, यह प्रयोग दर्शाता है कि इलेक्ट्रॉन और फोटॉन जैसे कण तब तक एक संभावित तरंग जैसी अवस्था में होते हैं, जब तक उनका निरीक्षण नहीं किया जाता। जब तक इनका अवलोकन नहीं किया जाता, तो ऐसा प्रतीत होता है कि वे सभी संभव रास्तों को एक साथ खोजते हैं। लेकिन जैसे ही इनका अवलोकन किया जाता है, इनकी यह अवस्था एक निश्चित स्थिति या पथ में सिमट जाती है—जो क्वांटम भौतिकी के विचित्र स्वरूप को उजागर करता है।





कर्णों का व्यवहार:

- **बिना** किसी पर्यवेक्षक के: कण व्यतिकरण (interference) पैटर्न बनाते हैं—जैसे वे एक साथ दोनों दरारों से गुजर रहे हों, शुद्ध संभावना की भांति।
- **पर्यवेक्षक के साथ:** कण ठोस पदार्थ की तरह व्यवहार करते हैं, केवल एक दरार से गुजरते हैं, और व्यतिकरण पैटर्न गायब हो जाता है।

चेतना (Consciousness) की भूमिका उपचार (Healing) एवं अभिव्यक्ति (Manifestation) में

डबल - स्लिट प्रयोग का परिणाम यह दर्शाता है कि अवलोकन (Observation) या सजग चेतना (Conscious Awareness) का कार्य परिणाम को प्रभावित करता है – संभावनाओं को वास्तविकता में बदल देता है। यही सिद्धांत उपचार (Healing) के मूल में है।





उपचार और अभिव्यक्ति में चेतना की भूमिका - इसमें तीन मुख्य पहलू शामिल होते हैं:

1. संकल्प (Intention)
2. कल्पना (Imagination)
3. दृश्यकरण (Visualization) - दृश्यकरण करते समय जितना संभव हो, भितर की पाँचों इंद्रियों (नेत्र, कान, नाक, जिह्वा और त्वचा) का प्रयोग करके उसे अनुभव करना चाहिए।

सजग संकल्प, श्रद्धा, ध्यान या प्रार्थना उस "वेव फंक्शन" (तरंग स्थिति) को तोड़ देती हैं (collapse करती है)। - जिससे हमें स्वास्थ्य, संतुलन या शांति को मनचाही दिशा में आकार लेने में मदद मिलती है। सूक्ष्म उपचार पद्धतियों (Subtle Healing Modalities) में, चिकित्सक (Healer) की उपस्थिति और उसका चेतनावान संकल्प स्वयं अवलोकनकर्ता की तरह कार्य करता है - और एकाग्र चेतना के माध्यम से वास्तविकता का निर्माण करती है।

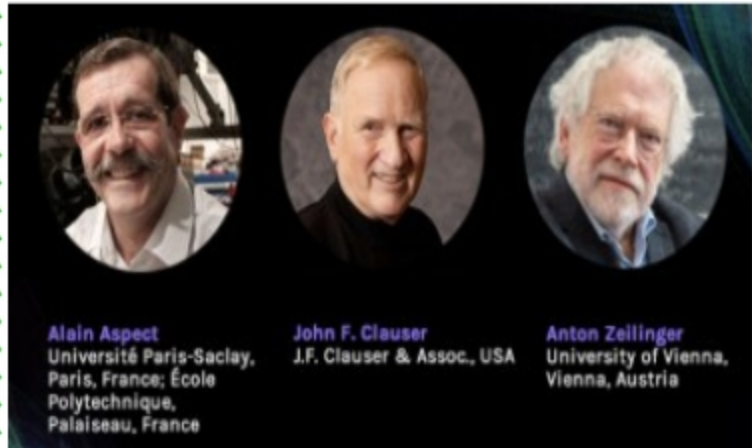
सरल शब्दों में: जैसे अवलोकन कर्णों को रूप देता है, वैसे ही आपका प्रेमपूर्ण सजगता (Loving Awareness) उपचार को साकार कर सकती है। जब आप विश्वासपूर्वक देखते हैं, आप उसकी रचना करते हैं।





क्वांटम एंटेंगलमेंट (QUANTUM ENTANGLEMENT)

(नीचे दिया गया सामग्री इंटरनेट पर सार्वजनिक रूप से उपलब्ध जानकारी से लिया गया है।)



सन् 2022 का भौतिकी का नोबेल पुरस्कार एलेन ऐस्पेक्ट, जॉन एफ. क्लॉज़र और एंटोन ज़ीलिंगर को उनके क्रांतिकारी प्रयोगों के लिए प्रदान किया गया, जो उलझे हुए फोटॉनों (entangled photons) पर आधारित थे। उनके कार्य ने बेल असमानताओं (Bell inequalities) के उल्लंघन को प्रदर्शित किया—ये गणितीय परीक्षण होते हैं जो क्लासिकल भौतिकी की स्थानीयता (locality) और यथार्थवाद (realism) की धारणाओं को चुनौती देते हैं। इस शोध ने यह सिद्ध कर दिया कि **क्वांटम एंटेंगलमेंट—एक**





ऐसा अद्भुत प्रभाव जिसमें कण आपसी दूरी की परवाह किए बिना जुड़े रहते हैं—क्वांटम यांत्रिकी (quantum mechanics) का एक मौलिक पहलू है।

उनके प्रयोगों ने क्वांटम सूचना विज्ञान (quantum information science) की नींव रखी, जिससे क्वांटम कंप्यूटिंग, सुरक्षित क्वांटम संचार (secure quantum communication) और क्वांटम नेटवर्किंग जैसे क्षेत्रों में प्रगति का मार्ग प्रशस्त हुआ। यह क्वांटम क्षेत्र में एक अद्भुत छलांग थी, जहाँ शास्त्रीय भौतिकी के नियम लागू नहीं होते।

क्वांटम एंटेंगलमेंट क्वांटम भौतिकी की सबसे रोचक और चौंकाने वाली घटनाओं में से एक है। यह तब घटित होती है जब दो या अधिक कण इस प्रकार आपस में जुड़ जाते हैं कि एक कण की स्थिति सीधे तौर पर दूसरे कण की स्थिति से संबंधित होती है—भले ही वे कितनी भी दूरी पर क्यों न हों। इसका अर्थ यह है कि यदि एक कण की स्थिति को मापा या बदला जाए, तो दूसरा कण भी तुरंत प्रभावित होता है— भले ही वे अनगिनत प्रकाश वर्षों दूर हों





या ब्रह्मांड की विभिन्न आकाशगंगाओं में बिखरे हों, फिर भी वे एक-दूसरे से गहराई से जुड़े रहते हैं।

यह घटना अल्बर्ट आइंस्टीन को भी हैरान कर गई थी, जिन्होंने इसे "दूरी पर भयावह क्रिया" ("spooky action at a distance") कहा था, क्योंकि यह क्लासिकल भौतिकी की तर्कशक्ति को चुनौती देती थी।

✦ क्वांटम एंटीगलमेंट इस संभावना का प्रतीक है कि प्रेम, भावना और इरादा भौतिक सीमाओं को पार कर सकते हैं—और दूर रहकर भी सांत्वना, उपचार या रूपांतरण का माध्यम बन सकते हैं।

✦ चिकित्सक और प्राप्तकर्ता इरादे की शक्ति से आपस में 'एंटीगल' हो सकते हैं। जब चिकित्सक का भावनापूर्ण और सच्चा इरादा होता है, तो वह दूरी की परवाह किए बिना भी प्राप्तकर्ता को प्रभावित कर सकता है। यही सिद्धांत दूरस्थ उपचार या प्रार्थना-आधारित उपचार की नींव बनता है। गहन उपचार की अवस्थाओं में एक अनुनाद (resonance) अनुभव होता है – मानो दो आत्माएँ या ऊर्जा तंत्र आपस में





सामंजस्य बिठा रहे हों, एक ही लय में प्रवाहित हो रहे हों।



प्रेम: आध्यात्मिक एंटेंगलमेंट का सर्वोच्च रूप: प्रेम,

आत्माओं के बीच सबसे गहरा और शुद्धतम संबंध होता है। जब आप किसी से सच्चा प्रेम करते हैं, तो आप उसकी खुशियों को, उसकी पीड़ा को, और उसके भीतर आने वाले बदलावों को गहराई से महसूस करते हैं – चाहे वह कितनी भी दूर क्यों न हो। यह "जानना" किसी स्थान की सीमा में नहीं बंधा होता – यह अपने मूल में ही एक क्वांटम अनुभव होता है। माँ और बच्चे के संबंध में इसका जीवंत उदाहरण देखा जा सकता है। अक्सर ऐसा होता है कि माँ को सहज ही यह आभास हो जाता है कि बच्चे के साथ कुछ अच्छा या बुरा घटित हुआ है – भले ही बच्चा मीलों दूर क्यों न हो।



ध्यान और एकत्व (Meditation and Oneness)

गहरे ध्यान में "स्व" की सीमाएँ धीरे-धीरे मिटने लगती हैं। आप स्वयं को ब्रह्मांड से जुड़ा हुआ अनुभव करने लगते हैं।





हैं – प्रकृति से, दूसरों से, और दिव्यता से। आप जान जाते हैं कि आप कभी अकेले नहीं हैं, आप कभी पृथक नहीं हैं।

सार यह है: जहाँ सच्चा इरादा, निष्कलंक प्रेम, और हृदय की गहराइयों से उठी भावनाएँ होती हैं, वहाँ कुछ न कुछ अवश्य बदलता है, शांत रूप से, गहराई से, और समय-स्थान की सीमाओं से परे।

उस अदृश्य जुड़ाव से प्रेम और उपचार की ऊर्जा स्वतः बहने लगती है, क्षण भर में, बिना शब्दों के, एक चमत्कारिक स्पर्श की तरह।



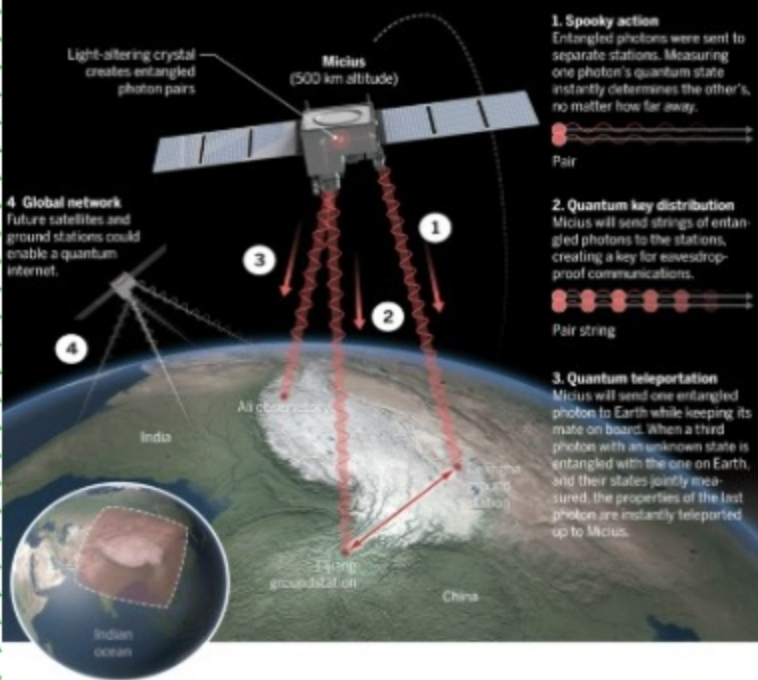


मिकियस सैटेलाइट प्रयोग (2017)

(नीचे दिया गया सामग्री इंटरनेट पर सार्वजनिक रूप से उपलब्ध जानकारी से लिया गया है।)

Quantum leaps

China's Micius satellite, launched in August 2016, has now validated across a record 1200 kilometers the "spooky action" that Albert Einstein abhorred (1). The team is planning other quantum tricks (2-4).



चीन ने 2016 में "मिकियस" नामक एक उपग्रह लॉन्च किया (जिसका नाम एक चीनी दार्शनिक के नाम पर रखा गया है), और 2017 में उन्होंने इसका उपयोग अंतरिक्ष में





क्वांटम एंटीगलमेंट को प्रदर्शित करने के लिए किया—ऐसा पहले कभी नहीं किया गया था।

1. **1,200 किलोमीटर से अधिक की दूरी पर एंटीगलमेंट:**
चीनी वैज्ञानिकों ने मिकियस उपग्रह से दो पृथ्वी पर स्थित ग्राउंड स्टेशनों तक उलझे हुए फोटॉन जोड़े सफलतापूर्वक भेजे, जो 1,200 किलोमीटर से भी अधिक दूर थे। यह उस समय तक क्वांटम एंटीगलमेंट के लिए सबसे लंबी दूरी थी।
2. **निर्बाध क्वांटम संचार:** उन्होंने एंटीगलमेंट का उपयोग एक सुरक्षित क्वांटम संचार चैनल बनाने के लिए किया—यह क्वांटम क्रिप्टोग्राफी का एक प्रकार है जो सैद्धांतिक रूप से हैक नहीं किया जा सकता, क्योंकि फोटॉनों को पकड़ने या बाधित करने का कोई भी प्रयास उन्हें प्रभावित करता है और तुरंत पता चल जाता है।
3. **क्वांटम टेलीपोर्टेशन:** उन्होंने पृथ्वी से उपग्रह तक कणों की क्वांटम स्थिति (स्टेट) टेलीपोर्ट भी की, जो एक और महत्वपूर्ण क्वांटम तकनीक को दर्शाता है (ध्यान दें: यह वस्तु का टेलीपोर्टेशन नहीं बल्कि सूचना का टेलीपोर्टेशन है)।





यह उपलब्धि इसलिए बड़ी मानी गई क्योंकि यह पहली बार था जब अंतरिक्ष आधारित प्रयोग में इतनी बड़ी दूरी पर क्वांटम एंटेगलमेंट साबित हुई। इसने एक वैश्विक क्वांटम इंटरनेट के लिए आधार तैयार किया, जहाँ उलझे हुए कणों के माध्यम से सूचना सुरक्षित रूप से आदान-प्रदान की जा सके।

इसने पुष्टि की कि एंटेगलमेंट अंतरिक्ष में भी काम करता है, जो दर्शाता है कि यह गुरुत्वाकर्षण या पृथ्वी के वायुमंडल तक ही सीमित नहीं है।

आध्यात्मिक और दार्शनिक महत्व: जिस प्रकार उलझे हुए कण अनंत अंतरिक्ष के पार जुड़े रहते हैं, यह परियोजना इस बात का प्रतीक बनी कि सूचना, ऊर्जा, या चेतना मूलतः एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं, चाहे वे कितनी भी दूर क्यों न हों—यह विषय आध्यात्मिक दर्शन में गहराई से जुड़ा हुआ है।





उंदावली गुफाओं में विष्णु मूर्ति का रहस्य



उंदावली की गुफाएं, जो विजयवाड़ा के समीप एक पत्थर से तराशी गई अद्भुत भारतीय वास्तुकला हैं, चौथी-पाँचवीं





सदी की शताब्दी की शिल्पकला को समेटे हुए हैं। ये गुफाएं विष्णुकुंडिन राजाओं से जुड़ी हैं। शुरुआत में ये जैन साधुओं के लिए बनाई गई थीं, फिर बौद्ध संन्यासियों का आश्रय बनीं और अंततः हिंदू पूजा स्थल के रूप में विकसित हुईं।

हालाँकि रायपुरे- सर और लीना- दीदी कई बार विजयवाड़ा आ चुके थे, लेकिन वे कभी इस स्थान पर नहीं गए थे। नागपुर शिविर की घोषणा के बाद, जब वे विजयवाड़ा से होकर गुजर रहे थे, तभी 7 फ़रवरी 2025 को उनका यहाँ आना हुआ।

ऐसा प्रतीत हुआ मानो कोई दिव्य प्रेरणा उन्हें इस गुफा तक ले आई हो। इस दिव्य संयोग का रहस्य इस अनुभाग के अंत में आपके साथ साझा किया जाएगा। गुफा चार मंजिलों की है, जिसमें सबसे खास है एक विशाल विष्णु की मूर्ति, जो शेषनाग पर विश्राम की मुद्रा में बनी है।

यह मूर्ति एक ही ग्रेनाइट पत्थर से तराशी गई है। मूर्ति की भव्यता देखते ही बनती है।





यह भगवान विष्णु के अनंतशयन रूप की चित्र है। यह चित्र मूर्ति के चरणों की ओर से लिया गया है, जिसमें भगवान के पवित्र चरण दर्शित हैं।





भगवान् अनंतशयन के मुख का दृश्य दिखाता हुआ चित्र।





जब रायपुरे- सर और लीना- दीदी सुबह-सुबह गुफा पहुंचे, तो उन्हें मूर्तियों की जानकारी नहीं थी। नीचे से ऊपर तक घूमते हुए वे दूसरी मंजिल पर पहुंचे, जहाँ सबसे दूर एक बड़ी विष्णु की मूर्ति उन्हें मिली। आमतौर पर इस मूर्ति की पूजा नहीं होती, पर कभी-कभी लोग उसकी गर्दन पर माला या पैरों पर फूल चढ़ाते हैं। लीना- दीदी ने मन में कहा, **“तो आप हैं यहाँ !”** वे मूर्ति के पास रुकीं।

रायपुरे- सर मूर्ति के मध्य भाग के पास खड़े थे, पूरी मूर्ति का दृश्य कैद करने की कोशिश में। लीना- दीदी मूर्ति के पैरों के पास थीं। उन्होंने मूर्ति के घुटने को छुआ और आंखें बंद करके उसकी ऊर्जा महसूस करने लगीं। तभी उनके अंदर एक संदेश आया **—“नहीं, यहाँ मत छूओ, दाहिने पैर को छूओ।”** यह संदेश ऐसा नहीं था जैसे कोई आदेश हो, बल्कि एक मृदु, दिल से आने वाली सूचना थी। यह संदेश बहुत सूक्ष्म था। यह कोई आदेश या निर्देश जैसा नहीं था, बल्कि एक कोमल सुझाव था।

फिर, लीना- दीदी ने मूर्ति के दाहिने पैर के अंगूठे के नीचे छुआ और अपनी आंखें बंद करके महसूस करने की कोशिश की कि क्या वे vibrations या भगवान विष्णु की





उपस्थिति महसूस कर सकती है। अचानक उसे अपने हाथ में एक तीव्र ऊर्जा का प्रवाह महसूस हुआ। वह उस ऊर्जा की तीव्रता देखकर हैरान रह गई। उसने कुछ सेकंड और जारी रखा और दिव्य ऊर्जा का अनुभव किया। जब उसने अपनी आँखें खोलीं, तो उसने देखा कि कुछ कदम दूर रायपुरे- सर मूर्ति को छू रहे थे। उसने तुरंत हाथ से संकेत दिया कि वे भी भगवान विष्णु के दाहिने पैर को छुएं।

रायपुरे- सरने बिना जाने कि क्या अनुभव होगा, और





सोचते हुए कि यह प्रक्रिया कितनी देर चलेगी, पैर छूए। लेकिन महज 7-8 सेकंड के भीतर उन्होंने अपने हाथ में दिव्य ऊर्जा का प्रवाह महसूस किया। ऐसा लगा जैसे उनके हाथ नहीं, बल्कि केवल ऊर्जा मौजूद थी।

कुछ ही सेकंड में वह ऊर्जा उनके पूरे शरीर में फैल गई। वे दिव्य आनंद का अनुभव करने लगे। दोनों आश्चर्यचकित थे और एक-दूसरे की ओर देखने लगे। उन्होंने कुछ और मिनटों तक उस ऊर्जा का अनुभव किया। यह उनके लिए एक गहरा अनुभव था। सर ने उनसे पूछा, "तुम्हें मूर्ति के पैर छूने के लिए किसने कहा?" उसने मूर्ति की ओर उंगली उठाते हुए कहा, "उन्होंने (भगवान विष्णु) मुझे ऐसा करने को कहा!"

तभी उन्हें यह भी पता चला कि नागपुर में होने वाले आगामी श्री विष्णु विद्या शिविर में आने वाले साधकों को भी यह दिव्य अनुभव कराना चाहिए।

बाद में शिविर के दौरान, रायपुरे- सर ने प्रोजेक्टर के माध्यम से भगवान विष्णु की मूर्ति दिखाई। साधकों ने





astral यात्रा के जरिए उंदावली गुफा की यात्रा की और मूर्ति के दाहिने पैर को छुआ। लगभग सभी साधकों ने ध्यान के दौरान दिव्य ऊर्जा और आनंद महसूस किया। इस सत्र का उन पर गहरा प्रभाव पड़ा। कई साधकों ने प्रतिज्ञा की कि वे व्यक्तिगत रूप से उस गुफा की यात्रा करेंगे।

यह साबित करता है कि भगवान विष्णु सैक्रेड सर्कल के साधकों पर अपनी कृपा बरसा रहे हैं। यह भी संकेत है कि विष्णु विद्या शिविर भगवान विष्णु की दिव्य इच्छा और मार्गदर्शन से संचालित था!





हार्टमैथ.

हार्टमैथ. एक अमेरिकी कंपनी है, जो तनाव कम करने, भावनात्मक आत्म-नियंत्रण बढ़ाने और प्रदर्शन सुधारने के लिए वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित तकनीकों और बायोफीडबैक तकनीकियों में विशेषज्ञता रखती है। इसकी स्थापना 1998 में हुई थी और इसका मुख्यालय बोल्डर क्रीक, कैलिफोर्निया में स्थित है। हार्टमैथ अपनी पैरेंट कंपनी, क्वांटम इंटेक, इंक. के तहत काम करती है।

हार्टमैथ का उद्देश्य

हार्टमैथ का उद्देश्य व्यक्तियों और संगठनों की भावनात्मक भलाई, संज्ञानात्मक प्रदर्शन और मानसिक लचीलापन बढ़ाना है, जिसके लिए वे हृदय और मस्तिष्क के बीच के जुड़ाव का उपयोग करते हैं। इनका मुख्य फोकस "हार्ट कोहैरेंस" हासिल करने पर होता है – ऐसी स्थिति जहाँ हृदय, मन और भावनाएँ एक साथ सामंजस्यपूर्ण तरीके से काम करती हैं, जिससे तनाव कम होता है और निर्णय लेने की क्षमता बढ़ती है।





हार्टमैथ और हार्ट कोहेरेंस

हार्टमैथ यह सिखाता है कि:

- हृदय केवल एक पंप नहीं है, बल्कि यह एक बुद्धिमान अंग है जिसका अपना एक तंत्रिका तंत्र होता है।
- जब हम प्रेम, कृतज्ञता या करुणा जैसी भावनाएँ महसूस करते हैं, तब हृदय की लय (रिदम) कोहेरेंट यानी समरस, संतुलित और सुसंगत हो जाती है।
- इस कोहेरेंट स्थिति में हृदय और मस्तिष्क तालमेल बिठाते हैं और हृदय एक शक्तिशाली विद्युत्चुंबकीय क्षेत्र उत्पन्न करता है, जिसे शरीर से कई फीट दूर तक मापा जा सकता है।

हार्ट-फोकस्ड सांस लेना + सकारात्मक भावना = हार्ट कोहेरेंस।

कई आध्यात्मिक गुरु और वैकल्पिक शोधकर्ता मानते हैं कि यह कोहेरेंट ऊर्जा क्षेत्र स्केलर ऊर्जा को सक्रिय कर सकता है, या कम से कम सूक्ष्म, उच्चतर ऊर्जा के साथ संपर्क करता है जो न केवल आपके शरीर को, बल्कि आपके आस-पास के लोगों को भी प्रभावित करता है।





योगिक और वैदिक प्रणाली में:

- अनाहत चक्र (हृदय केंद्र) बिना शर्त प्रेम, समरसता और संतुलन का स्थान है।
- हृदय पर गहरी ध्यान साधना दिव्य ऊर्जा (शक्ति) को जागृत करती है और साधक को आत्मा (अंतर्ज्ञान) या परमात्मा (सार्वभौमिक आत्मा) से जोड़ती है। उन्नत अवस्थाओं में साधक आध्यात्मिक ऊर्जा – जिसे तेजस या प्राण-शक्ति कहा जाता है – का संचार कर सकते हैं, जो सूक्ष्म या स्केलर क्षेत्रों के विचार से मेल खाता है।

ध्यान में स्केलर तरंगें (Scalar waves) – चेतन ऊर्जा के रूप में

कई क्वांटम हीलिंग या सूक्ष्म ऊर्जा के स्कूलों में, स्केलर ऊर्जा को इस प्रकार माना जाता है:

- गैर-स्थानीय (Non-local), यानी यह समय और दूरी की सीमाओं से परे होती है।
- यह संकल्प या चेतना (intention or consciousness) वहन करती है।
- यह भावनाओं और हृदय आधारित अवस्थाओं द्वारा बढ़ाई जाती है।





ध्यान में इसका अर्थ:

- जब आप हृदय केंद्र से मजबूत इरादे के साथ ध्यान करते हैं, तो आप केवल मन को शांत नहीं कर रहे होते, बल्कि कहा जाता है कि आप अपने शरीर या विश्व में हीलिंग, प्रेम, या परिवर्तन की स्केलर तरंगें भेज रहे होते हैं।
- इसीलिए समूह ध्यान, प्रेमपूर्ण करुणा ध्यान, या हृदय प्रार्थना मंडलों के वैश्विक या सामंजस्यपूर्ण प्रभाव होने की रिपोर्ट अक्सर मिलती है।
- इसी संदर्भ में कहा जाता है कि मानव हृदय स्केलर ऊर्जा का एक शक्तिशाली स्रोत है – विशेष रूप से जब यह प्रेम, करुणा या कोहेरेंस की अवस्थाओं में होता है।

स्केलर तरंगों को अक्सर 'हृदय-केंद्रित' माना जाता है, अर्थात् माना जाता है कि वे हृदय की कोहेरेंट ऊर्जा से उत्पन्न होती हैं और हीलिंग ऊर्जा लेकर चलती हैं।





सायुज्य मुक्ति का अनुभव

संत नामदेव का शब्द - शिविर के दौरान बजाया गया

"सभे घट राम बोले" एवं "राम बिना क्या बोले रे" जिसका अर्थ है - ईश्वर सर्वत्र व्याप्त हैं, उनके बिना कुछ भी अस्तित्व में नहीं है।

Youtube vedio link

https://youtu.be/A11fYsl0J_k?si=NbmUEe8ga1zmJ8c

अपने भीतर 'राम' को अनुभव करो और उनसे एकात्म हो जाओ। उनके रूप से एक हो जाओ - रूप और आत्मा का पूर्ण मिलन।





संत नामदेव जी का शब्द - सभै घट राम बोलै

शब्द की पंक्तियाँ	हिंदी भावार्थ / व्याख्या
सभै घट रामु बोलै, रामा बोलै।	हर कण, हर प्राणी, हर घट में वही राम बोल रहे हैं।
राम बिना को बोलै रे ॥१॥ रहाउ ॥	उसके बिना कोई भी कुछ नहीं कह सकता, सब उसी की अभिव्यक्ति है।
एकल माटी कुंजर चीटी, भाजन हैं बहु नाना रे।	हाथी और चींटी एक ही मिट्टी से बने हैं, जैसे विभिन्न बर्तन एक ही मिट्टी से बनते हैं।
अस्थावर जंगम कीट पतंगम, घटि घटि रामु समाना रे ॥१॥	स्थावर (स्थिर), जंगम (चलायमान), कीट-पतंग-सबके भीतर राम समाए हुए हैं।
एकल चिंता राखु अनंता, अउर तजहु सभ आसा रे।	केवल अनंत राम की चिंता करो, और अन्य सभी आशाओं को त्याग दो।
प्रनवै नामदेव भए निहकाम, को ठाकुर को दासा रे ॥२॥३॥	नामदेव प्रार्थना करते हैं—अब मैं निःस्वार्थ हो गया हूँ, न कोई स्वामी है, न दास; सबमें वही राम है।





ध्यान प्रक्रिया - मुक्ति की सीढ़ियाँ

1. प्रकाश के स्तंभ बनाओ

अपने चारों ओर दिव्य प्रकाश के स्तंभों की कल्पना करो, जो आकाश से पृथ्वी तक उतरते हैं।

2. सभी दिव्य शक्तियों को आमंत्रित करो

3. देवताओं, गुरुओं, साधुओं, और सभी श्रेष्ठ चेतनाओं को अपनी साधना में सम्मिलित करो।

4. अब 'मरकबा' (Merkaba) को बुलाओ

दिव्य ऊर्जा यान जो आत्मा को उच्च लोकों में ले जाता है।

5. वैकुण्ठ में प्रवेश करो - (तुमने सालोक्य मुक्ति प्राप्त कर ली है)

वैकुण्ठ लोक में भगवान विष्णु के धाम में पहुँचना, जहाँ परम शांति और सौंदर्य है।

6. भगवान विष्णु की सन्निधि में रहो - (तुमने सामीप्य मुक्ति प्राप्त की)

प्रभु के निकट, उनकी उपस्थिति में टिके रहना - जैसे जल में जल।

7. (तुमने सायुज्य मुक्ति प्राप्त की)

अब तुम प्रभु से एकाकार हो चुके हो। "मैं और तू" का भेद मिट चुका है।





सत्र में यह भी बताया गया कि सुदर्शन चक्र की दिव्य ऊर्जा को कैसे ध्यान और उपचार (Healing) के लिए प्रयोग किया जा सकता है - यह चक्र केवल नाशक नहीं, बल्कि अत्यंत शुभ और संतुलनकारी ऊर्जा का स्रोत है।

संत कबीर का दोहा और राम रस:

संत कबीर का दोहा भी चलाया गया... इसमें कहा गया है:
"हे मन! चाहे तू किसी और का बोझ उठाए, वे तेरे अपने नहीं हैं। यह संसार उस पक्षी के समान है, जो पेड़ की डाल पर थोड़ी देर बैठता है। मैं राम के दिव्य अमृत-रस को पी रहा हूँ। इस रस का स्वाद चखकर मैंने अन्य सभी स्वादों को भुला दिया है।"

Ram Ras Piyare :<https://youtu.be/ReYRaZBfH0?si=JeJJlc3KuoLGCKxl>





संत कबीर जी का शब्द - राम रस पिया रे-----

शब्द की पंक्तियाँ	हिंदी अनुवाद	भावार्थ / व्याख्या
रे मन! तेरा कोई नहीं, खींच ले जिसने भार।	हे मन! चाहे तू किसी का बोझ उठाए, वे कभी तेरे नहीं हो सकते।	संसार में हम दूसरों के लिए कितना भी करें, अंततः सब स्वार्थी हैं; कोई भी वास्तव में हमारा नहीं है।
वृक्ष बसेरा पंखी का, तैसो यह संसार॥१॥	यह संसार उस पक्षी के समान है, जो पेड़ की डाल पर कुछ पल बैठता है और उड़ जाता है।	यह संसार अस्थायी है; यहाँ कोई स्थायी नहीं है।
राम रस पिया रे।	मैं 'राम रस' - प्रभु प्रेम का अमृत - पी रहा हूँ।	प्रभु के प्रेम का अनुभव सबसे मधुर और स्थायी है।
जिस रस बिसर गए रस और॥१॥ रहाउ॥	इस अमृत के स्वाद में मैंने सभी सांसारिक स्वादों को भुला दिया है।	जब ईश्वर का प्रेम मिल जाता है, तो अन्य सभी इच्छाएँ तुच्छ लगती हैं।
और मुए क्या रोइए, जब आपा	जब हम स्वयं स्थायी नहीं हैं, तो दूसरों की	जीवन और मृत्यु दोनों अस्थायी हैं; हमें





शब्द की पंक्तियाँ	हिंदी अनुवाद	भावार्थ / व्याख्या
थिर न रहाए।	मृत्यु पर क्यों रोना?	आत्मा की स्थिरता को पहचानना चाहिए।
जो उपजै सो बिनस है, दुख कर रोवै बलाए॥२॥	जो उत्पन्न होता है, वह नष्ट भी होता है; दुख में रोने से क्या लाभ?	संसार में सब कुछ नश्वर है; हमें आत्मज्ञान की ओर बढ़ना चाहिए।
जहाँ की उपजी, तह रची, पीवत मर्दन लाग।	हम जहाँ से उत्पन्न हुए हैं, वहीं में लीन हो जाते हैं; प्रभु के रस को पीते हुए उसमें लीन हो जाओ।	आत्मा का मूल स्रोत ईश्वर है; हमें उसी में लीन होना चाहिए।
कहै कबीर चित चेतिया, राम सिमरि बैराग॥३॥	कबीर कहते हैं - मेरे चित ने राम का स्मरण किया और वैराग्य प्राप्त किया।	प्रभु का स्मरण ही सच्चा वैराग्य है; इससे संसार की मोह-माया समाप्त हो जाती है।





संत नामदेव जी की कथा



संत नामदेव जी का जन्म लगभग 1270 ईस्वी में महाराष्ट्र के नरसी बहमनी गांव में हुआ था। उनका परिवार दर्जी या धोबी जाति से संबंध रखता था, परंतु बचपन से ही उनका झुकाव गहरे आध्यात्मिक जीवन की ओर था।

भक्ति का प्रारंभ : नामदेव जी भगवान विठ्ठल (विठोबा) - जो कि श्रीकृष्ण का एक रूप हैं - के परम भक्त थे। वे पंढरपुर के विठ्ठल मंदिर में प्रभु के सम्मुख बैठकर प्रेमपूर्वक भजन गाते थे, मानो स्वयं भगवान उनके सामने उपस्थित हों।

वारकरी संप्रदाय और संत संगति : नामदेव जी संत जानेश्वर, संत चोखामेला, संत गोरोबा कुम्भार जैसे अन्य महान संतों के साथ वारकरी आंदोलन से जुड़े हुए थे, जो





भक्ति, समर्पण और समाज में समानता की भावना फैलाता था।

उत्तर भारत की यात्रा और नाम-संकीर्तन:बाद में नामदेव जी ने उत्तर भारत की यात्रा की - विशेष रूप से पंजाब की ओर। वहाँ उन्होंने नाम (ईश्वर के नाम) के महत्व को प्रचारित किया और निराकार ब्रह्म की भक्ति में डूबे भजन गाए।

सिख परंपरा में सम्मान:सिख धर्म के पहले गुरु - श्री गुरु नानक देव जी - ने संत नामदेव जी को अत्यंत सम्मान दिया। गुरु ग्रंथ साहिब में उनके 61 भजन शामिल किए गए हैं, जो आज भी गाए जाते हैं।

उनकी शिक्षाएँ

ईश्वर सर्वत्र है, केवल मंदिरों में नहीं। ईश्वर को जात-पात या कर्मकांड से कुछ लेना-देना नहीं, वह केवल हृदय की पवित्रता को देखता है। उनके भजन प्रेम, विनम्रता और समर्पण से भरे हुए हैं।





समाधि और सम्मान: कहा जाता है कि संत नामदेव जी ने 1350 ईस्वी में समाधि ली। महाराष्ट्र में उन्हें वारकरी संत के रूप में पूजा जाता है और पंजाब में उन्हें आध्यात्मिक गुरु माना जाता है, जिनके वचन कालातीत हैं।

रोटी चमत्कार - एक दिव्य प्रसंग

बाल्यकाल में एक दिन, नामदेव जी के पिता ने उन्हें प्रभु विठोबा को एक रोटी अर्पित करने के लिए भेजा। छोटे नामदेव ने बड़ी श्रद्धा से मूर्ति के सामने रोटी रख दी और भोलेपन से बैठ गए - यह सोचकर कि भगवान अब इसे खा लेंगे, वरना पिताजी डांटेंगे।

उनकी शुद्ध भक्ति से प्रभावित होकर, भगवान विठ्ठल प्रकट हुए और रोटी खा ली। यह घटना प्रसिद्ध हो गई, जो यह दर्शाती है कि भगवान केवल सच्ची भक्ति पर प्रतिक्रिया करते हैं, न कि केवल कर्मकांडों पर।





बारदो:

जब कोई मरता है, तो तिब्बती बौद्ध धर्म में माना जाता है कि चेतना एक संक्रमणकालीन अवस्था में प्रवेश करती है जिसे बारदो कहा जाता है—जो मृत्यु और पुनर्जन्म के बीच की एक प्रकार की मध्यवर्ती अवस्था है।

इस दौरान, विशेष प्रार्थनाएँ, जाप और पाठ किए जाते हैं ताकि:

- चेतना को इस अवस्था से मार्गदर्शन दिया जा सके
- आत्मा को जागरूकता के स्पष्ट प्रकाश को पहचानने में मदद मिले
- भय और आसक्ति कम हो
- अनुकूल पुनर्जन्म या पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति प्राप्त हो सके

जप और गायन अनुष्ठान

ये अनुष्ठान अत्यंत सुंदर और गंभीर होते हैं। साधु या लामा जाप करते हैं:

- बारदो थोडोल से अंश
- अवलोकितेश्वर, अमिताभ या अन्य बुद्ध और बोधिसत्त्वों के लिए प्रार्थनाएँ
- “ओम मणि पद्मे हूं” (करुणा) या “फट” (आसक्तियों को काटने के लिए) जैसे मंत्र





इनका उद्देश्य होता है:

- आत्मा को उसकी सच्ची प्रकृति की याद दिलाना
- बारदो में आने वाले दर्शन और अनुभवों से भयभीत न होने में मदद करना
- उसे प्रकाश की ओर मार्गदर्शन करना और भ्रम से दूर रखना

गायन क्यों किया जाता है - मधुरता और जाप का प्रयोग महत्वपूर्ण इसलिए है क्योंकि:

- ध्वनि को आध्यात्मिक ऊर्जा का शक्तिशाली वाहक माना जाता है
- इसकी कंपन आत्मा को शांति प्रदान कर सकती है
- ये बारदो में अज्ञान के आवरण को छेद सकती हैं

तिब्बती संस्कृति में यह विश्वास है कि मृत्यु के बाद भी चेतना कुछ समय तक जागरूक रहती है। इसलिए इन पवित्र मंत्रों को सुनना उसकी स्थिति को समझने और मुक्ति का मार्ग चुनने में मदद करता है।





आत्मज्ञान का सिद्धांत (THEORY OF ENLIGHTENMENT)

आध्यात्मिक संदर्भ में, "सर्वोच्च अवस्था" का तात्पर्य अक्सर आध्यात्मिक अनुभूति और चेतना के सर्वोच्च स्तर से होता है। यह अवस्था गहरी आंतरिक शांति, परम सत्य और दिव्यता के साथ एकता से परिभाषित होती है। हिन्दू धर्म में, सर्वोच्च अवस्था को मोक्ष या निर्वाण कहा जाता है। इसका अर्थ है जन्म और पुनर्जन्म के चक्र (संसार) से मुक्ति और अपने सच्चे स्वरूप को दिव्य सार (ब्रह्म) का हिस्सा समझना।

बौद्ध धर्म में, सर्वोच्च अवस्था को सम्बोधि कहा जाता है। यह वास्तविकता की सच्ची प्रकृति को समझने और जागरण का अंतिम स्तर दर्शाता है, जो अज्ञान और दुःख से मुक्त होता है।

व्यापक आध्यात्मिक दृष्टिकोण से, सर्वोच्च अवस्था को चेतना के उच्चतम स्तर और आंतरिक सामंजस्य की स्थिति माना जा सकता है। इसमें सामान्य धारणाओं को पार करना और स्वयं को उच्च सत्य और दिव्य अनुभूति





के साथ संरेखित करना शामिल है। यह अवस्था गहन ज्ञान, शांति और सांसारिक आसक्तियों से मुक्ति से जुड़ी होती है।

गुरुत्वाकर्षण बल दो वस्तुओं के बीच इस प्रकार गणना किया जाता है:

$$F = G \frac{m_1 m_2}{r^2}$$

Labels in the diagram:
 force (pointing to F)
 Gravitational constant (pointing to G)
 mass (pointing to m₁ and m₂)
 distance (pointing to r²)

जहाँ **m1** हमारा द्रव्यमान है।

m2 पृथ्वी का द्रव्यमान है।

r हमारे और पृथ्वी के केंद्र के बीच की दूरी है।

जब m1 शून्य हो जाता है तो बल भी शून्य हो जाता है। कई आध्यात्मिक गुरु और रिलेयन्स ने भी उल्लेख किया है कि मनुष्य पृथ्वी तल और सौर मंडल से बंधे होते हैं ऐसे गुरुत्वाकर्षण बल के कारण। उपरोक्त समीकरण में यदि m1 को कर्म का द्रव्यमान माना जाए अर्थात् ("काम", "मोह", "क्रोध" और "मत्सर") तो जिसका भी ऐसा कर्म होगा वह हमेशा गुरुत्वाकर्षण बल का अनुभव करेगा और मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकेगा।

दूसरी ओर यदि कर्म शून्य हो अर्थात् कर्म नष्ट हो जाए, तो गुरुत्वाकर्षण बल F शून्य हो जाएगा और वह मुक्ति





प्राप्त कर लेगा। हमारा लक्ष्य होना चाहिए कि हम अपने कर्म को शून्य करें।

*रैलेन्स वे लोग होते हैं जो रैलेवाद (Raelianism) धर्म या विचारधारा का पालन करते हैं, जो 1970 के दशक में क्लॉड वोरीलो द्वारा स्थापित एक UFO-संबंधित आध्यात्मिक आंदोलन है। यह मानता है कि जीवन की उत्पत्ति पृथ्वी पर बाहरी अंतरिक्षी (एलियंस) द्वारा की गई थी।





श्री लक्ष्मी नारायणी गोल्डन टेम्पल दर्शन के दौरान भगवान विष्णु का दिव्य संदेश



16 मार्च 2025 को, नागपुर शिविर से कुछ सप्ताह पहले, रायपुरे-सर और लीना-दीदी **वेल्लोर** स्थित श्री लक्ष्मी नारायणी गोल्डन टेम्पल के दर्शन के लिए गए। यह मंदिर तमिलनाडु, भारत के तिरुमलैकोडी, वेल्लोर में एक छोटे से हरे-भरे पहाड़ी श्रृंखला के तल पर स्थित है। यह तिरुपति से 120 किलोमीटर और चेन्नई से 145 किलोमीटर दूर





है। इस मंदिर के विमानम् और अर्ध मंडपम् को शुद्ध सोने से ढंका गया है।

मंदिर लगभग 100 एकड़ में फैला हुआ है और इसके मुख्य भागों के दर्शन करने में कई घंटे लगते हैं। मार्ग के किनारे कई छोटे मंदिर, शिल्प, मूर्तियाँ, बाग-बगिचे और दुकानें हैं।





लीना-दीदी और रायपुरे-सर ने वहाँ लगभग 2 घंटे बिताए। जब वे मुख्य मंदिर के दर्शन कर लौट रहे थे, तो मार्ग के अंतिम भाग में एक छोटा-सा विष्णु जी का मंदिर मिला। वे वहाँ गए, और आँखें बंद करके भगवान को नमन किया। कुछ ही मिनटों बाद वे मंदिर से बाहर निकलने वाले थे, लेकिन लीना-दीदी को भीतर से एक गहरी अनुभूति हुई कि कुछ और पल वहाँ ठहरना चाहिए। उन्होंने अपनी आँखें खोलीं और फिर से बंद कीं ताकि ऊर्जा को महसूस कर सकें।

उन्हें अनुभव हुआ कि मूर्ति धीरे-धीरे बड़ी होती जा रही है। वह बहुत विशाल हो गई। फिर मूर्ति अदृश्य हो गई और वहाँ केवल एक असीम, अनंत दिव्य उपस्थिति थी। यह संदेश था कि वह सीमाहीन हैं, विराट हैं। इस विराटता की अनुभूति के बीच, उन्हें भीतर से एक दिव्य शून्यता, एक महान खालीपन, "शून्यता" का अनुभव हुआ। वे इस दिव्य अनुभव को भी रसपूर्वक अनुभव कर रही थीं।

फिर एक और अंतरात्मा से संदेश आया—
"Make the participants of Shri Vishnu Vidhya Shivir to experience the emptiness in





boundlessness. उन्हें विराट में शून्यता का अनुभव कराओ!" उन्होंने यह संदेश रायपुरे-सर को बताया। हालाँकि, साधकों को विराटता या शून्यता का अनुभव कराना संभव है, परंतु उन्हें विराटता में शून्यता का अनुभव कराना बहुत कठिन है। इसके लिए विशेष ध्यान की आवश्यकता होती है।

लेकिन साधकों को एक ही समय में दोनों अनुभव कराना अत्यंत चुनौतीपूर्ण था। रायपुरे-सर भी सोच रहे थे कि साधकों को एक साथ यह अनुभव कैसे कराया जाए!

6 अप्रैल 2025 को राम नवमी थी -माँ उमिया मंदिर में कुछ लोग भजन गा रहे थे। आवाज़ बहुत तेज़ थी, इसलिए ध्यान सत्र आयोजित करना संभव नहीं था। इसलिए रायपुरे-सर ने साधकों से कहा कि वे शिविर के अपने अनुभव साझा करें। फीडबैक सत्र चल रहा था। कुछ समय बाद भजनों की आवाज़ भी धीमी हो गई।

उसी समय, रायपुरे-सर को भीतर से एक अनुभूति, एक दिव्य संदेश मिला कि अगला सत्र कैसे संचालित करना है।





शिविर का अंतिम सत्र लगभग दोपहर 1:30 बजे प्रारंभ हुआ। रायपुरे-सर ने दिव्य आत्माओं को आमंत्रित किया कि वे साधकों को दिव्य ध्यान का अनुभव कराएँ। भगवान शिव, भगवान विष्णु, भगवान बुद्ध और भगवान यीशु को प्रकाश के स्तंभों के रूप में आमंत्रित किया गया। फिर उन्होंने ध्यान संबंधी निर्देश दिए। उन्होंने साधकों को चारों प्रकार की मुक्तियों का अनुभव कराया।

फिर दिव्य निर्देशानुसार, उन्होंने साधकों से कहा कि वे दिव्य उपस्थिति, दिव्य प्रकाश की असीमितता (Unboundedness) का अनुभव करें और अंततः 'कुछ भी न होने' (Nothingness) की अवस्था में प्रवेश करें। यह एक अत्यंत गहरा अनुभव था। लगभग सभी साधकों ने दिव्यता की असीमिता का अनुभव किया। और उसी समय, दिव्यता की शून्यता का भी अनुभव किया। यह एक अद्वितीय दिव्य अनुभूति थी।

लगभग सभी साधक दिव्य तेज में लीन हो गए थे। वे निःशब्द थे। अधिकांश की आँखों से आँसू बह रहे थे। वे आनंद और परमानंद से भर गए थे। वे दिव्यता की





विशालता और शून्यता को शब्दों में व्यक्त नहीं कर पा रहे थे - वह केवल अनुभव की जा सकती थी।

साधक वास्तव में धन्य थे कि उन्हें ऐसा अविस्मरणीय अनुभव प्राप्त हुआ। ऐसी आध्यात्मिक गहराई अक्सर विस्मयकारी होती है, जहाँ शब्द असमर्थ हो जाते हैं और केवल आत्मा ही समझ सकती है। यह जानकर हर्ष हुआ कि हम ईश्वर की दृष्टि में हैं और यह सब तकनीकें रायपुरे-सर को हमारे आध्यात्मिक उत्थान हेतु प्रकट हुईं।

✦ प्रकाश के बाद आने वाला शून्य या अंधकार का सिद्धांत इस रूप में देखा जा सकता है कि यह आत्मज्ञान के बाद का एक संक्रमणकाल या खालीपन की स्थिति है।

✦ यह शून्यता नकारात्मक नहीं है, बल्कि यह पुराने विश्वासों, पैटर्नों और आसक्तियों को छोड़ने का स्थान है।

✦ यह समय कभी-कभी आत्मा की पुरानी पहचान खोने की अनुभूति दे सकता है, लेकिन यह असफलता का संकेत नहीं है।

✦ यह एक नई शुरुआत के लिए तैयारी का समय है।





✚ यह शून्यता आत्म-सम्बंध को गहरा करने, नए मार्ग खोजने और जीवन में नए अर्थ एवं उद्देश्य की खोज का समय हो सकता है।

इस ध्यान सत्र में अधिकांश साधकों ने परमात्मा के दिव्य प्रकाश का अनुभव किया और साथ ही परम सत्ता में विद्यमान दिव्य शून्यता का भी अनुभव किया।

- ❖ प्रकाश एक आत्मिक जागृति या उच्चतर सत्य की अनुभूति का प्रतीक है।
- ❖ यह दृष्टिकोण में परिवर्तन, आत्मा से गहरे जुड़ाव या ईश्वर का अनुभव हो सकता है।





ध्यानमय आनंद की अमूल्य स्मृतियाँ

❖ "अमूल्य स्मृतियाँ" यह दर्शाता है कि ये अनुभव अत्यंत प्रिय और हृदय के बहुत निकट हैं, जिन्हें सहेज कर रखा जाता है।

❖ "ध्यानमय आनंद" एक ऐसी अवस्था को प्रकट करता है जहाँ ध्यान के माध्यम से गहन शांति, आनंद और आंतरिक सामंजस्य की अनुभूति होती है।







संत पाटीवाली आई की दिव्य उपस्थिति











मां उमिया धाम एवं परिसर











लीना दीदी द्वारा आयोजित प्रातःकालीन सैर एवं प्राणायाम सत्र





भक्ति रस में झूमते हुए सैक्रेड सर्कल के साधक







सैक्रेड सर्कल के स्वयंसेवकों के प्रति आभार एवं सराहना



प्रिय सैक्रेड सर्कल के स्वयंसेवकों,

नागपुर में आयोजित कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए
आप सभी का हृदय से आभार व्यक्त करना चाहता हूँ।





आपकी निष्ठा, सेवा-भावना और कठिन परिश्रम ने इस आयोजन को विशेष बना दिया। आपने जिस समर्पण और प्रेम से अपनी भूमिका निभाई, वह वास्तव में प्रशंसनीय है। कार्यक्रम की सुचारू रूप से संचालन में आपके योगदान की जितनी सराहना की जाए, कम है।

आपका सहयोगी और विनम्र स्वभाव हर क्षण में झलकता रहा। हर अतिथि को आपने जिस आत्मीयता से स्वागत किया, उससे एक सुखद और सकारात्मक वातावरण बना। आपने हर कार्य को पूर्ण मनोयोग से निभाया, और यह आयोजन आपके प्रतिबद्ध प्रयासों के बिना संभव नहीं हो पाता।

मेरे हृदय की गहराइयों से आप सभी को धन्यवाद देता हूँ। आपकी सेवा और समर्पण ने हम सभी पर अमिट छाप छोड़ी है। मुझे गर्व है कि मैं आपके इस अद्भुत सामूहिक प्रयास का साक्षी बन सका।

सादर,

राजेश माल्या





साधकों के अनुभव

दिव्य नीला विष्णु लोक



नागपुर रिट्रीट मेरी पहली सैक्रेड सर्कल से जुड़ने की अनुभूति थी। इससे पहले, मैंने कभी सैक्रेड सर्कल ध्यान या हीलिंग कक्षा में भाग नहीं लिया था।

वास्तव में, मैं नागपुर शिविर में भाग लेने के लिए इच्छुक नहीं था। मैंने सिर्फ अपनी पत्नी के साथ नागपुर जाने के लिए

टिकट बुक किया था, क्योंकि वह शिविर में भाग लेने के लिए उत्सुक थी।

बाद में, उसे कुछ साधकों का साथ मिल गया, जो नागपुर की यात्रा कर रहे थे। इसलिए, मैंने अपनी यात्रा टिकट रद्द करने की कोशिश की। लेकिन, आश्चर्यजनक रूप से, बार-बार प्रयास करने के बावजूद मेरी नागपुर यात्रा टिकट रद्द नहीं हुई! इस प्रकार, मैंने ट्रेन के प्रस्थान समय से ठीक 1 घंटे पहले नागपुर





शिविर में शामिल होने का निर्णय लिया! और, शिविर के दौरान मुझे अद्भुत अनुभव हुआ।

पहले दिन, यानी 4 अप्रैल 2025 को, पहले सत्र के दौरान, जब मैं ध्यान कर रहा था, अचानक मुझे ऐसा महसूस हुआ कि ऊर्जा मेरे पूरे शरीर से विकीर्ण हो रही है, जैसे सूर्य की किरणें मुझसे निकल रही हों। मेरी सोच में, मुझे लगा कि अगर उस क्षण कोई मुझे गलती से छूता, तो वह शक्तिशाली करंट का अनुभव करता।

दूसरे दिन, पहले सत्र के दौरान, जब सर ने हमें विष्णु लोक तक पहुँचाया, तो मैंने खुद को द्वारपाल जय और विजय के पास पाया, मानो मैं वहाँ घूम रहा था। जब मैं लौटा, तो मुझे अपार आनंद महसूस हुआ और मैं अपनी खुशी में इतना डूब गया कि उसी दिव्य क्षण में बना रहा।

बाद में, दूसरे सत्र में, जब सर ने हमें फिर से विष्णु लोक में ले जाया, तो मेरी खुशी और गहरी हो गई। जैसे-जैसे हम आगे बढ़े, मैं एक ऐसे स्थान में प्रवेश कर गया, जहाँ सब कुछ दिव्य नीली आभा से आलोकित था। मैं इसे पूरी तरह से वर्णित नहीं कर सकता, लेकिन जहाँ भी मैंने देखा, वहाँ सिर्फ नीली रोशनी थी। एक स्थान पर मैंने एक दीवार देखी, जिस पर एक पवित्र यंत्र था, और वहाँ मेरी आत्मा की चमक एक गहरे, स्थिर ज्वाला की तरह प्रकाशित हो रही थी। मेरे अस्तित्व में आनंद का महासागर उमड़ आया।





तीसरे दिन, जब हमने फिर से विष्णु लोक की यात्रा की और नीली आभा से आगे बढ़े, तो हम पूर्ण शून्यता में प्रवेश कर गए। जब मैं वहाँ पहुँचा, तो मैंने अपने गुरुदेव को देखा, जो अब शारीरिक रूप में नहीं हैं। उनसे मिलकर मैं असीम आनंद से भर गया। और जब मैं लौटा, तो मेरी आँखें अश्रुपूरित थीं—भक्ति, कृतज्ञता और गहन भावनाओं में डूबा हुआ था।

नृसिंह नारायण शर्मा (ओडिशा)





अंगुली में सुदर्शन चक्र ऊर्जा का प्रवाह!



भक्ति की शक्ति ने चमत्कार किया, पथ की धूल को जीवंत रंगों में बदल दिया। नागपुर शिविर की हर दिव्य आत्मा को हार्दिक प्रणाम, इस अद्भुत आयोजन ने हमें वास्तव में समृद्ध किया।

नागपुर शिविर के प्रारंभ से ही दिव्य अनुभव प्रकट होने लगे। प्रत्येक दिन, हम ध्यान में और गहरे उतरते गए। सबसे गहन क्षण वह था जब हम सभी ने सुदर्शन चक्र की शक्ति को महसूस किया—मेरा पूरा शरीर, प्रत्येक कोशिका, दिव्य ऊर्जा से कंपन कर रहा था, जो अद्भुत गति से प्रवाहित हो रही थी। हाथ की तर्जनी उंगली तीव्रता से घूमने लगी, और यह सब ध्यान के दौरान हो रहा था। मन आश्चर्य से भर गया—यह कैसे हो रहा था? जो भी था, आत्मा आनंद से भर गई, शरीर हल्का हो गया, और मन शांति से सराबोर हो गया।

फिर, परमात्मा के प्रति कृतज्ञता से मन प्रफुल्लित हो उठा। संपूर्ण शिविर के दौरान, मैं परिपूर्ण आनंद से भर गया। माँ, सर और सभी को इस सुंदर आयोजन के लिए हार्दिक धन्यवाद।

-विवेक सिन्हा, रायपुर, छत्तीसगढ़





मैंने तुरीय अवस्था का अनुभव किया



सम्माननीय सर और मैम, मैं आपको सौ बार नमन करता हूँ।

4 और 5 अप्रैल के रिट्रीट का हर क्षण असीम प्रेम से भरा हुआ था। इन दोनों दिनों के ध्यान सत्रों के दौरान, मैं एक गहरे ध्यानावस्था में था।

5 अप्रैल की रात, मैंने भगवान विष्णु से प्रार्थना की

और सोचा कि यदि मैं केवल इस ध्यानावस्था में ही रहा, तो इस रिट्रीट का उद्देश्य कैसे पूरा होगा? मैंने चेतन अवस्था में ध्यान करने की इच्छा व्यक्त की। फिर, 6 अप्रैल की सुबह, ध्यान के दौरान, मैं पूर्ण जागरूकता में था और निर्देशों का पालन करते हुए दिव्य ऊर्जा से गहरा जुड़ाव महसूस कर सका।

दोपहर 3:00 बजे, ध्यान सत्र के दौरान, मेरा ध्यान इतना गहन और सघन था कि मैं उस अनुभव को शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता। मैं समाधि (गहन ध्यानात्मक अवलोकन) की अवस्था से परिचित हूँ, और मैं गहरी निद्रा की अवस्था को भी समझता हूँ। ध्यान के बाद, गहन विचार-मंथन के बाद, मेरी अंतरात्मा ने मुझे बताया कि मैं तुरीय अवस्था (चेतना की चौथी और सर्वोच्च स्थिति) में था।





सर और मैम, मैं वास्तव में धन्य महसूस करता हूँ। उस दिन का अनुभव वही था जिसकी मैं पिछले 15 वर्षों से तलाश कर रहा था, और अंततः, मैंने उसे प्राप्त कर लिया। मेरे लिए, आप लक्ष्मी-नारायण से कम कुछ नहीं हैं। मेरी दृष्टि में, आप उन्हीं के समान हैं। मैं सितंबर में पुरी शिविर में फिर आपसे मिलने आऊँगा। धन्यवाद,

प्रमोद चनेवार, जबलपुर





सुदर्शन चक्र की उपचार शक्ति



मैंने इस शिविर में अपनी पत्नी और चार महीने के शिशु के साथ भाग लिया, और हम सभी ने अद्भुत समय बिताया। इस कार्यक्रम को विशेष बनाने वाली बात यह थी कि यह

अपना सा महसूस हुआ। मैंने पहले भी कई ध्यान कार्यक्रमों में भाग लिया है, लेकिन यह अनुभव अलग था।

ऐसा नहीं लगा कि हम केवल किसी और के आयोजन में शामिल हो रहे हैं—बल्कि यह ऐसा प्रतीत हुआ मानो हम स्वयं इसका हिस्सा हों, जैसे यह हमारे लिए ही बनाया गया हो। अन्य प्रतिभागियों ने भी यही भावना व्यक्त की। स्वयंसेवक होने से यह जुड़ाव और गहरा हुआ, लेकिन इसके बिना भी यह अनुभव ऐसा था मानो हम सभी इससे आत्मीय रूप से जुड़े हों।

स्वयंसेवकों के रूप में, हम इस बात से अचंभित थे कि सब कुछ कितनी सहजता से संचालित हुआ। इससे पहले हमने इतने बड़े





स्तर के आयोजन को कभी नहीं संभाला था, फिर भी सब कुछ सुचारू रूप से संपन्न हुआ। यह केवल भगवान विष्णुजी की कृपा और मार्गदर्शन से संभव हुआ, जिसने हर कदम को सहज बना दिया।

व्यक्तिगत रूप से, मुझे इस शिविर में शामिल होने के लिए कई बाधाओं का सामना करना पड़ा। लेकिन जैसा कि मैम ने सही कहा, जब कोई चीज वास्तव में आपके लिए लाभकारी होती है, तो प्रारंभिक चुनौतियाँ स्वाभाविक होती हैं। महत्वपूर्ण बात यह है कि पहला कदम उठाएं और प्रतिबद्ध रहें। जब पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो मैं बेहद खुश हूँ कि मैंने यह निर्णय लिया और इस जीवन-परिवर्तनकारी अनुभव में भाग लिया।

सत्रों की सामग्री अत्यंत सुंदर रूप से डिज़ाइन की गई थी। जब भी हम सर से पूछते कि आगे क्या होगा, तो वे केवल इतना कहते, “जब समय आएगा, तब देखेंगे।” इससे ऐसा प्रतीत हुआ मानो सब कुछ स्वयं भगवान विष्णु से प्रवाहित हो रहा हो।

मैं एक व्यक्तिगत अनुभव भी साझा करना चाहता हूँ—कार्यक्रम के दौरान सुदर्शन चक्र उपचार तकनीक सीखने के बाद, मैंने इसे तब प्रयोग किया जब मुझे पेचिश हो गई थी। आश्चर्यजनक रूप से, बिना किसी दवा के लक्षण तुरंत समाप्त हो गए, और मैं बेहतर महसूस करने लगा।





सर और मैम, इस दिव्य और अविस्मरणीय अनुभव के लिए
आपका हार्दिक धन्यवाद। मैं सच में आशा करता हूँ कि यह
आनंद हमें जीवन भर मिलता रहे।

दिलेश शेंडे, तकनीकी सहायता अभियंता,
नागपुर





मेरे प्रश्न चमत्कारिक रूप से उत्तरित हुए



मेरी प्रिय मैम और सर को गहन कृतज्ञता के साथ, मैं नागपुर शिविर में अपने अनुभव को साझा करना चा चाहती हूँ।

मेरा अनुभव अत्यंत अनुठा था। वास्तव में, शिविर में आने से पहले मेरे मन में कुछ गंभीर प्रश्न थे, जिन्हें मैंने अपनी डायरी में

लिखा था, यह सोचकर कि शायद सर उनका उत्तर नहीं दे पाएंगे (क्योंकि इतनी बड़ी भीड़ और व्यस्त कार्यक्रम में समय मिलना मुश्किल होगा)।

मेरे प्रश्न थे...

1. स्केलर वेव्स क्या होती हैं?
2. क्वांटम भौतिकी में टू-पॉइंट एंटेगलमेंट क्या है और यह आध्यात्मिकता में कैसे लागू होता है?
3. गहरे ध्यान में मेरा अपने शरीर से बाहर कैसे निकल जाना संभव हुआ?

मेरे आश्चर्य की सीमा नहीं रही जब एक अलग सत्र स्केलर वेव्स और टू-पॉइंट एंटेगलमेंट पर आयोजित हुआ। मैं पूरी तरह





चकित थी और सोच रहा थी—क्या सर “अंतर्मामी” हैं? मैंने अपने गुरु के प्रति अपार कृतज्ञता महसूस की। इस प्रकार, मेरे दो प्रश्नों के उत्तर मिल गए।

4 अप्रैल को जब हम ब्लू एवियन ध्यान कर रहे थे, तब मैंने एक शून्य में खुलते हुए एक स्थान को देखा, जहाँ एक दिव्य स्वर्णिम वृक्ष था, जो निश्चित रूप से इस दुनिया का नहीं था।

5 अप्रैल को विष्णु सुदर्शन चक्र ध्यान के दौरान, मैंने नो बॉडी, नो माइंड की अवस्था महसूस की, साथ ही अपार शांति का अनुभव हुआ... मुझे ज्ञात था कि मैं “समाधि” में थी—यह एक अद्भुत अनुभव था!

6 अप्रैल... गहन ध्यान में अचानक मैं अपने शरीर से बाहर निकल गयी। मैंने मंदीर के बगीचे में एक सैर की और फिर अपने भौतिक शरीर में वापस आ गयी। अब मुझे अपने तीसरे प्रश्न का उत्तर भी मिल गया!

इससे पहले कि मैं अपना अनुभव मैम से साझा करती, उन्होंने फ़ॉर्मूला $F = m_1 \cdot m_2 / r^2$ के बारे में समझाना शुरू किया और बताया कि जब m_1 शून्य हो जाता है, तब हम एस्ट्रल ट्रैवल कर सकते हैं।

इस प्रकार, यह शिविर मानो विशेष रूप से मेरे लिए ही आयोजित हुआ था, क्योंकि मुझे अपने सभी प्रश्नों के समाधान





मिल गए और वह भी व्यावहारिक अनुभवों के साथ। सर और
मैम के चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम।

डॉ. मधु कुशवाहा - B.A.M.S - नई दिल्ली





चमत्कारिक उपचार



ध्यान रिट्रीट (शिविर) में आने से पहले, मुझे ऐसा लग रहा था कि कोई नकारात्मक ऊर्जा मुझे रोकने का प्रयास कर रही थी।

मुझे ऑफिस से छुट्टी नहीं मिल रही थी, और शिविर से दो दिन पहले मेरे पैर में मोच आ गई। तीव्र दर्द के कारण चलना कठिन हो गया।

छुट्टी न मिलने के कारण, 12 घंटे की यात्रा असंभव लग रही थी। लेकिन पैर में दर्द के बावजूद, मैं खुद को रोक नहीं पायी। मैंने तुरंत एक फ्लाइट बुक की और माँ उमिया धाम पहुँची। वहाँ मैंने लीना मैम, सर और सभी से मुलाकात की। मुझे नहीं पता कि पहले ध्यान सत्र की रात कौन सा चमत्कार हुआ, लेकिन अचानक मेरा पैर पूरी तरह ठीक हो गया—मानो कुछ हुआ ही नहीं था। चलते समय मैंने महसूस किया कि अब मैं ठीक से चल सकती हूँ।

दूसरे दिन का वातावरण पूरी तरह अलग था—यह पवित्र, शुद्ध और उच्च ऊर्जा से भरा हुआ महसूस हुआ। ध्यान के दौरान, मैंने देवी लक्ष्मी के चरण देखे—सुंदर, पायल से अलंकृत। मेरी





उंगलियों पर भगवान विष्णु का सुदर्शन चक्र दिखाई दिया। मैं खुद को नियंत्रित नहीं कर पाई और ध्यान करते हुए पास ही लेट गई मैंने हरी और बैंगनी रोशनी देखी, और एक बैंगनी पक्षी अपने पंख मेरी ओर फैलाकर प्रकट हुआ। मैं उस स्थान को छोड़ना नहीं चाहती थी। तीन दिन कब बीत गए, यह पता ही नहीं चला—ऐसा लगा मानो कुछ ही घंटे गुजरे हों।

मेरे ऊर्जा स्तर में उल्लेखनीय परिवर्तन आया। मैंने उपचार तकनीकें सीखीं, और उन्हें प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करना एक अविश्वसनीय एहसास था। हमने हमेशा लीना मैम और सर के ध्यान निर्देशों को ऑनलाइन ही फॉलो किया था, लेकिन लाइव ध्यान में शारीरिक रूप से उपस्थित होना एक बिल्कुल अलग अनुभव था—यह एक गहरा जुड़ाव था।

एक अतिरिक्त आश्चर्यजनक घटना थी पाटीवाली आई से मिलना—यह पूरी तरह अप्रत्याशित था! हमें मैम और सर के गुरु को प्रत्यक्ष देखने का अवसर मिला, उनके चरण स्पर्श किए और उनका आशीर्वाद प्राप्त किया।

तीन दिन के रिट्रीट के बाद, मैंने स्वयं में एक परिवर्तन महसूस किया—

- ❖ मेरे आंतरिक शांति के स्तर में बदलाव
- ❖ मेरे ऊर्जा स्तर में वृद्धि
- ❖ स्वयं पर एक नई आत्म-विश्वास की भावना

लौटने के बाद भी मेरा मन उसी शिविर में बना रहा।





माँ, धन्यवाद! माँ उमिया धाम मंदिर अत्यंत सुंदर है, और इसकी शांत, ताजा वातावरण स्वाभाविक रूप से ध्यान में डूब जाने के लिए प्रेरित करती है। 🙏 जय माँ उमिया माता दी! माँ, कृपया मुझे फिर बुलाइए।

मैंने कम उम्र में कठिन परिस्थितियों का सामना किया है—कभी-कभी ऐसा भी लगा कि सब कुछ छोड़ दूँ, या जीवन समाप्त कर दूँ। लेकिन ध्यान की दुनिया में प्रवेश करने के बाद, मुझे जीने, खोजने और क्रांटम तथा मेटाफिजिक्स जैसी अवधारणाओं को समझने की इच्छा उत्पन्न हुई है। मैं और अधिक जानना चाहती हूँ, परमात्मा से बातचीत करना चाहती हूँ, और उन्हें देखना चाहती हूँ। बचपन से ही मेरे साथ असाधारण अनुभव होते रहे हैं—अलग-अलग रंग देखना, हल्कापन महसूस करना मानो उड़ रही हूँ, या कभी अत्यंत हल्का तो कभी अत्यंत भारी अनुभव करना। ये अनुभव बचपन से होते रहे हैं, और अब मैं और अधिक गहराई में जाने के लिए तैयार हूँ। ध्यान एक अद्भुत माध्यम है—मैं इसे अभ्यास करती रहूँगा, और सभी को इसे अपनाने के लिए प्रेरित करती हूँ।

मैम और सर, धन्यवाद!

मधु कुशवाहा (उत्तर प्रदेश) - प्रोसेस स्पेशलिस्ट, इंफोसिस





दिव्य और परिवर्तनकारी शिविर



आदरणीय सर और लीना
जी,

इस नागपुर शिविर में मिले
परिवर्तनकारी अनुभव के
लिए मेरी हार्दिक कृतज्ञता।
आपकी शिक्षाएँ और
मार्गदर्शन अमूल्य हैं, और
मैं आपके दिव्य ज्ञान एवं
अनुभव को साझा करने के
लिए गहराई से आभार

व्यक्त करती हूँ। आप दोनों हमारे लिए लक्ष्मी-नारायण हैं। हम
सभी धन्य हैं कि हमें इस शिविर में भाग लेने का अवसर मिला।
ध्यान सत्र अत्यंत प्रभावशाली थे, और मैंने शांति एवं स्पष्टता का
एक नया स्तर अनुभव किया।

पहले दिन जब हम विष्णु लोक में पहुँचे, तो गहरे ध्यान में चले
गए। दूसरे और तीसरे दिन, स्पष्टता और कंपन और अधिक प्रबल
हो गया। यह एक आनंदमय सत्र था। अभ्यास सत्र भी अद्भुत था।
जब रिकॉर्डिंग के साथ अभ्यास किया, तो उच्च स्तर की ऊर्जा
महसूस हुई। आपकी कृपा हम सभी पर यूँ ही बनी रहे, और
आप सदैव शांति एवं आनंद से परिपूर्ण रहें।





इस शिविर में हमें आई से जुड़ने का जो अद्भुत अवसर मिला, वह एक अविस्मरणीय आश्चर्य था! इस ज्ञानप्रकाशित आत्मा की उपस्थिति में रहना हमारे लिए एक दुर्लभ आशीर्वाद था।

मैं इस शिविर में पूरे हृदय से भाग लेने वाले प्रत्येक व्यक्ति के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना चाहती हूँ। हम सभी ने एकता की भावना को गहराई से महसूस किया। विभिन्न प्रतिभाओं को साझा करने का अनुभव भी बहुत सुंदर था। दिव्य भजनों और नृत्य ने हमें एक मंत्रमुग्ध करने वाली अवस्था में पहुँचा दिया। मैं सभी स्वयंसेवकों को उनके अथक परिश्रम के लिए धन्यवाद देना चाहती हूँ— उन्होंने इस कार्यक्रम को हमारे लिए बहुत सहज और यादगार बना दिया। प्रत्येक दिन से लेकर अंतिम दिन तक, हर व्यवस्था अद्भुत ढंग से की गई थी। ईश्वर सभी को आशीर्वाद दें।

सभी दिव्य आत्माओं को धन्यवाद! हम सुंदर स्मृतियाँ साथ लेकर जा रहे हैं...

हरिना राय - मुंबई





विष्णु जी की ऊर्जा का अनुभव: एक अविस्मरणीय आध्यात्मिक उपलब्धि



सर और माँ को प्रणाम।

विष्णु विद्या शिविर हमारे सैक्रेड सर्कल का पहला ऑफलाइन रिट्रीट था, और यह अत्यंत सफल रहा। मैं स्वयं एक ओशो सन्यासी हूँ, और आमतौर पर मुझे गहन आध्यात्मिक संवेदनाएँ अनुभव नहीं होतीं। लेकिन इस शिविर के

एक सत्र के दौरान, मैंने निरंतर महसूस किया कि विष्णु जी के आज्ञा चक्र से ऊर्जा प्रवाहित हो रही है और मेरी ओर आ रही है। यह ऊर्जा उनके हृदय चक्र से भी लंबे समय तक प्रसारित होती रही, जिससे एक अत्यंत सुंदर और भावनात्मक रूप से गहन अनुभव उत्पन्न हुआ।

संपूर्ण सत्र के दौरान, विष्णु जी की ऊर्जा अत्याधिक तीव्रता से महसूस हुई। इसके अतिरिक्त, सभी सत्र अद्भुत सुंदर और गहरे भावनात्मक स्तर पर प्रेरणादायक थे। यह रिट्रीट मेरी आध्यात्मिक यात्रा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर बन गया है। सर और माँ को अनगिनत बार हार्दिक धन्यवाद।

संगीता बहेंदवार – नागपुर





परिवर्तनशील आध्यात्मिक यात्रा: भगवान विष्णु से जुड़ाव



4 से 6 अप्रैल 2025 तक नागपुर में आयोजित विष्णु विद्या शिविर में मेरा अनुभव एक अद्भुत आध्यात्मिक यात्रा थी, जहाँ मैंने भगवान विष्णु के दिव्य आशीर्वाद को महसूस किया। इस शिविर के प्रत्येक ध्यान सत्र ने मेरे भीतर गहरी शांति और संतोष की अनुभूति कराई, लेकिन दो विशेष अनुभव असाधारण रूप से भगवान विष्णु से जुड़ने के क्षण साबित हुए।

पहला अनुभव उस सत्र में हुआ जब दिवाकर सर और लीना मैडम हमें उंदावली गुफाओं में लेकर गए। वहाँ, जब मैंने भगवान विष्णु के चरणों को स्पर्श किया, तो मेरी हथेलियों में ऊर्जा की तीव्र तरंग प्रवाहित होने लगी। फिर, जब दिवाकर सर ने हमारे ऊर्जा चक्र से जुड़ाव किया, तो मेरा दायां हाथ अनायास ही हिलने लगा, मानो कोई शक्तिशाली दिव्य ऊर्जा मुझसे होकर प्रवाहित हो रही हो।

दूसरा अद्भुत अनुभव तब हुआ जब दिवाकर सर ने हमें सुदर्शन चक्र धारण करने की प्रक्रिया कराई। जब मैंने चक्र को अपने दाएं हाथ में पकड़ा, तो मेरी तर्जनी अंगुली अपने आप हिलने लगी और पूरे सत्र के दौरान लगातार हिलती रही। जैसे ही ध्यान समाप्त हुआ, मैंने देखा





कि उसी अंगुली पर एक काला निशान उभर आया था—ऐसा निशान जो पहले वहाँ नहीं था! इस चमत्कारी घटना को देखकर मैं अचंभित रह गया।

मैं इस अविस्मरणीय अनुभव के लिए दिवाकर सर और लीना मैडम का हार्दिक धन्यवाद व्यक्त करना चाहता हूँ, जिनकी मार्गदर्शन से हमें भगवान विष्णु से जुड़ने का यह अवसर प्राप्त हुआ।

**संजीव बोस, बी.टेक और एम.टेक, आईआईटी खड़गपुर से,
वर्तमान में अपोलो ग्लोबल मैनेजमेंट, मुंबई में एसोसिएट
डायरेक्टर के पद पर कार्यरत।**





एक दिव्य यात्रा: नागपुर शिविर में आनंदमय अनुभव



मैडम को प्रणाम एवं सर को प्रणाम,

भगवान की दिव्य कृपा से मुझे नागपुर शिविर में भाग लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ—एक ऐसा अनुभव जिसका मैं लंबे समय से प्रतीक्षा कर रहा था, विशेष रूप से सर और मैडम से प्रत्यक्ष भेंट करने के लिए।

पिछले तीन वर्षों से सेहक्रड सरकल से जुड़कर, प्रत्येक रविवार ध्यान सत्र में सम्मिलित होते हुए, मैंने सदैव दिव्य ऊर्जा के साथ एक गहन और शक्तिशाली जुड़ाव महसूस किया है। किन्तु नागपुर में बिताए ये तीन दिन वास्तव में अलौकिक थे। उनकी उपस्थिति में ध्यान करना शब्दों से परे एक अनुभव था—एक ऐसी आध्यात्मिक उन्नति, जो पहले कभी अनुभूत नहीं की थी।

3 से 6 अप्रैल के ये दिन मेरे जीवन के अत्यंत बहुमूल्य क्षणों में से थे। प्रत्येक पल सच्चे आनंद से परिपूर्ण था। 3 अप्रैल की रात मुझे गुरु की पूर्ण कृपा प्राप्त हुई, जिससे मेरी आत्मा का गहन शुद्धिकरण हुआ। मैंने सभी दिव्य शक्तियों के आशीर्वाद को अनुभव किया, जब ध्यान ने मुझे गहन शांति में निमग्न कर





दिया। माँ ISIS की उपस्थिति स्पष्ट रूप से अनुभव हो रही थी—उनकी दिव्य ऊर्जा हमारे हृदयों के अत्यंत समीप प्रतीत हो रही थी।

4 अप्रैल को ध्यान के दौरान मेरे चक्र संतुलित हुए, और मैंने अद्भुत ऊर्जा समरसता का अनुभव किया। ऐसा प्रतीत हुआ मानो शांति मेरे संपूर्ण अस्तित्व में प्रवाहित हो गई हो, और एक लयबद्ध शुद्ध ऊर्जा का प्रवाह मुझमें प्रवाहित हो रहा था।

5 अप्रैल को कुछ असाधारण हुआ—ऐसा लगा जैसे स्वयं शुद्ध ऊर्जा मुझसे संवाद कर रही हो। यह अनुभव मानो किसी अन्य लोक में प्रवेश करने जैसा था, पूर्ण रूप से दिव्य अनुभूति में निमग्न। मैं आसपास किसी से बात करना नहीं चाहती था, क्योंकि मैं आध्यात्मिक आनंद की अवस्था में डूबी हुई थी। यह अनुभव मेरे हृदय में स्पंदन उत्पन्न कर रहा था, और हर्ष के अश्रु निरंतर बह रहे थे।

जब ध्यान भगवान विष्णु के वैकुंठ धाम पर केंद्रित हुआ, तो मैंने अनुभव किया कि जैसे मेरे अनेक जन्मों की प्यास अब शांत हो गई हो। मेरा मन उनके दिव्य स्वरूप में पूर्णतः तल्लीन हो गया, मेरी आत्मा शुद्ध हो गई, और गहन आध्यात्मिक अनुभवों की एक अनवरत लहर मुझे अपने भीतर बहा ले गई। मौन कृतज्ञता में, मैंने उस क्षण की अद्भुतता को आत्मसात किया।

मेरे सर्वाधिक प्रिय अनुभवों में से एक तब था जब सर हमें विष्णु लोक तक ले गए, लेकिन मेरी यात्रा किसी अन्य स्थान पर चली गई—एक रहस्यमयी गुफा में। वहाँ, मुझे जय और विजय तथा कई अन्य दिव्य शक्तियों के दर्शन हुए। एक अन्य ध्यान सत्र ने





मुझे उंदावली गुफा तक पहुंचा दिया, जहाँ मैंने गहरी आध्यात्मिक प्रतिध्वनि महसूस की। भावनाएँ मुझमें उमड़ने लगीं, और मेरी आँखों से अश्रु बहने लगे। मुझे लगा था कि मैं भगवान को बांसुरी और सुदर्शन चक्र सहित देखूँगी, लेकिन वहाँ मुझे एक दिव्य आश्चर्य प्राप्त हुआ—भगवान विष्णु अनंत शयन मुद्रा में विराजमान थे। मैं उनके चरणों के समीप खड़ी थी, उनकी उपस्थिति से अभिभूत।

6 अप्रैल को अंतिम ध्यान सत्र भी उतना ही गहन था—शुद्ध दिव्य ऊर्जा अत्यंत तेजस्वी रूप में प्रकट हो रही थी। शब्द उस प्रकाशमान अंधकार की सुंदरता का वर्णन करने में असमर्थ हैं—यह कल्पना से परे आनंद था। एक बार फिर, मैंने इस पवित्र अनुभव के लिए भगवान विष्णु को अपनी हृदय से कृतज्ञता अर्पित की। धन्यवाद, सर एवं मैडम। मेरे कृतज्ञता भाव को शब्दों में व्यक्त करना असंभव है—केवल गहन श्रद्धा और आपके चरणों में शाश्वत प्रणाम।

वंदना सरीन, अहमदाबाद





अंतर आत्मा की खोज!



मेरे आध्यात्मिक मार्गदर्शक दिवाकर रायपुरे सर और लीना मैडम हैं, और मैं अप्रैल 2021 से उनके सान्निध्य में हूँ।

ऐसे दिव्य और विकसित आत्माओं को अपना गुरु पाने का सौभाग्य और आशीर्वाद महसूस करती हूँ।

यह सच है कि जब हम अपने भीतर की खोज के लिए तैयार

होते हैं और अपनी आध्यात्मिक यात्रा को गहराई से शुरू करते हैं, अपनी आत्मा के उद्देश्य की तलाश में होते हैं, तो ब्रह्मांड हमें ऐसे सुंदर, करुणामय मार्गदर्शक प्रदान करता है, जो अपने ज्ञान और अंतर्दृष्टि से हमारे जीवन को प्रकाशित करते हैं।

किसी आध्यात्मिक मार्ग को अपनाने से पहले, जीवन निश्चित रूप से हमें कुछ संघर्षों और कठिन क्षणों से गुजारता है, ताकि यह संकेत मिले कि यह सही समय है अपनी सीमाओं से बाहर निकलकर स्वयं को रूपांतरित करने का।

कोविड के समय, जब मेरा परिवार संघर्ष के दौर से गुजर रहा था, तब मुझे ऑनलाइन ध्यान सत्र के माध्यम से सर और मैम से जुड़ने का अवसर मिला। हालांकि शुरुआत में उनके सत्र मुझे





अधिक आकर्षक नहीं लगे, लेकिन उनकी विनम्रता और सहज व्यक्तित्व ने मेरे भीतर रुचि उत्पन्न की और मुझे हर सप्ताह सत्र जारी रखने के लिए प्रेरित किया। मैं खुश हूँ कि मैंने अपनी अंतःवृत्ति पर भरोसा किया और उनके सिखाए ध्यान तकनीकों का नियमित रूप से अभ्यास किया।

मैंने सीखा कि अपने शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक शरीर और पिछले कर्मों को कैसे ठीक करें, अवचेतन अवरोधों और भय को कैसे हटाएँ, उच्च आत्मा, उन्नत मास्टर्स, महान केंद्रीय सूर्य, आकाशीय जीवों से कैसे जुड़ें और उनसे सुरक्षा कैसे प्राप्त करें। धीरे-धीरे, मैंने अपने विचारों, दृष्टिकोण और जीवन की धारणा में बदलाव महसूस किया। मैं दूसरों के प्रति अधिक समझदार और क्षमाशील बन गयी। मेरा रूपांतरण तब हुआ जब मैंने लोगों, परिस्थितियों और भावनाओं को जैसा है वैसा स्वीकार करना शुरू किया और अपने प्रत्येक कार्य के प्रति अधिक जागरूक हो गयी। मेरी चेतना में हुए बदलाव ने मुझे सुरक्षित, आनंदित और चिंता मुक्त महसूस कराया। ध्यान के दौरान मुझे कई दिव्य अनुभव हुए। चार साल बीत गए। मैंने ध्यान करना पसंद करना शुरू कर दिया। ध्यान मेरे दैनिक जीवन का हिस्सा बन गया है और "सैक्रेड सर्कल" मेरी आत्मीय परिवार बन गया है।

फिर वह दिन आया जब मुझे 3 अप्रैल 2025 को नागपुर शिविर में अपने मार्गदर्शकों और आत्मीय परिवार से व्यक्तिगत रूप से मिलने का अवसर मिला। वह हम सभी के लिए एक अत्यंत भावनात्मक क्षण था। हर एक चेहरा जाना-पहचाना लग रहा था। सभी ने एक-दूसरे के प्रति निःस्वार्थ प्रेम अनुभव किया, मानो हम सभी एक ही ऊर्जा





स्तर पर स्पंदित हो रहे थे। सर और मैम से मिलना एक सपने के सच होने जैसा था। वह मंत्रमुग्ध कर देने वाला पल शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता।

उमिया धाम, एक अत्यंत सुंदर और दिव्य स्थान, ने हमारे शिविर में और अधिक शांति और संतोष का संचार किया। इसकी वातावरण, सौम्यता और ऊर्जा ने हमें गहरी शांति का अनुभव कराया।

एक सच्चे साधक के रूप में, मैं हर रविवार जूम सत्र के दौरान अपने अनुभव साझा करता थी। कई लोग मुझे मेरे चेहरे से पहचानते हैं। जब हम पहली बार नागपुर में मिले, तो जिस तरह से मुझे सभी का स्नेह और प्रशंसा मिली, उसने मुझे अत्यंत खुशी और जुड़ाव का एहसास कराया। जब एक युवा लड़की मेरे पास आई और बोली, **"आंटी, मैं केवल आपको सुनना पसंद करती हूँ, और आपके अनुभवों ने मुझे बहुत प्रेरित किया,"** तो उसके शब्दों ने मुझे अपार संतोष दिया और मेरा हृदय कृतज्ञता से भर गया कि किसी तरह मैं दूसरों को प्रेरित करने और उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने का माध्यम बन सकी।

3 अप्रैल की शाम को, सर और मैम ने हमें हॉल में एक तैयारी बैठक के लिए बुलाया और वहां ध्यान किया ताकि उस स्थान की ऊर्जा को शुद्ध किया जा सके और सकारात्मक स्पंदन बढ़ाया जा सके। फिर, उन्होंने कई उच्च दिव्य शक्तियों का आह्वान किया। इसके बाद, हम सभी ने मिलकर सात्विक भोजन का आनंद लिया।

4 अप्रैल हमारा शिविर का पहला आधिकारिक दिन था। दिन की शुरुआत लीना मैम के नेतृत्व में सुबह की सैर और





प्राणायाम से हुई। नाश्ते के बाद, हम सभी हॉल में एकत्रित हुए। कार्यक्रम सर और मैम के स्वागत, कुछ श्लोकों और गुरु वंदना के साथ प्रारंभ हुआ।

हमारे शिविर का मुख्य विषय **"श्री विष्णु विद्या"** था। सर ने हमें चार प्रकार की मोक्ष प्राप्ति— **सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य और सायुज्य**—के बारे में सिखाया और समझाया।

पहला ध्यान **ब्लू एवियन्स** के साथ किया गया। मैंने उनके उच्च ऊर्जा को अपने चारों ओर और अपने शरीर में महसूस किया।

दूसरा ध्यान हमारे शरीर में **वायु, जल और अग्नि तत्वों** के संतुलन के लिए किया गया। इसके बाद, एक गहन क्रिया द्वारा **ब्रह्मग्रंथि, विष्णुग्रंथि और रुद्रग्रंथि** को खोलने की प्रक्रिया की गई, जिससे **कुंडलिनी ऊर्जा** सुशुम्ना नाडी के माध्यम से ऊपर प्रवाहित हो सके। **इड़ा और पिंगला नाड़ियों** की शुद्धि और संतुलन के लिए **जीसस और लेडी नाडा** का आह्वान किया गया। पूरे ध्यान के दौरान मैंने अपने **हृदय चक्र और सहस्रार चक्र** की ऊर्जा प्रवाह और स्पंदन को अनुभव किया।

पाटीवाली आई के आगमन ने चारों ओर आध्यात्मिकता और सकारात्मकता को और बढ़ाया। हर कोई उनसे व्यक्तिगत रूप से मिलने का बेसब्री से इंतजार कर रही थी। मुझे भी उनका आशीर्वाद मिला और मेरे आध्यात्मिक विकास के लिए कुछ अनमोल सुझाव मिला। दोपहर के भोजन के दौरान **सर, मैम और आई** की उपस्थिति ने हम सभी को अत्यंत प्रसन्न किया। वे इतने सहज और सुलभ थे कि मैंने उनके साथ तस्वीरें लेने का कोई भी मौका नहीं गंवाया। इसके लिये सर मुझे प्यार से





"लालची" कहकर बुला रहे थे, और मैं इन स्नेह से भरे क्षणों को बेहद आनंदित होकर जी रही थी।

शाम को, हमने मास्टर क्षितिज का जन्मदिन मनाया और अपने सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भरपूर आनंद लिया। ओडिया टीम द्वारा गाया गया श्री जगन्नाथ जी का ओडिया भजन सभी को मंत्रमुग्ध कर गया। कई साधकों ने अपनी आंतरिक प्रतिभा प्रदर्शित की। अंत में, हम सभी ने "हरी सुंदर नंद मुकुंद" भजन की धुन पर नृत्य किया। हर कोई अपने संकोच से बाहर आया, और पूरा वातावरण दिव्यता और संतोष से भर गया।

5 अप्रैल को, हम सभी उच्च स्तर के ध्यान के लिए तैयार थे। सुबह के समय, पहला ध्यान **सालोक्य मुक्ति** के अनुभव के लिए किया गया, जिसमें हमने **विष्णु** लोक का दर्शन किया। जो मैंने वहां अनुभव किया, वह शुद्ध आनंद था। जब मेरा मेरकबा विष्णु लोक के द्वार पर पहुँचा, तो मैं एक इंद्रधनुषी रंगों के बुलबुले वाले सुंदर झील के दृश्य से मोहित हो गई। मैंने स्वयं को एक छोटी नाव में उस झील पर तैरते हुए देखा। अचानक, मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मैं एक अंतहीन बिंदु पर पहुँच गई हूँ, जहाँ झील एक जलप्रपात में परिवर्तित हो गई, और मैं उसमें गिरने ही वाली थी। तभी मैंने श्री विष्णु जी को अनंत शेष पर विश्राम की मुद्रा में देखा, और उनके चरणों में माँ लक्ष्मी प्रकट हुई। अगले ही क्षण, मैंने अपने आराध्य भगवान श्री जगन्नाथ जी को उनके तहिया (विशेष शिरोमणि) के साथ देखा। और तभी मैंने "ॐ", अनहद नाद की ध्वनि को अपने कानों में सुना। यह अनुभव इतना अद्भुत था कि मेरी आँखें अश्रुपूर्ण हो गईं। वह दिव्य दर्शन मेरे लिए परम था।

दूसरा ध्यान **सामीप्य मुक्ति** के अनुभव के लिए किया गया।





तीसरा ध्यान अवचेतन अवरोधों, भय, कर्म संबंधी प्रवृत्तियों आदि को हटाने के लिए था। सर ने हमें सिखाया कि हमारे हृदय ऊर्जा/कोशिकाओं द्वारा उत्पन्न निरंतर, त्वरित स्केलर तरंगों कैसे कार्य करती हैं।

फिर आया आत्मसाक्षात्कार का क्षण, जहाँ मैंने स्वयं को एक चमकती हुई गहरी नीली रोशनी में विलीन होते देखा।

दिन का सबसे अद्भुत अनुभव तब रहा जब हमने श्री विष्णु जी के सुदर्शन चक्र की दिव्य शक्ति के बारे में सीखा। हमने ध्यान के माध्यम से सुदर्शन चक्र का आह्वान करना और इसे सुरक्षा व उपचार के लिए धारण करना सीखा।

इसके बाद, सर ने हमें समझाया कि द्वि-बिंदु ध्यान (Two-Point Meditation) क्वांटम भौतिकी के माध्यम से कैसे कार्य करता है। यह वास्तव में सराहनीय था।

अगला अत्यंत रोचक ध्यान विजयवाड़ा के निकट उंदावली गुफा में स्थित श्री विष्णु जी की प्रतिमा के साथ किया गया। यह अनुभव अविश्वसनीय था। वहां उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति ने जब विष्णु जी की मूर्ति के दाहिने चरण को स्पर्श किया, तो उन्होंने अपने दाहिने हाथ में ऊर्जा प्रवाह को महसूस किया। यह अनुभव अत्यंत अद्भुत था।

6 अप्रैल की सुबह का सत्र चार प्रकार की मुक्ति के लिए निर्धारित चार ध्यान अभ्यासों के लिए समर्पित था। अंतिम लेकिन सबसे गहन ध्यान सायुज्य मुक्ति के लिए किया गया, जो हमारी कल्पनाओं से परे था—विष्णु लोक से आगे की





यात्रा, प्रकाश से गहरे अंधकार की ओर, शून्यता की ओर, शांति से भी अधिक शांत। यह प्रबुद्धता और परम आनंद की यात्रा थी।

हालाँकि ध्यान सत्र वहीं समाप्त हो गया, लेकिन मुझे ऐसा महसूस हुआ कि यह केवल शुरुआत का बिंदु है। दोपहर के भोजन के बाद, सैक्रेड सर्कल के सदस्य अपने घरों की ओर लौटने लगे। 6 अप्रैल की शाम, कुछ लोगों के साथ, सर ने उमिया धाम की गुफा में शिवलिंग के पास हमें ओंकार दीक्षा दी। यह एक अत्यंत गहन ध्यान था, जिसमें मैंने अपने कानों में तीव्र ऊर्जा प्रवाह और स्पंदन को महसूस किया।

इसके बाद आया मेरे प्रिय मार्गदर्शकों से विदाई का क्षण। भावनाओं से भारी हृदय और मुस्कुराते चेहरे के साथ, मैंने उन्हें अलविदा कहा। ओडिशा के हम आठ लोग उस रात उमिया धाम में ही रुके और अगली सुबह हम ओडिशा लौट आए।

नागपुर शिविर के ध्यान के अविस्मरणीय अनुभव और सुंदर यादें हमारे हृदय से कभी मिट नहीं सकतीं। नागपुर शिविर के आयोजकों, जो ऊर्जावान, विनम्र और अत्यंत संगठित युवा थे, उन्होंने हर किसी के दिल पर एक अमिट छाप छोड़ी।

उन सभी का धन्यवाद और सर एवं मैम के प्रति इस दिव्य अनुभव के लिए गहरी कृतज्ञता!

ओंकार मंजरी मिश्रा—डुबुरी, जाजपुर, ओडिशा





चमत्कारी और शक्तिशाली हीलिंग - सुदर्शन चक्र द्वारा!



नागपुर शिविर के पहले दिन, ब्लू एवियन ध्यान और हीलिंग ने गहरी अनुभूतियाँ प्रदान कीं। हालांकि, मैं यह समझ नहीं पाई कि मैं सो गई थी या गहरे ध्यान में चली गई थी। ब्लू एवियन बहुत करीब महसूस हुए, और मैंने उनके प्रति गहरी आत्मीयता अनुभव की।

शिविर के सभी ध्यान अत्यधिक प्रभावशाली थे, लेकिन अंतिम ध्यान के दौरान मुझे एक अनूठा अनुभव हुआ और मैंने गहरे समाधि की अवस्था महसूस की। सुदर्शन चक्र हीलिंग एक चमत्कारी और शक्तिशाली हीलिंग।

मेरे बेटे के लिए चमत्कारी सहायता

मेरा बेटा कंप्यूटर साइंस इंजीनियरिंग के दूसरे वर्ष में पढ़ रहा है और हॉस्टल में रहता है। शिविर से लौटने के बाद, उसने मुझे फोन किया और कहा, **"मुझे बुखार जैसा लग रहा है, लेकिन कल मेरी परीक्षा है। पेपर बहुत कठिन है और मैंने पर्याप्त पढ़ाई नहीं की है।"**





मैंने उसे आश्चस्त किया, ***चिंता मत करो। प्रश्न उन्हीं विषयों से आएंगे जिन्हें तुमने पढ़ा है, और तुम्हारी परीक्षा अच्छी जाएगी।***

मैंने उसे हीलिंग ऊर्जा भेजी, यह कल्पना करते हुए कि ब्लू एवियन उसे अपने पंखों से ढक रहे हैं जबकि वह अपनी उत्तर पुस्तिका लिख रहा है। बाद में, उसके एक दोस्त ने उससे किसी विषय पर चर्चा की और उसे कुछ अध्ययन सामग्री दी। मेरा बेटा पहले उस विषय से अनभिज्ञ था, लेकिन उसने फिर भी उसे पढ़ा। अगले दिन, परीक्षा के प्रश्न ठीक उसी विषय से आए। उसकी परीक्षा बहुत अच्छी हुई।

दिव्य ध्यान अनुभव

1 मई 2025 को ग्रुप में *सालोक्य सामीप्य मुक्ति* ध्यान अपलोड किया गया। 2 मई को सुबह 9:30 बजे, मैंने ध्यान किया और भगवान विष्णु की ऊर्जा महसूस की। मेरी चेतना में प्रकाश दिखाई दिया, और मैंने विराट रूप देखने की प्रार्थना की। धीरे-धीरे वह प्रकाश विस्तृत हुआ और सम्पूर्ण ब्रह्मांड उसमें विलीन हो गया।

जब मैं ध्यान से बाहर आयी, तब 12:30 बजे थे, और मैं अपार आनंद से भर गयी थी।

एक सेवानिवृत्त प्रोफेसर की हीलिंग

एक सेवानिवृत्त प्रोफेसर, जो मेरे साथ काम करती थीं, हाल ही में घुटने की सर्जरी से गुज़रीं। उनके दोनों बेटे नागपुर से बाहर





रहते हैं। जब मैंने उन्हें कहा कि आपसे मिलने के लिए आना है, तो उन्होंने संकोच किया और कहा,

“मुझे चलने में कठिनाई होती है, और दरवाजा खोलना भी मुश्किल है।”*

लेकिन मुझे एक गहरी प्रेरणा महसूस हुई कि मुझे उनसे मिलना चाहिए। मैंने दोबारा उन्हें फोन किया और कहा,

“चाहे आप ना चाहें, मैं फिर भी आपसे मिलने आऊँगी।”*

जब मैं उनके घर पहुँची, तो वहाँ एक 74 वर्षीय परिचित भी मौजूद थे। प्रोफेसर तेज़ दर्द में थीं और डॉक्टर ने उन्हें भारी दर्द निवारक दवाएँ दी थीं। जैसे ही दवा का असर खत्म होता, उन्हें घुटनों में सुई की तरह चुभने वाला दर्द महसूस होता और वे बेचैन हो जाती। मैंने उन्हें भगवान विष्णु के सुदर्शन चक्र से हीलिंग दी। वह 10-15 मिनट तक शांति से बिस्तर पर बैठीं। जब मैंने उन्हें हीलिंग के बाद बुलाया, तो उन्होंने अपनी आँखें खोलीं और कहा,

“सर्जरी के बाद, मैं पाँच मिनट भी ठीक से नहीं बैठ पाती थी। आज पहली बार, मैं बिना दर्द के इतनी देर तक बैठी!”*

उनकी नींद भी सर्जरी के बाद खराब हो गई थी। मैंने उन्हें आश्वासित किया, **“आज रात आप गहरी नींद सोएंगी।”***

अगले दिन शाम 4 बजे उन्होंने मुझे फोन किया और कहा,

“सर्जरी के बाद पहली बार, मैं पूरी रात आराम से सोई!”*

उनके पति भी आश्चर्यचकित थे।





एक 74 वर्षीय व्यक्ति की हीलिंग

जो 74 वर्षीय व्यक्ति सेवानिवृत्त प्रोफेसर के यहा मौजूद थे उन्होंने जो हीलिंग देखी थी, उसने मुझसे अनुरोध किया, ***"क्या आप मेरे घुटनों के लिए कुछ कर सकते हैं? मैं बहुत दर्द में हूँ!"***

मैंने उन्हें सुदर्शन चक्र हीलिंग दी। वह हीलिंग से अनजान थे, लेकिन बाद में उन्होंने कहा, ***"जब आपने आँखें बंद कीं और कुछ किया, तो मुझे मेरे घुटनों से लेकर पैरों तक तीव्र ऊर्जा और कंपन महसूस हुआ। मेरी जांघों तक यह कंपन पहुंची। अब मैं बहुत अच्छा महसूस कर रहा हूँ!"***

अगले दिन, उन्होंने मुझे फिर से फोन किया और कहा, ***"मैडम, मुझे आज गाँव जाना था, लेकिन मैं दर्द के कारण नहीं जा पा रहा हूँ। क्या आप मुझे एक और हीलिंग दे सकती हैं?"***

उस समय मैं अपने एक परिचित के यहा थी। वह व्यक्ति उस परिचित के यहा आये। उनके पैरों में सूजन थी। मैंने उन्हें फिर से सुदर्शन चक्र ऊर्जा से हील किया। जैसे ही हीलिंग शुरू हुई, उन्होंने ऊर्जा महसूस की, और उनकी सूजन मेरी आँखों के सामने कम होने लगी! अगले दिन, उन्होंने मुझे गाँव से संदेश भेजा,





"मैडम, मैं पहले ठीक से चल भी नहीं पाता था। डॉक्टर ने मुझे घुटने की सर्जरी की सलाह दी थी। लेकिन अब, मैं सामान्य रूप से चल सकता हूँ!"

सुदर्शन चक्र से की गई हीलिंग ने अद्भुत परिणाम दिखाए हैं।

डॉ. दीपाली भावे - प्रोफेसर और प्रमुख, इतिहास विभाग,
महिला महाविद्यालय, नागपुर





दिव्य अनुग्रह और परिवर्तन: श्री विष्णु विद्या नागपुर शिविर में मेरी यात्रा



मैं और मेरे मित्रों को 'श्री विष्णु विद्या' नागपुर शिविर की आयोजन टीम का हिस्सा बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

अनुभवों की बात करें तो, शिविर की शुरुआत से लेकर हर कदम पर हमें श्री विष्णु की दिव्य ऊर्जा द्वारा मार्गदर्शन मिला। हमने एक अदृश्य शक्ति की उपस्थिति को महसूस किया, जिसने हमें पूरे

शिविर के दौरान अथक परिश्रम करने में मदद की। योजना बनाते समय हमने कई बाधाओं का सामना किया, लेकिन कार्यान्वयन के समय सबकुछ इस तरह से एकसाथ समाहित हो गया जैसे यह पहले से तय था।

नागपुर शिविर से सीखा गया एक महत्वपूर्ण पाठ यह है कि हर एक चीज़ को श्री विष्णु ने स्वयं पूर्ण रूप से नियोजित और व्यवस्थित किया था, हम तो केवल संचालन के माध्यम मात्र थे। यह हमें उन्हीं चुनौतियों और उनके सहज समाधान से स्पष्ट रूप से समझ में आया।





अंतिम दिन, जब मैं सुदर्शन चक्र सशक्तिकरण के ध्यान में था, तो मैंने अपने शरीर में तीव्र कंपन महसूस किए और मणिपुर चक्र में संकुचन हुआ। यह अनुभव किसी ऊर्जा के मुक्त होने जैसा लगा, और मेरा हृदय चक्र खुल गया, जिससे मेरी आंखों में स्वतः ही अश्रु भर आए। मुझे याद नहीं कि पिछली बार मैं कब एक छोटे बच्चे की तरह रोया था, लेकिन उस दिन ध्यान करते समय मैंने ऐसा अनुभव किया। इसके बाद, मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे कई जन्मों का सारा भार अचानक समाप्त हो गया और मैं अत्यंत हल्का हो गया।

हमें वास्तव में यह समझ नहीं आ रहा कि इन तीन दिनों ने हमारे जीवन में क्या अद्भुत परिवर्तन लेकर आए हैं।

हमारे प्रिय सर और मैडम को ढेर सारा प्रेम और आभार।

- भावेश, नागपुर के एक छात्र





परम ब्रह्म से एकत्व की परम अनुभूति



प्रणाम मैडम एवं प्रणाम सर,

4 अप्रैल को ध्यान के दौरान, थीटा तकनीक का उपयोग करते हुए, मैं अलौकिक जगत में पोहोँची और विष्णुजी ने मेरे हाथ में प्रज्वलित दीप प्रदान किया। इसके बाद, आपने हमें सेक्रेड सरकल के मुख्य प्रतीक के रूप में दीप को धारण करने का अर्थ बताया।

5 अप्रैल को ध्यान के दौरान, जब मैंने **पिलर्स ऑफ लाइट** तकनीक का प्रयोग किया और मर्कबा विधि से मैं सुरंग पार कर क्षीरसागर के समक्ष पहुँची, वहाँ मैंने शेषनाग के दर्शन किए। मैंने शीश नवाया और आगे बढ़ते हुए अनंतशयन मुद्रा में भगवान विष्णु के दर्शन किए। जब भी मैं ध्यान करती हूँ, मैं लीना मैम को देखती हूँ। फिर, मैंने लक्ष्मी माता के दिव्य चरणों में पुष्प अर्पित किया, और उसके तुरंत बाद, मैंने पुनः लीना दीदी को देखा, इस बार वे महालक्ष्मी स्वरूप में थीं।

अगले ध्यान सत्र में, मैं परम ब्रह्म से साक्षात् मिल सकी और मेरे पिछले जन्मों के समस्त कर्मों का शुद्धिकरण हो गया। मैं उन्नति





के पथ पर अग्रसर हो सकी, और यही मेरे जीवन के दिव्यता की ओर नए अध्याय की शुरुआत थी।

ध्यान योग के माध्यम से परम ब्रह्म से एकत्व की अनुभूति अद्वितीय थी और इसे शब्दों में व्यक्त करना असंभव है।

भगवान नारायण को कोटि-कोटि धन्यवाद। हमारे प्रिय सर और मैडम को ढेर सारा प्रेम और आभार।

- शिखा बिस्वास, ओडिशा





मेरे पहले शिविर का अनुभव— शब्दों से परे एक यात्रा



मैं मार्शल महेंद्र उके, 23 वर्ष का हूँ, और महाराष्ट्र के नागपुर के निकट स्थित एक छोटे किन्तु शांत शहर भंडारा से हूँ।

जो अनुभव मैं साझा करने जा रहा हूँ, वह मात्र एक घटना नहीं, बल्कि मेरे जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ है— ऐसा कुछ जिसे शब्दों में पूर्ण रूप से समेट पाना कठिन है।

इससे पहले, मुझे शिविर के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। मेरी आध्यात्मिकता से जुड़ाव केवल रविवार के ध्यान सत्रों तक सीमित था, जो मैं दिवाकर सर के मार्गदर्शन में करता था। वे सत्र भी मेरे लिए अक्सर चमत्कारी लगते थे— कभी शांति की हल्की झलक, तो कभी गहरे मौन के क्षण जो मेरे हृदय के उन स्थानों को छूते थे जहाँ शब्द भी नहीं पहुँच सकते। अध्ययन और आध्यात्मिक साधना के बीच संतुलन बनाए रखना चुनौतीपूर्ण था, विशेष रूप से जब मेरी परीक्षाएँ निकट थीं। परंतु जैसा कि कहते हैं, *जब कुछ अच्छा होने वाला होता है, तो वह स्वयं अपना मार्ग बना लेता है*। किसी दिव्य और रहस्यमय तरीके से, जीवन ने मुझे इस शिविर में भाग लेने का अवसर दिया। मैं अत्यंत धन्य महसूस करता हूँ कि मुझे इसका हिस्सा बनने का अवसर मिला। यह मेरे जीवन का पहला





शिविर था— और इसने मेरी आध्यात्मिकता, दिव्य ऊर्जा और आशीर्वादों की समझ को पूर्ण रूप से परिवर्तित कर दिया।

वह क्षण जिसे मैं सदैव अपने साथ संजो कर रखूँगा, वह था जब दिवाकर सर ने हमें पवित्र उंदावली गुफाओं की ध्यान यात्रा कराई। उस ध्यानावस्था में, जब हम सभी ने मिलकर भगवान श्री विष्णु जी के चरणों को छुआ तो मेरे भीतर एक अवर्णनीय ऊर्जा प्रवाह उमड़ पड़ा। यह अनुभव दिव्य था... यह अद्भुत था... ऐसा लगा मानो समय, स्थान और यहाँ तक कि मेरा शारीरिक अस्तित्व भी उस क्षण में विलीन हो गया। और जब मैंने सोचा कि यही अनुभव का चरम बिंदु था, तभी सर ने कहा कि *विष्णु जी आप पर दृष्टि डाल रहे हैं और अपने तीसरे नेत्र के माध्यम से आपसे जुड़ रहे हैं*। जैसे ही मैंने इस पर ध्यान केंद्रित किया, मैंने अनुभव किया कि भगवान विष्णु जी के तीसरे नेत्र से एक अत्यंत शक्तिशाली ऊर्जा प्रवाह सीधे मेरे तीसरे नेत्र तक पहुँच रहा है। ऐसा लगा मानो एक चमकदार, प्रकाशमान गोले ने मेरी भौहों के मध्य अपना स्थान बना लिया हो। यह अनुभव वास्तविक और अत्यंत दिव्य था। इसे शब्दों में पूरी तरह व्यक्त कर पाना लगभग असंभव है— किंतु उस क्षण मैं जान गया कि मैं किसी ऐसी ऊर्जा के प्रत्यक्ष संपर्क में हूँ जो इस संसार से कहीं आगे है।

शारीरिक और भावनात्मक रूप से, इस शिविर ने मुझे गहराई से परिवर्तित किया है। तब से लेकर आज तक, मैं निरंतर ऐसा अनुभव करता हूँ मानो मैं हर क्षण दिव्य मार्गदर्शन और दिव्य उपस्थिति में हूँ। मेरे भीतर एक मौन आश्वासन, एक शांत आत्मविश्वास और एक अडिग शांति है— जो मैंने इससे पहले कभी अनुभव नहीं की थी।

एक अन्य सुंदर आशीर्वाद था सेवा। पहली बार, मुझे समन्वयक टीम का हिस्सा बनने का अवसर मिला। मेरे लिए सबकुछ नया





था, फिर भी पूरी यात्रा के दौरान, मैंने लगातार उस दिव्य शक्ति का अनुभव किया जो हमें सहायता प्रदान कर रही थी। हमारी टीम की निरंतर सक्रियता हो या कार्यों का सहज प्रबंधन—सबकुछ अत्यंत सरलता और आनंद के साथ हुआ। विकास सर, पराग दादा, भावेश भैया, मनोरथ भैया, दिलेश भैया, और श्रेयश भैया से प्राप्त मार्गदर्शन और प्रेरणा ने मुझे एक व्यक्ति के रूप में विकसित होने में मदद की। आत्मविश्वास, सहजता और आनंद के साथ सभी कार्यों को संभालना इतना स्वाभाविक लगा— और अब मैं समझता हूँ कि यह सब उस दिव्य शक्ति और आशीर्वाद के कारण था जो हम सभी के भीतर प्रवाहित हो रहा था।

मैं इस शिविर में उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति, अपने सभी समन्वयक साथियों, और विशेष रूप से दिवाकर सर और लीना मैम के प्रति अपनी गहन कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ— जो इस संपूर्ण दिव्य अनुभव के आधार स्तंभ हैं। उनका निःस्वार्थ मार्गदर्शन, प्रेमपूर्ण ऊर्जा, और हमारी आध्यात्मिक वृद्धि के प्रति उनकी प्रतिबद्धता ने मेरे हृदय पर एक अमिट छाप छोड़ी है।

करबद्ध होकर और आभार से परिपूर्ण हृदय के साथ, धन्यवाद, धन्यवाद, धन्यवाद।

- मार्शल महेंद्र उके, भंडारा, महाराष्ट्र





सबकुछ प्राप्त हो चुका था



हम 3 अप्रैल को शाम 6:30 बजे माँ उमिया धाम मंदिर पहुँचे। आदरणीय सर और मैडम से मिलना अत्यंत भावपूर्ण अनुभव था। अन्य साधकों से मिलना किसी परिवार के पुनर्मिलन जैसा लगा, मानो हम लंबे समय से बिछड़ी आत्माएँ फिर से एकत्रित हो रही हों।

रात्रि भोजन के पश्चात ध्यान सत्र हुआ, जो मेरे लिए अत्यंत संतोषजनक और असाधारण था। मेरी हथेलियाँ ठंडी पड़ गई थीं, और मुझे ध्यान अवस्था से बाहर आने में कठिनाई हो रही थी। मुझे स्वयं को जबरन वापस लाना पड़ा। उस दिन, मैं ध्यान से लौटने वाला अंतिम व्यक्ति थी। ध्यान के दौरान, मैंने माँ को स्वर्णिम प्रकाश में सिंह पर आरूढ़ देखा—उस समय नवरात्रि का पर्व था। मंदिर में हर दिन कुछ नया सीखने को मिल रहा था।

4 अप्रैल को पहले सत्र में, मैंने ब्लू एवियन पर ध्यान किया और उनकी ऊर्जा तथा उपस्थिति को अनुभव किया। दूसरे सत्र में, मैंने विष्णुजी के दस अवतारों पर ध्यान किया, जिससे मेरे तीसरे नेत्र में तीव्र ऊर्जा और कंपन महसूस हुए। तीसरे सत्र में, मैंने विष्णु ज्योति पर ध्यान किया, जो मेरे हृदय में गहराई से समा





गई। यह ध्यान अत्यंत अद्भुत था—बाद में, जब भी मैं ध्यान करती, मैं विष्णु ज्योति को अपने हृदय में अनुभव करती, मानो विष्णुजी स्थायी रूप से मेरे भीतर विराजमान हो गए हों, और केवल उन्हें स्मरण करने से ही उनकी उपस्थिति प्रकट हो जाती।

5 अप्रैल को पहले सत्र में, मैंने *सायुज्य मुक्ति* पर ध्यान किया, जहाँ मैंने एक स्वर्णिम द्वार और स्वर्णिम महल देखा, जो प्रकाश से आलोकित था। दूसरे सत्र में, मैंने आत्मबोध पर ध्यान किया, जिसमें मेरी दोनों हथेलियों में दिव्य प्रकाश का उदय हुआ, जिसे मैं अपनी आँखों में रखना चाहती थी। बाद में सर ने हमें यही करने का निर्देश दिया। उस क्षण, मैंने नीले प्रकाश में अनगिनत तारों को देखा, और उनमें मेरी चेतना एक उज्ज्वल श्वेत प्रकाश के रूप में समस्त ब्रह्मांड में विस्तारित हो गई।

तीसरे सत्र में, मैंने चार प्रकार की मुक्ति पर ध्यान किया और *दो-बिंदु विधि* के माध्यम से विष्णुजी के सुदर्शन चक्र से जुड़ी। यह एक अत्यंत शक्तिशाली और अद्भुत ध्यान अनुभव था। मैंने *उंदावली गुफा मंदिर* में भगवान विष्णु की मूर्ति की ऊर्जा को भी गहराई से अनुभव किया। विष्णुजी के तीसरे नेत्र को अपने तीसरे नेत्र से जोड़ने पर वास्तविक कंपन उत्पन्न हुआ। जब मैंने विष्णुजी से एकत्व प्राप्त किया, तो यह अनुभव हुआ कि उनकी दिव्य शक्तियाँ वास्तव में मेरे भीतर समाहित हो गई हैं।

6 अप्रैल को पहले सत्र में, मैंने पुनः चार प्रकार की मुक्ति पर ध्यान किया, जो अत्यंत शांति प्रदान करने वाला था। बीच-बीच में भजन बज रहे थे, और हम सभी उनमें खो गए, जिससे हमने





दिव्य गहन शांति का अनुभव किया। हॉल की ऊर्जा अद्भुत थी, और जैसे ही हम प्रवेश करते, उसका प्रभाव हमें महसूस होता। वे क्षण अविस्मरणीय थे। 6 अप्रैल का अंतिम ध्यान सत्र अत्यंत उच्च स्तर का था, यहाँ तक कि *वैकुंठ लोक* से भी परे। यह पूर्ण आत्मबोध ध्यान था, जहाँ हमने वैकुंठ लोक से बहुत दूर यात्रा की—पहले प्रकाश में, फिर अंधकार में, जहाँ हमने अपनी चेतना को स्थिर किया, और फिर प्रकाश में वापस लौटे। यह अनुभव शब्दों से परे था। इसके पश्चात, ऐसा लगा कि इस ध्यान से अधिक कुछ भी संभव नहीं हो सकता, मानो परम शांति मेरे हृदय में स्थायी रूप से समाहित हो गई हो, जैसे सबकुछ प्राप्त हो चुका हो।

वहाँ से लौटने के बाद भी, कुछ अनुभव इतने गहन थे कि उन्हें शब्दों में व्यक्त कर पाना लगभग असंभव लगता है... वापस आने के 15 दिनों तक, मुझे ऐसा लगा मानो मैं पहले ही उन क्षणों को जी चुकी हूँ, और अब सबकुछ केवल एक दृश्य या नाटक के रूप में घटित हो रहा है। प्रत्येक घटना—चाहे मैं किसी से बात कर रही थी या कोई कार्य कर रहा था—किसी शो या धारावाहिक का एक दृश्य प्रतीत हो रही थी। यह वास्तव में दिव्य और असाधारण था...

- इशिका साहू, धमतारी, छत्तीसगढ़





अनुग्रह से आलोकित: मेरी आध्यात्मिक यात्रा



पिछले दो वर्षों से, मेरी आत्मा सेक्रेड सर्कल की दिव्य कृपा से धन्य हो रही है—एक ऐसी यात्रा जिसने मेरे मार्ग को प्रकाशित किया और मेरे सम्पूर्ण अस्तित्व को रूपांतरित कर दिया। जब मैं आदरणीय सर और मैडम के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करने का प्रयास करती हूँ, तो शब्द कम पड़ जाते हैं—वे केवल मार्गदर्शक नहीं बल्कि ज्ञान और करुणा के दिव्य प्रकाश स्तंभ हैं। मुझे अक्सर ऐसा लगता है

कि यह मेरे पूर्व जन्मों के कर्मों का फल है, जिसके कारण मैं इस जीवन में उनसे जुड़ पाई, वे गुरु रूप में मेरी चेतना को जागृत करने आए हैं। उनकी शिक्षाएँ केवल शब्द नहीं, बल्कि *दिव्य प्रकृतियाँ* हैं, जो वैज्ञानिक सिद्धांतों से अद्भुत रूप से बुनी गई हैं, जिससे गूढ़ ज्ञान सहजता से उपलब्ध हो जाता है और आध्यात्मिक रहस्य मूर्त रूप में प्रकट होते हैं। उन्होंने न केवल पवित्र ज्ञान प्रदान किया बल्कि इसे इतनी स्पष्टता के साथ संप्रेषित किया कि सबसे जटिल सत्य भी सहज रूप से हृदय में गूँजने लगे।

नागपुर शिविर के दौरान, मुझे एक ऐसे अनुभव से सुशोभित किया गया जो सामान्य अनुभव की सीमा से परे था—एक दिव्य जागरण जिसने मेरे अस्तित्व के मूल को छू लिया। 3 अप्रैल की





रात, *रायपुरे सर* ने सभी साधकों को ध्यान हॉल में बुलाया, जहाँ उन्होंने सभी दिव्य शक्तियों को आमंत्रित कर उनके आशीर्वाद लिए और सकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न की। फिर, हमने *ड्रैगन ध्यान* किया। यह अनुभव अत्यंत अद्भुत था। दिव्य शक्तियों का आह्वान करने के बाद, मैं उन्हें स्पष्ट रूप से देख सकी। मैंने कई ऋषियों को देखा, *जैन मुनियों* की उपस्थिति भी अनुभव की। *स्वर्णिम मंदिर* के दर्शन हुए और अनेक देवी-देवताओं के साथ-साथ *भगवान गणेशजी की स्वर्णिम मूर्ति* भी देखी। हमारे ध्यान हॉल की ऊर्जा अत्यंत दिव्य और पवित्र प्रतीत हो रही थी।

ब्लू एवियंस ध्यान के दौरान, मैंने *एवियंस* को देखा—वे नीले रंग के थे और छाया के रूप में प्रतीत हो रहे थे। उनकी उपस्थिति में मुझे अत्याधिक *ऊर्जा और उपचार* महसूस हुई, जिससे मैं अधिक ऊर्जावान और हल्का अनुभव करने लगी। फिर, मैंने *स्वर्णिम प्रकाश* देखा और साथ ही अधिक एवियंस के दर्शन भी हुए। *सुदर्शन चक्र ध्यान* का अनुभव एक अलग ही स्तर का था। ध्यान के दौरान, मैंने *सुनहरे रंग का सुदर्शन चक्र* देखा, जो *भगवान विष्णुजी* के हाथों में था। सुदर्शन चक्र की ऊर्जा का उपयोग करके, मैंने अपने *सभी चक्रों की अशुद्धियों को दूर* किया और अपने शरीर और आत्मा में दिव्य ऊर्जा और प्रकाश को अनुभव किया। *वैकुंठ यात्रा ध्यान* का अनुभव भी अतुलनीय था। मैंने *भगवान विष्णुजी को क्षीर सागर में शेषनाग पर शयन करते हुए* देखा। उनके चारों ओर *अनेक वृक्ष, पर्वत और हरियाली* थी, जिससे यह पृथ्वी के समान वातावरण प्रतीत हो रहा था।

उंदावली गुफा ध्यान सत्र के दौरान, मैंने अपने शरीर में *तीव्र ऊर्जा और कंपन* अनुभव किया। नागपुर शिविर से मुझे अपार





लाभ प्राप्त हुआ। अब मैं अपने सभी कार्यों को स्वतः पूर्ण कर सकती हूँ, वह भी बिना किसी चिंता के। आदरणीय सर और मैडम को कोटि-कोटि धन्यवाद एवं कृतज्ञता।

- वनीता गायकवाड़, सांगली





गुरुओं का आशीर्वाद: दिव्य क्षेत्र की यात्रा



आदरणीय मैडम एवं सर को
सादर प्रणाम,

नागपुर शिविर का अनुभव
दिव्य और असाधारण था। इस
शिविर में प्रत्येक साधक ने
अनेक आध्यात्मिक अनुभूतियाँ
प्राप्त कीं। वहाँ केवल उपस्थित
होना ही अपने आप में सबसे
बड़ा आशीर्वाद था।

3 अप्रैल की दोपहर, हम
उमिया धाम पहुँचे। यह हमारा पहला *ऑफ़लाइन शिविर*
था, और हमारे मन उत्साह और अपेक्षाओं से भर गए थे। उसी
शाम, हमें *मैडम* और *सर* से मिलने का सौभाग्य प्राप्त होने
वाला था।

जब हम *मैडम* और *सर* से मिलने के लिए ध्यान हॉल पहुँचे,
तो वातावरण ऐसा था मानो हम लंबे समय बाद अपने प्रियजनों
से मिल रहे हों। उसी रात, हम ध्यान हॉल में *मैडम* और *सर*
के साथ बैठे और दिव्य शक्तियों का आह्वान किया। ऐसा प्रतीत
हो रहा था मानो पूरा हॉल *पवित्र ऊर्जा* से भर गया हो।





4 अप्रैल को दिन की शुरुआत सुबह 5:30 बजे *मैडम* के नेतृत्व में *माँ उमिया देवी मंदिर* के चारों ओर *प्रभात भ्रमण* से हुई। उन्होंने हमें *प्राणायाम की विभिन्न तकनीकें* सिखाई, जिससे हमें अपार लाभ प्राप्त हुआ।

सुबह 9 बजे सत्र प्रारंभ हुआ। हमने *चार मुक्तियाँ* और *भगवान विष्णु के दस अवतारों* के बारे में ज्ञान प्राप्त किया। ध्यान सत्र के दौरान, *सर* ने हमें *वैकुंठ धाम* की यात्रा कराई, जहाँ *स्वर्णिम ऊर्जा* चारों ओर फैली हुई थी। हमने *जय और विजय*, द्वारपालों से भेंट की, और जैसे ही हमने प्रवेश किया, हम *नीले प्रकाश* से आच्छादित हो गए। *क्षीर सागर* में, हमें भगवान *विष्णुजी* के दर्शन हुए, वे शेषनाग पर शयन कर रहे थे, और *माँ लक्ष्मी* उनके समीप विराजमान थीं। हमारे मन ने कामना की कि यह ध्यान कभी समाप्त न हो... ऐसा अनुभव हुआ मानो हम *वास्तव में वैकुंठ धाम* पहुँच गए हों।

सर ने हमें *दो-बिंदु तकनीक* सिखाई और *प्रकाश से शून्यता* की यात्रा पर मार्गदर्शन किया। *सुदर्शन चक्र* का अनुभव करना, उसे धारण करना और उसकी अपार शक्ति को महसूस करना अद्भुत था। प्रत्येक क्षण पूरी *सजगता* के साथ जिया गया।

उस समय, मुझे एक *महान आत्मा—एक संत* द्वारा कहे गए शब्द याद आए, जिन्होंने कभी मुझसे कहा था, *"इस जन्म में तुम सचखंड (वैकुंठ धाम) तक पहुँचोगे।"* आज, मैंने उन शब्दों





को साकार होते देखा। मेरी आँखों से *अश्रु* निरंतर बहते रहे...
वह पवित्र स्थान *स्वर्ग* से कम नहीं था।

सर और *मैडम* मेरे जीवन में *भगवान के दिव्य आशीर्वाद*
के रूप में आए हैं। मैं आप दोनों का *सदा के लिए आभारी* हूँ।

- पद्मिनी शर्मा (कलाकार), ओडिशा





कृतज्ञता और अनुग्रह: शिविर के मेरे अविस्मरणीय दिन



नमस्ते! मैं जॉली बसु, नागपुर की एक बी.एस.सी और एमबीए स्नातक हूँ। पहले मैं कार्यरत थी, लेकिन स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के कारण अब मैं गृहिणी हूँ।

विष्णु विद्या शिविर मेरे लिए एक दिव्य और चमत्कारिक अनुभव से कम नहीं रहा, जिसने मुझे अनेक उपलब्धियाँ प्रदान कीं।

मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि मैं आवासीय शिविर में भाग ले सकूँगी, क्योंकि मेरे स्वास्थ्य की स्थिति और शारीरिक सीमाओं ने हमेशा मुझे रोक रखा था—यहाँ तक कि मुझे रात में कुर्सी पर सोना पड़ता था। लेकिन जैसे ही मैंने माँ उमिया धाम में कदम रखा, ऐसा अनुभव हुआ मानो मैंने एक पवित्र क्षेत्र में प्रवेश कर लिया हो, जैसे कोई देवदूत दिव्य लोक में प्रविष्ट हो रहा हो। आयोजन टीम की उष्मा और करुणा ने मुझे तुरंत आत्मीयता से भर दिया, उनकी करुणा और प्रेम ने मुझे अभिभूत कर दिया। हर संवाद में वही प्रेम और देखभाल झलक रही थी, जो हमारे आदरणीय गुरु, श्री दिवाकर रायपुरे सर और लीना माँ में समाहित है।





इस शिविर में मेरे लिए सबसे प्रतीक्षित क्षण था लीना माँ और सर से प्रत्यक्ष मिलना। जब मैंने उनका प्रेमपूर्ण आलिंगन पाया, तो आनंद से अभिभूत हो गई। उस रात—3 एप्रिल की रात—से लेकर 6 एप्रिल की रात तक, मैं शांति से बिस्तर पर सो सकी, जो मैंने पिछले दस वर्षों से अनुभव नहीं किया था।

4 एप्रिल, हमने अवचेतन बाधाओं को दूर करने की यात्रा शुरू की, जिसने घर से दूर रहने को लेकर मेरी सभी शंकाओं को समाप्त कर दिया। एक सत्र में, हमें वैकुंठ लोक की दिव्य यात्रा कराई गई, जहाँ मैंने अद्भुत स्पष्टता के साथ भगवान विष्णुजी की त्रि-आयामी प्रतिमा के दर्शन किए।

बाद में उस शाम, सर हमें उंदावली गुफाओं की दिव्य यात्रा पर ले गए। जब मैंने वहाँ विष्णुजी की मूर्ति को देखा, तो मैं अचंभित रह गई—यह वही त्रि-आयामी प्रतिमा थी, जिसे मैंने सुबह के ध्यान सत्र के दौरान देखा था। जैसे ही मैंने विष्णुजी के चरणों को स्पर्श किया, मेरे शरीर में अद्वितीय दिव्य ऊर्जा का प्रवाह हुआ, जिसने मुझे अवर्णनीय शक्ति और कनेक्शन से भर दिया।

अगले दिन, मैं एक और दिव्य आश्चर्य की प्रतीक्षा कर रही थी। सर ने हमें भगवान विष्णुजी के सुदर्शन चक्र के पवित्र प्रतीक से सशक्त किया। जैसे ही हमें चक्र का उपयोग करने का निर्देश मिला, मैंने अपनी रीढ़ में शक्तिशाली ऊर्जा प्रवाहित होते हुए अनुभव की—यह एक अभूतपूर्व अनुभूति थी। आमतौर पर, मैं उस स्थान पर कुछ भी महसूस नहीं कर पाती थी, लेकिन इस बार, ऊर्जा स्पष्ट रूप से अनुभव हो रही थी।





इस यात्रा के सबसे यादगार क्षणों में से एक था पाटीवाली वाली आई से मिलना—यह एक अत्यंत दिव्य अनुभव था जिसने मेरी आध्यात्मिक यात्रा को और गहराई प्रदान की। यह शिविर मेरे लिए एक अद्वितीय आशीर्वाद रहा, मेरे आध्यात्मिक जागरण में एक महत्वपूर्ण मोड़। मैं दिवाकर सर और लीना माँ को अपनी गहनतम कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने मेरे मार्ग को प्रकाशित किया और मेरी आध्यात्मिक यात्रा को अत्यंत दिव्य बना दिया।

आप दोनों का असीम धन्यवाद!

- जॉली बसु, नागपुर





शून्यता से पूर्णता की ओर: मेरी दिव्य उपस्थिति की यात्रा



नमस्ते मेरे प्रिय विष्णु
सायुज्य साधकों,

मुझे फरवरी 2023 में
पहली बार सेक्रेड सर्कल के
ऑनलाइन सत्र में एक
गहन अनुभव हुआ। तब से,
मैं हर रविवार ऑनलाइन
सत्र में भाग ले रही हूँ। इस
अवसर की प्रतीक्षा करती
थी कि कब मुझे दीवाकर
सर और लीना मैडम से

व्यक्तिगत रूप से मिलने का सौभाग्य मिलेगा। इसलिए जब
उन्होंने शिविर की घोषणा की, तो मैं अत्यंत उत्साहित हो गई।
इस शिबीर की यात्रा के माध्यम से, मैं अन्य प्रतिभागियों के बीच
एक नया परिवार पा चुकी हूँ।

जब हम माँ उमिया धाम पहुंचे, तो मुझे सबसे पहला संदेश
रायपुर सर से मिला: **"बहुत सजग रहें — वर्तमान में रहें।"**





मैंने प्रयास किया, लेकिन ईमानदारी से कहूँ तो, मैंने सोचा: **"यह मेरे जैसे लोगों के लिए नहीं है; शायद यह ज्ञानी आत्माओं के लिए है।"** लेकिन जैसे ही शिविर शुरू हुआ, सब कुछ बदल गया।

पहले ध्यान सत्र के दौरान, ऐसा महसूस हुआ जैसे मैं स्वर्ग में प्रवेश कर गई हूँ। भले ही हम उन्हें अपनी भौतिक आँखों से न देख सके, मैंने खगोलीय गुरुओं और ब्रह्मांडीय सत्ता की उपस्थिति को गहराई से अपने हृदय में महसूस किया। मैं एक गहन ध्यान अवस्था में प्रवेश कर गई और अपनी रीढ़ की हड्डी में मस्तिष्कमेरु द्रव का प्रवाह अनुभव किया।

शायद यही मनुष्यों और पशुओं के बीच सच्चा अंतर है—हमारे पास भीतर जाने, गहन ध्यान में प्रवेश करने और भौतिक दुनिया से परे सत्य को देखने की पावन क्षमता है।

फिर सर ने भगवान विष्णु के अवतारों के बारे में बात की—वह हमसे कितनी गहराई से प्रेम करते हैं, कितनी बार वे पृथ्वी पर हमारी रक्षा और मार्गदर्शन के लिए अवतरित हुए। उस क्षण, मैंने विष्णु से एक दिव्य, पितृ-संबंध महसूस किया। मैंने उनसे हृदय की बात की: मैं: **"कृपया मेरे छोटे हृदय में सदा बने रहें, ताकि मैं हमेशा वर्तमान में रह सकूँ।"** फिर, जब रायपुरे सर ने हमें अपनी बंद आँखों पर हाथ रखने का निर्देश दिया, कुछ अद्भुत हुआ—मैंने पूरे ब्रह्मांड को अपने सामने खुलते देखा। जितना मैं भीतर जाती, उतनी गहराई तक प्रवेश करती गई। यह अनंत था।





कोई सीमा नहीं थी। जितना भीतर यात्रा करती, उतना और गहरा विस्तार होता—ऐसा जैसे समस्त ब्रह्मांड मेरे भीतर ही समाहित था। भगवान विष्णु ने उत्तर दिया: **"तुम मेरे विशाल हृदय में रहो।"**

उस क्षण, मैं अपने आँसुओं को रोक नहीं पाई। उन्होंने मुझे कोमलता से याद दिलाया: **"मैं सदा तुम्हारे साथ हूँ। तुम्हें बस मुझे हर चीज़ में अनुभव करना है।"**

सर के मार्गदर्शन में, हमने वैकुंठ लोक की यात्रा की, जहाँ मैंने भगवान विष्णु और देवी लक्ष्मी से एक गहरी आत्मिक जुड़ाव महसूस किया। मैंने दिव्य गमन के बारे में पहले सुना था—लेकिन यहाँ, मैंने इसे सचमुच अनुभव किया। मैंने विष्णु को कई रूपों में अनुभव किया—दृश्य के माध्यम से, हृदय से, उपस्थिति के भाव से।

बचपन से सुना था कि ईश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ और सर्वव्यापक हैं। लेकिन इस शिविर में, मैंने केवल सुना ही नहीं, मैंने इसे जिया। मैंने भगवान विष्णु को अपने शरीर की प्रत्येक कोशिका में, एक सुई की नोक जितने छोटे रूप में अनुभव किया। और फिर... उन्होंने अपना विश्वरूप प्रकट किया—वह दिव्य ब्रह्मांडीय स्वरूप।

सर के ज्ञान से, हमने स्थितिज और गतिज ऊर्जा, शून्य गुरुत्वाकर्षण, द्विबिंदु चिकित्सा, क्वांटम उलझाव (entanglement), डीएनए सक्रियण और स्केलर तरंगों जैसे विषयों का अन्वेषण किया।





और शिविर के अंत तक, मुझे अहसास हुआ—वर्तमान में रहना वास्तव में सरल है। यह स्वाभाविक है। एक महीने बाद भी, मैं स्थिर और केंद्रित हूँ। वे चार दिन मेरे जीवन के सबसे सुंदर और परिवर्तनकारी दिनों में से थे। मैंने हर क्षेत्र में सकारात्मक बदलाव देखे—यहाँ तक कि मेरी पुरानी पीठ दर्द भी कम हो गई। मैं प्रेम और कृतज्ञता से माँ लीना और पापा दीवाकर को नमन करती हूँ। मैं स्वयं को धन्य मानती हूँ कि मुझे आप दोनों मिले। हृदय की गहराइयों से धन्यवाद।

कभी-कभी, मैं अपने अनुभव पर प्रश्न उठाती हूँ। क्या ये दृश्य मात्र भ्रम हैं—या सत्य? मैं नहीं जानती। लेकिन मेरे भीतर कुछ गहराई से फुसफुसाता है: विष्णु—परब्रह्म—और मैं अलग नहीं हूँ। यह दिव्य ऊर्जा हर जीव में प्रवाहित होती है।

हम अलग-अलग आत्माएँ नहीं हैं, बल्कि एक ही स्रोत के प्रतिबिंब हैं। मुझे कामना है कि पूरी दुनिया इस एकता को जागृत करे—इस पवित्र अंतर-संबंध को। क्योंकि जब यह समझ आती है, तब शांति संभव होती है। अगर हम एक-दूसरे में विष्णु को देख सकें, क्या हम चोट पहुँचाएँगे? क्या हम घृणा करेंगे? या फिर हम अधिक प्रेम करेंगे—और अधिक सौम्यता से जीवन बिताएँगे?

यही मैं अनुभव करने लगी हूँ। और मुझे आशा है—सच्चे हृदय से—कि एक दिन, हम सब यह अनुभव करेंगे।

— शीतल शिरुरकर, सिविल इंजीनियर बेंगलुरु, कर्नाटक





पवित्र बंधन: आत्मा की यात्रा



माँ और सर को प्रणाम,

सैक्रेड सर्कल के पहले ऑफलाइन शिविर में हम सभी ने उत्साह, उमंग और अपार आनंद का अनुभव किया। माँ, सर और सभी साधकों से मिलना ऐसा था जैसे जन्मों से जुड़े बंधनों को पुनः अनुभव कर रहे हों।

हालाँकि माँ और सर उच्च ज्ञान के मार्गदर्शक हैं, फिर भी उनकी सादगी ने हृदय को गहराई से छू लिया। हमारा पहला सत्र —**ब्लू एवियंस**—अत्यंत दिव्य था। ध्यान के दौरान, दोनों ब्लू एवियंस ने अपने पंखों से शरीर और चेतना को आवृत कर लिया।

एक उज्ज्वल नीली प्रकाश ऊर्जा ने शरीर और आभा को घेर लिया। जब सर ने हमें लेटने के लिए कहा, मैंने देखा कि दोनों ब्लू एवियंस थोड़ी दूरी पर बैठे थे, और उनके भीतर से नीली ऊर्जा नदी की तरह प्रवाहित हो रही थी। इस प्रवाह में बहुरंगी ऊर्जा कण प्रवाहित हो रहे थे और शरीर में समाहित हो रहे थे।

कितने सौभाग्यशाली हैं हम! केवल तीन दिनों में मैंने इतना कुछ अनुभव किया कि उसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन है। हमारे प्रिय सर और मैडम को हृदय से कृतज्ञता।

शिवानी श्रीवास्तव, जगदलपुर





हरिद्वार से नागपुर: एक आत्मिक तीर्थयात्रा



सर और मैडम को प्रणाम,

नागपुर शिविर में भाग लेने के लिए, मैंने हरिद्वार (उत्तराखंड) से लंबी यात्रा की। जीवन में, किसी उद्देश्य की प्राप्ति के मार्ग में कई बाधाएँ आती हैं। हमें उलझनों में फंसने के बजाय निरंतर आगे बढ़ते रहना चाहिए। मैंने भी ऐसी चुनौतियों का सामना किया... फिर भी मैं

आगे बढ़ती रही... और अंततः वह दिन आया—3 अप्रैल 2025—जब मेरा हृदय आनंद और उत्साह से भर गया। मैं माँ उमिया के पवित्र धाम पहुँची।

शाम को मुझे सर और मैडम के दर्शन का सौभाग्य मिला। उस क्षण के अनुभव को शब्दों में व्यक्त करना मेरे लिए अत्यंत कठिन है। सभी साधक ध्यान कक्ष में एकत्र हुए... हर चेहरे पर दिव्य आनंद छलक रहा था। सर और मैडम ने ईश्वरीय ऊर्जा का आह्वान किया... और पूरा कक्ष दिव्य ऊर्जा से भर गया।

4 अप्रैल 2025, प्रातः 5 बजे, मैंने खुद को तैयार किया और मंदिर परिसर में मैडम द्वारा संचालित सुबह की सैर और प्राणायाम सत्र में भाग लिया—यह सचमुच अद्भुत अनुभव था।





नाशते के बाद, सभी साधक पुनः ध्यान कक्ष में एकत्र हुए। गुरु वंदना के साथ सर और मैडम का स्वागत किया गया। ध्यान सत्र आरंभ हुआ... सर ने मोक्ष के चार प्रकार की अवधारणा को समझाया...

ध्यान अत्यंत सहज और सरल रूप से संपन्न हुआ... हृदय चक्र में कंपन उत्पन्न हुआ... यह एक अविस्मरणीय और दिव्य अनुभव था।

5 अप्रैल 2025 के ध्यान सत्र के दौरान, मेरकाबा का उपयोग करके हम विष्णु लोक – वैकुंठ धाम पहुंचे... पूरा दृश्य स्वर्णिम प्रकाश से भरा हुआ था। क्षीर सागर में भगवान विष्णु अनंत शयन में विराजमान थे... देवी लक्ष्मी उनके चरणों की सेवा कर रही थीं... प्रभु की मृदु मुस्कान से एक दिव्य प्रकाश मेरे हृदय चक्र को स्पर्श कर गया... फिर धीरे-धीरे हम अपने भौतिक शरीर में लौट आए।

6 अप्रैल 2025, ध्यान सत्र में सर ने हमें भगवान विष्णु के सुदर्शन चक्र का अनुभव कराया... यह अनुभव अत्यंत दिव्य था। यह ऐसी अनुभूति थी जिसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता... इसे केवल हृदय से अनुभव किया जा सकता है।

हमारे प्रिय सर और मैडम को हृदय से कृतज्ञता।

कदंबिनी नायक हरिद्वार (उत्तराखंड)





नागपुर शिविर के पवित्र क्षण: ध्यान, शुद्धिकरण और दिव्य जुड़ाव



सर और मैडम को प्रणाम,

एक ऐसा आशीर्वाद जिसकी मैंने कभी कल्पना नहीं की थी, वह नागपुर शिविर के रूप में आया, वास्तव में, यह एक सपना साकार होने जैसा था। मेरी मित्र स्वाती और मैं भोर / सुबह में नागपुर पहुँचे, जहाँ हमें हल्की फुहारों और ठंडी, ताज़गी भरी हवा ने स्वागत किया। वातावरण इतना पवित्र

महसूस हो रहा था, मानो स्वयं प्रकृति हमें अपनाने आई हो। सुबह 8 बजे, हम माँ उमिया धाम पहुँचे, जहाँ सबसे पहले हमने मंदिर में दर्शन किए और फिर ध्यान के लिए गुफा में चले गए। जैसे ही हम गहन ध्यान में लीन हुए, समय जैसे ठहर सा गया।

उस शाम, हमें सर, मैडम और सभी सहभागीयो से मिलने का सौभाग्य मिला। रात्रि के समय, हम गहन ध्यान सत्र के लिए एकत्र हुए, जिसे सर और मैडम ने संचालित किया। यह अनुभव शब्दों से परे था—एक गहरी शुद्धि, जहाँ उच्च आध्यात्मिक शक्तियों की दिव्य ऊर्जा प्रवाहित हुई। यह शांत, ताज़गीभरा और रूपांतरकारी था।





4 अप्रैल 2025, प्रातः मैंने मन ही मन मास्टर क्षितिज को जन्मदिन की शुभकामनाएँ दीं और स्वयं को भगवान श्री विष्णु की उपस्थिति में रहने के लिए धन्य माना। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो आध्यात्मिकता स्वयं हम पर कृपा बरसा रही हो। मास्टर क्षितिज ने हमें उनके जन्मदिन पर एकत्रित होते हुए देखने की कल्पना की थी—और यह अवसर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से आध्यात्मिकता को जानने का सुंदर माध्यम बन गया। पहले ध्यान सत्र के बाद, मेरे भीतर कुछ परिवर्तित हुआ—एक अवर्णनीय आनंद, मानो मैं पूरे ब्रह्मांड से एकाकार हो गई हूँ।

5 अप्रैल 2025, शिविर का शुभारंभ सुबह की सैर और लीना मैडम द्वारा संचालित प्राणायाम सत्र से हुआ। सुबह के सत्र में सर ने भगवान बुद्ध के बारे में बताया—उनके शब्द अत्यंत प्रेरणादायक थे। हमने श्री गुरु नानक देव जी और गुरु अर्जुन देव जी के बारे में भी सीखा, जिससे हमारे आध्यात्मिक ज्ञान का विस्तार हुआ।

ध्यान के दौरान, मुझे वैकुंठ धाम में पहुँचने का अनुभव हुआ—जहाँ मैं श्री विष्णु और श्री लक्ष्मी के चरणों में बैठी थी। मेरे सामने अनंत शयन का दिव्य दृश्य प्रकट हुआ, जिसने मुझे परमानंद से भर दिया। जब मैंने पवित्र शब्द सुना, तो भावनाएँ मुझ पर हावी हो गईं और मेरे आँसू अविरत रूप से बहने लगे। उस क्षण, मैंने महसूस किया—परमात्मा को जंगलों में खोजने की क्या आवश्यकता, जब वह हमारे भीतर ही विराजमान हैं? मुझे स्पष्ट रूप से सुदर्शन चक्र अपने भीतर घूमते हुए अनुभव हुआ—जो सभी अवरोधों और नकारात्मक ऊर्जा को शुद्ध कर





रहा था। जैसे-जैसे यह मुझसे होकर प्रवाहित हुआ, मेरा अंतःकरण निर्मल और हल्का होता चला गया।

जब सुंदर भजन 'राम रस पिया रे' गूँजा, तो मैं अपने आँसुओं को रोक नहीं सकी। भावनाओं की एक लहर मुझ पर छा गई—पूर्ण शुद्धिकरण, हल्कापन, सच्चा आनंद, और अपनी आत्मिक परिवार से मिलने की प्रसन्नता। यह परमानंद की अवस्था थी—एक साक्षात्कार कि जीवन वास्तव में इन क्षणों के लिए जीने योग्य है। आध्यात्मिक परिवार की गर्मजोशी, आत्मीय संबंध, और दिव्य उपस्थिति का परम संतोष मेरे हृदय को स्पंदित कर रहा था।

उंदावली गुफा में भगवान विष्णु की शयन प्रतिमा इतनी दिव्य ऊर्जा से ओतप्रोत थी कि सिर्फ उसका उल्लेख करना ही एक अनुभव था। ध्यान के दौरान, मैंने कई बार शक्तिपात की प्रबल ऊर्जा को महसूस किया। प्रत्येक ध्यान सत्र अवर्णनीय था—एक प्रकाशमय आभा ने मुझे घेर लिया, जिससे अतुलनीय शांति का अनुभव हुआ।

सर द्वारा चार प्रकार की मुक्ति के ज्ञान को सुनना, और फिर पवित्र शब्द के माध्यम से, मेरे भीतर की सभी बाधाएँ टूट गईं। मैंने अपने सिसकियों को रोकने का प्रयास किया, लेकिन आँसू स्वतः ही बहने लगे। ऐसा लगा मानो वर्षों से संचित भावनाएँ और अवरोध पिघल गए। एक दृष्टि में, मैंने स्वयं को गुफा के भीतर देखा, जहाँ मैं श्री विष्णु के चरणों को स्पर्श कर रही थी। जब श्री विष्णु जी ने मेरी आँखों में देखा, ऐसा लगा कि वह मुझे गहराई से देख रहे हैं—नेत्र से नेत्र का मिलन।





मेरा तीसरा नेत्र अत्यंत तेज प्रकाश से चमकने लगा। यह अनुभव सचेत होते हुए भी अचेत होने जैसा था—शारीरिक जगत से परे एक यात्रा। वह प्रकाश किसी अन्य लोक का था, अभिभूत करने वाला, फिर भी अत्यंत शांतिदायक। मेरी आँखों में आँसू थे, जो आंतरिक रूपांतरण को प्रतिबिंबित कर रहे थे।

नागपुर शिविर का अनुभव सिर्फ एक साधारण शिविर नहीं था—यह आत्मा का जागरण, एक दिव्य आशीर्वाद, और आध्यात्मिकता के गहरे रहस्यों की यात्रा थी।

ऊर्जा, दृश्य, भावनाएँ—यह सब मानवीय समझ से परे था।

मैं इस अनुभव को अपने भीतर संजोकर रखती हूँ, यह जानते हुए कि इसने मेरे जीवन, आध्यात्मिकता और ब्रह्मांड को देखने के दृष्टिकोण को सदा के लिए बदल दिया है।

हमारे प्रिय सर और मैडम को हृदय से कृतज्ञता।

रीता कल्या – कार्कला (कर्नाटक राज्य)





एक पवित्र रूपांतरण यात्रा: श्री विष्णु विद्या शिविर में मेरा अनुभव



सर और मैडम को प्रणाम,

मैं नीता चौहान, नागपुर से हूँ। मेरा बेटा कैलिफोर्निया, अमेरिका में रहता है, और मैं हर वर्ष कुछ महीनों तक उसके साथ समय बिताती हूँ। हालाँकि मैंने अप्रैल 2025 में अमेरिका जाने की योजना बनाई थी, मैंने अपनी यात्रा

स्थगित कर दी ताकि 4 से 6 अप्रैल 2025 तक आयोजित श्री विष्णु विद्या शिविर – परम पद में विश्राम में भाग ले सकूँ। यह सैक्रेड सर्कल का पहला ऑफलाइन शिविर था, और इसे अटेंड करने से मिले गहरे लाभों के लिए मैं अत्यंत कृतज्ञ हूँ।

यहाँ का माहौल उत्साह और उमंग से परिपूर्ण था, जिससे हर क्षण विशेष बन गया। सबसे अत्याधिक भावनात्मक और अविस्मरणीय अनुभव था सर और मैडम को प्रत्यक्ष रूप से देखना—गहरे श्रद्धा और आनंद से भरा हुआ वह पल।

3 अप्रैल की शाम, एक सशक्त ध्यान सत्र आयोजित किया गया, जहाँ दिव्य ऊर्जा का आह्वान किया गया, और ध्यान कक्ष आध्यात्मिक कंपन से भर गया।





4 से 6 अप्रैल तक, शिविर में अनेक गहन विषयों को शामिल किया गया, जैसे:

- ◊ भगवान विष्णु के दस अवतार
- ◊ रुद्र ग्रंथि भेदन – आंतरिक गांठों का टूटना
- ◊ चार प्रकार की मुक्ति (मुक्ति के मार्ग):
 - ① सालोक्य – ईश्वर के समान लोक में निवास
 - ② सामीप्य – ईश्वर के निकट रहना
 - ③ सारूप्य – ईश्वर के समान स्वरूप प्राप्त करना
 - ④ सायुज्य – ईश्वर में विलीन होना
- ◊ टू-पॉइंट विधि
- ◊ सुदर्शन चक्र का प्रयोग
- ◊ रहस्यमयी उंदावली गुफाएँ

प्रत्येक सत्र अत्यंत समृद्ध था, जिसने सभी साधकों के मन और आत्मा पर अमिट छाप छोड़ी।

हमें पाटी वाली आई का आशीर्वाद प्राप्त हुआ, जो पारडसिंगा वाली माता की प्रमुख शिष्या हैं और अद्भुत आध्यात्मिक ऊर्जा एवं मार्गदर्शन का संचार करती हैं। रात्रि में, हम भजनों की मधुर धुनों में डूब गए—श्रवण और समर्पण में पूर्णतः समर्पित।

भगवान विष्णु को केवल एक देवता के रूप में नहीं, बल्कि सर्वव्यापी परम चेतना के रूप में अनुभव किया। ध्यान यात्रा आत्मिक शांति और आत्म-साक्षात्कार की ओर ले गई। इसने स्पष्टता, संतुलन, और आध्यात्मिक विकास को प्रेरित किया, जिससे मुझे अपने उच्चतर स्व से गहरा जुड़ाव महसूस हुआ।





मैंने ध्यान के दौरान शरीर में कंपन अनुभव किया और ट्रांस अवस्था में चली गई। यह भावनात्मक उपचार की प्रक्रिया थी, जहाँ मैं विरक्ति और समता विकसित कर रही थी। सुदर्शन चक्र के प्रयोग के दौरान, मेरा तर्जनी अंगुली अत्याधिक स्पंदित हो रही थी।

मैंने व्यापक चेतना का अनुभव किया—एक अनंत में विलीन होने की भावना। यह अंतर्मन की गहरी शांति थी, जहाँ मानसिक कोलाहल सहज रूप से शांत हो गया। मेरे हृदय केंद्र से प्रस्फुटित भक्ति ने मुझे परमानंद से भर दिया।

संपूर्ण व्यवस्थाएँ उत्कृष्ट थीं

🏠 कमरों का आवंटन,
🍽 नाश्ता, भोजन, चाय और रात्रि भोज,
🤝 स्वयंसेवकों का श्रमसाध्य समर्पण,
🚗 एयरपोर्ट और स्टेशन तक पहुँचाने की व्यवस्थाएँ—सभी व्यवस्थाएँ उत्तम थीं।

मेरे अनुभव को शब्दों में व्यक्त करना कठिन है। मैं केवल हृदय से आभार व्यक्त कर सकती हूँ—सर और मैडम को धन्यवाद और मेरी कामना है कि भविष्य में भी उनका मार्गदर्शन मुझे मिलता रहे।
धन्यवाद।

नीता चौहान, नागपुर





सुदर्शन चक्र शक्ति को उपचार और विकास के लिए उपयोग करना



आदरणीय गुरुजी और गुरुमा,

मैं अपने दिल से कुछ शब्द कहना चाहता हूँ ताकि सर के द्वारा साझा की गई ज्ञान और मार्गदर्शन के लिए हृदय से आभार व्यक्त कर सकूँ। आपकी शिक्षाएँ एक प्रकाशस्तंभ की तरह रही हैं, जो मेरे मार्ग को प्रकाशित करती हैं और मुझे जीवन की चुनौतियों को पार करने में

सहायता करती हैं। आपका अनुठा दृष्टिकोण, जो विभिन्न आध्यात्मिक परंपराओं के सूत्रों को एक साथ जोड़ता है, ने मेरी समझ को व्यापक किया है और मुझे ब्रह्मांड से गहरी जुड़ाव महसूस कराने में मदद की है। आपका मार्गदर्शन मेरे लिए एक अनमोल उपहार रहा है, जो मुझे मूल्यवान अंतर्दृष्टि और आध्यात्मिक विकास को समृद्ध करने के लिए व्यावहारिक उपकरण प्रदान करता है।

मैं विशेष रूप से आपके द्वारा भगवान विष्णु के दशावतारों पर दिए गए जोर के लिए आभारी हूँ, जिससे मुझे हिंदू पौराणिक कथाओं की समृद्धि और विविधता को गहराई से समझने में मदद मिली। प्राचीन कथाओं को आधुनिक जीवन से जोड़ने की आपकी क्षमता वास्तव में प्रेरणादायक रही है।





यह अत्यंत अद्भुत है कि आपने श्री विष्णु विद्या के ध्यान ज्ञान को साझा किया, विशेष रूप से सुदर्शन चक्र शक्ति पर केंद्रित अभ्यास। यह अभ्यास न केवल मुझे बल्कि मेरे प्रियजनों और व्यापक समाज को भी शुद्ध और उत्थान करने का उद्देश्य रखता है।

आपके करुणा, ज्ञान और निःस्वार्थता के जीवंत उदाहरण बनने के लिए मैं आपका आभार व्यक्त करता हूँ। मेरे जीवन में आपकी उपस्थिति एक आशीर्वाद रही है, और मैं भाग्यशाली महसूस करता हूँ कि आप मेरे मार्गदर्शक हैं। मैं इस आध्यात्मिक यात्रा को आपके साथ जारी रखने की आशा करता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि आपका ज्ञान और प्रेम मुझे प्रेरित और रूपांतरित करते रहें।

हाल ही में मैंने भगवान विष्णु चक्र ध्यान और उपचार तकनीक को कई परिचित व्यक्तियों पर लागू किया, जिसके अद्भुत परिणाम मिले—

1. फ्रोजन शोल्डर (बायां हाथ) से पीड़ित व्यक्ति – महीनों की परेशानी के बाद समस्या समाप्त।
2. सेवानिवृत्त कलेक्टर (सुबह की सैर के मित्र) – फ्रोजन शोल्डर से 90% रिकवरी, अब बहुत बेहतर महसूस कर रहे हैं।
3. मधुमक्खी के डंक से राहत – मेरे मित्र आर. साहू, जो पार्क में बैठे थे, अचानक मधुमक्खियों के हमले का शिकार हुए। मैंने उन्हें तीन दिन तक चक्र ऊर्जा से उपचार दिया और चौथे दिन दर्द और सूजन से 90% राहत मिली।





- एक शक्तिशाली ध्यान तकनीक जो स्वयं, परिवार, मित्रों और समाज के लिए लाभकारी है।
- इसे घर पर निःस्वार्थ भाव से अभ्यास किया जा सकता है, जिससे यह एक सुलभ और प्रभावी उपचार पद्धति बनती है।

आशुतोष सुबुधि - भुवनेश्वर, ओडिशा





नागपुर शिबिर: कृतज्ञता, अनुभव और यादें



अक्सर मैं खुद से सोचती हूँ, "क्या कोई इतना सौभाग्यशाली हो सकता है?" निस्संदेह, सैक्रेड सर्कल के सदस्य विशेष हैं—चुने हुए लोग। लेकिन मैं...? मैं तो कुछ भी नहीं... फिर भी, मैं भी नागपुर कैंप का हिस्सा बनी। क्या मैं इस आनंद को छुपाऊं या इसे फैलाऊं? हे प्रभु, यह कितनी

बड़ी कृपा है! अनंत धन्यवाद, क्योंकि: "दिव्य अनुग्रह संतों को भी सहजता से प्राप्त नहीं होता"—हमारे गुरुजी और गुरुमाँ साक्षात् दिव्य संत हैं।

एक गहरा प्रथम मिलन

इस शिविर में हमारे पूज्य गुरुओं से पहली बार मिलना मेरे हृदय पर गहरी छाप छोड़ गया। उनकी सादगी, विनम्रता और पृथ्वी से जुड़ी प्रकृति सदैव मेरे लिए प्रेरणा बनी रहेगी। संक्षेप में कहूँ तो, सर और मैडम के साथ मेरा संबंध और भी गहरा हो गया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह सुनकर आपको असीम आनंद की अनुभूति होगी। आप सभी को यह अवश्य ज्ञात होना चाहिए कि जब कोई दिव्य नाम या मंत्र सिद्ध हो जाता है, तो केवल उसे लिखने या उच्चारित करने से ही व्यक्ति ईश्वर के समीप पहुँच जाता है। मैंने भी इसी प्रकार की अनुभूति की—मंत्र: "आदरणीय सर और मैडम, प्रणाम" जब मैं मैडम के साथ अपने अनुभव साझा करना चाहती थी, तब यह मुझे





अप्रत्याशित रूप से प्राप्त हुआ। ये शब्द ऊर्जा से ओतप्रोत हैं, और मुझे पूरे शरीर में कंपन का अहसास होता है। **प्रिय दिव्य मित्रों, यह गुरु मंत्र मेरे लिए विशेष है।** मुझे विश्वास है कि आप सभी को भी इसमें कुछ अद्वितीय अनुभव होगा। इसे खोजें, अनुभव करें, और इस दिव्य उपस्थिति में शांति को महसूस करें। इन क्षणों के दौरान, मुझे न केवल अपने गुरुओं के प्रति, बल्कि ईश्वर के प्रति भी अधिक निकटता का एहसास हुआ। शायद यही झलक **समीपता की मुक्ति** है।

नागपुर शिविर का रूपांतरणकारी अनुभव

कोई भी साधक नागपुर शिविर से बिना संतोष, प्रेम में डूबे और ऊर्जा से परिपूर्ण हुए नहीं लौटा। वहाँ कुछ अलौकिक था—शुद्धिकरण प्रारंभ हुआ, और यह अब भी जारी है। सामूहिक शक्ति ने प्रत्येक प्रभाव को सौ गुना बढ़ा दिया। प्रत्येक साधक ने अपनी तैयारी और योग्यता के आधार पर प्रगति की। कुछ नए साधकों ने पहले ही दिन उल्लेखनीय छलांग लगाई। चमत्कार देखे गए। यहाँ तक कि सबसे छोटे साधक, जो अभी एक वर्ष के भी नहीं थे और चलना सीख रहे थे, ऊर्जा चक्र में अद्भुत रूप से स्थिर थे। उनकी आध्यात्मिक यात्रा हमारी तुलना में कहीं आगे प्रतीत हुई। प्रत्येक ध्यान सत्र अनुठा और गहन था। कभी-कभी मोर, किंगफिशर और गरुड़ जैसे नीले पक्षियों ने हमें अपनी सुरक्षा में लिया। कभी-कभी सब कुछ—वृक्ष, नदी, आकाश—नीला प्रतीत होता था। **वायु और जल तत्व ध्यान** के दौरान, मैंने अपने शरीर में फंसी वायु से मुक्ति महसूस की। जल से संबंधित सभी रोग समाप्त हो गए। मैं स्वस्थ, हल्का और सुगठित महसूस कर रहा था—मेरे जैसे व्यक्ति के लिए यह एक अद्भुत अनुभूति थी।





गहन आध्यात्मिक अनुभव

ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र ग्रंथि ध्यान एक अद्भुत अनुभव था। इसने मेरे पूरे शरीर को नीचे से ऊपर तक कंपनित किया, और शक्तिशाली स्पंदन लंबे समय तक बने रहे। **सुदर्शन चक्र** अविश्वसनीय गति से घूम रहा था। प्रारंभ में **रुद्र भेदन** चुनौतीपूर्ण लगा, लेकिन जल्द ही यह सहज हो गया। **आज्ञा चक्र** की ऊर्जा प्रवाह अत्यंत सुखद थी, जिससे उपलब्धि की भावना उत्पन्न हुई। **विष्णु ज्योति ध्यान** के दौरान, मैं प्रारंभ में सचेत थी, लेकिन धीरे-धीरे चेतना से परे चला गयी। मैंने स्वयं को ऊर्जा के प्रति समर्पित कर दिया, जिससे मेरे लिए जो भी सर्वोत्तम था, वह प्रकट हो सके। फिर भी, ऐसे अनुभव कभी-कभी सोचने पर मजबूर कर देते हैं—**क्या सब कुछ सही हुआ?**

वैकुंठ यात्रा- वैकुंठ यात्रा (सालोक्य, सामीप्य मुक्ति) इतनी स्वाभाविक लगी जैसे मैं अपने **मायके** जा रही हूँ—बिना किसी बाधा के वहाँ घुल-मिल जाना और फिर अपनी जिम्मेदारियों को निभाने के लिए लौट आना। यह एक सुंदर, सुकूनदायक और शांतिपूर्ण अनुभव था। हम सभी एक दिन इस धरती को छोड़ देंगे, लेकिन ध्यान की सहजता दर्शाती है कि **मेरे परम पिता** सदैव मेरे साथ हैं। अपनी दूसरी **वैकुंठ यात्रा** के दौरान, मैंने भगवान विष्णु के प्रति गहरी निकटता महसूस की। **देवी लक्ष्मी** उनके चरणों के निकट बैठी थीं, फिर हल्का आगे बढ़ीं, जिससे मुझे भी उनके चरण स्पर्श करने का अवसर मिला। **भगवान विष्णु** ने हल्की मुस्कान दी।





सबसे गहन ध्यान

अगले दिन का ध्यान अत्यंत, अत्यंत, अत्यंत गहरा था। हम सभी जानते हैं कि **बरबरिक** ने संपूर्ण महाभारत युद्ध को देखा था। जब उनसे पूछा गया कि कौन-सी सेना सर्वश्रेष्ठ तरीके से लड़ी, तो उन्होंने उत्तर दिया, **"मैंने कोई योद्धा नहीं देखा—सिर्फ सर्वत्र घूमता हुआ सुदर्शन चक्र देखा।"** इस ध्यान का अनुभव बिल्कुल वैसा ही था। आध्यात्मिक मार्ग पर, जो साधक गहन प्रगति की खोज में हैं, उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण पहलू है आत्म-शुद्धिकरण। इस ध्यान में, हमारे गुरु हमारे सारथी बन गए, जिन्होंने संदेह, बाधाओं और आध्यात्मिक अवरोधों को मार्गदर्शन देकर दूर किया—और सुदर्शन चक्र की शक्ति से उन्हें सदा के लिए समाप्त कर दिया। यह दिन आत्मा के भीतर के सभी नकारात्मक तत्वों से युद्ध करने का था, और प्रत्येक साधक विजयी रहा। ऐसा लगा जैसे वर्षों के पाप, बोझ और अपराधबोध आँसुओं की बाढ़ में धुल गए। ध्यान के बाद, वातावरण युद्ध के बाद की शांति जैसा प्रतीत हुआ। सभी साधक गहन शांति में उतने समय तक बैठे रहे जितना वे चाहते थे। माँ को आलिंगन करके, उनके चरणों का स्पर्श करके, हमने स्वयं को एक नए स्वरूप में पुनः खोज लिया।

दिव्य जुड़ाव के अंतिम क्षण

दिन के अंत में, **टू-पॉइंट विधि** के माध्यम से, हमने पुनः **भगवान हरी** की उपस्थिति का अनुभव किया। **चेतन अवस्था** में, मैं **उंदावली गुफाओं** में प्रवेश कर **भगवान विष्णु के चरणों** का स्पर्श किया। जैसे ही मैंने ऐसा किया, वे **मंद मुस्कुराए** और अपनी दृष्टि मेरे **तीसरे नेत्र** पर केंद्रित की—एक अविस्मरणीय अनुभव जो सदा मेरी स्मृतियों में अंकित रहेगा।





अंतिम दिन: ईश्वरीय विलय तीसरे और अंतिम दिन, प्रातःकालीन सत्र में, हम पुनः भगवान हरी के लोक में प्रवेश किए, उनकी उपस्थिति पहले से अधिक गहन रूप से महसूस हुई। सारूप्य मुक्ति का अनुभव ऐसा था कि हर कोई स्वयं को भगवान के समान अनुभव कर रहा था। मैं स्वयं नहीं रही—विलीन हुआ, समाहित हुआ, और अंततः उनमें लुप्त हो गया। सांध्यकालीन सत्र मेरे हृदय के सबसे निकट था, सबसे बहुमूल्य—परम अवस्था में विश्राम। हमने वैकुण्ठ से परे जाकर प्रकाश से आगे बढ़ते हुए पूर्ण अंधकार में प्रवेश किया, जहाँ परम शांति व्याप्त थी। आज भी, मैं उस क्षण में तुरंत लौट सकती हूँ—शांति... केवल शांति... आहह...

सहेजित स्मृतियाँ और कृतज्ञता

ध्यान, ज्ञान और शांति से परे, इस शिविर की स्मृतियाँ जीवनभर अविस्मरणीय बनी रहेंगी। मैंने इस शिविर से केवल पाया है, लेकिन मैं उन सभी के प्रति अत्यंत कृतज्ञ हूँ जिनकी निःस्वार्थ सेवा ने इसे अद्वितीय बना दिया। मेरी इच्छा है कि हर वर्ष का पहला शिविर अप्रैल में माँ उमिया धाम, नागपुर में आयोजित हो।

क्षितिज को हृदय से आभार, जिनकी भक्ति और आशीर्वाद हमें क्षितिजों से परे नई यात्राओं पर निकलने की प्रेरणा देते हैं—दिव्य कृपा से अगला गंतव्य जगन्नाथ पुरी है। अंततः, मैं अपने दिव्य परिवार और ब्रह्मांड को इस यात्रा में मेरे समर्थन के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ।

- प्रेरणा शर्मा, वडोदरा





पहला ध्यान शिविर अनुभव: एक दिव्य यात्रा



दिवाकर सर और लीना मैम के मार्गदर्शन में, 100 साधकों का समूह तीन दिवसीय ध्यान साधना में सम्मिलित हुआ। यह केवल एक साधारण सत्र नहीं था, बल्कि आत्मा की गहराइयों में उतरने का एक अनूठा अवसर था।

ध्यान की इस आध्यात्मिक यात्रा की शुरुआत भगवान विष्णु के विभिन्न अवतारों की अलौकिक गाथाओं से हुई। इन अवतारों का ध्येय केवल संसार को दिशा देना नहीं था, बल्कि मानव की स्वतंत्र इच्छा को उचित मार्ग पर प्रवाहित करना भी था। प्रत्येक अवतार हमें यह सिखाने आया कि मन के उतार-चढ़ाव को कैसे संतुलित किया जाए, और विचारों की स्थिरता कैसे प्राप्त की जाए।

पहले दिन, जैसे ही साधना आरंभ हुई, मैं एक गहन नींद जैसी अवस्था में प्रवेश कर गया। नीली रोशनी की एक सुंदर आभा मेरी दृष्टि के चारों ओर फैल गई। प्रारंभिक अवस्था में कुछ विचार बाधा उत्पन्न करते रहे, किंतु जैसे-जैसे ध्यान गहन होता गया, मन की हलचल स्वयं विलीन हो गई। **दूसरे दिन**, भीतर की शांति और अधिक सघन हो गई, मानो आत्मा शून्यता को आलिंगन कर रही हो। **लेकिन तीसरे दिन** का अनुभव परम जादुई और अलौकिक रहा।

अंतिम सत्र में दिवाकर सर और लीना मैम ने हमें उन्दावली गुफा





मैं भगवान विष्णु के चरणों की ऊर्जा का अनुभव करने के लिए निर्देशित किया। उन्होंने हमें मरकबा (Merkaba) ध्यान विधि द्वारा वहां जाने का मार्ग बताया, जहाँ परम सत्ता का दिव्य स्पंदन प्रकट होता है। जैसे ही मैंने मरकबा ध्यान आरंभ किया, मुझे अपने अंतः में एक अद्भुत गति का अनुभव हुआ। भले ही मेरी साधना में पहले कोई दृश्य प्रकट नहीं होते थे, किंतु इस बार जैसे ही मैंने विष्णुजी के चरणों को मन में ध्यान किया, मैं एक अतुलनीय चेतना के प्रकाश में प्रविष्ट हो गया। चारों ओर नीला तेज प्रकाश प्रवाहित हो रहा था। ऐसा प्रतीत हुआ मानो मैं एक ऊर्जा के दिव्य गोले के भीतर स्थित हूँ—जहाँ न कोई विचार थे, न कोई पहचान—केवल शाश्वत मौन और ब्रह्मांडीय शांति।

इस अनुभव ने मुझे कालातीत अवस्था में पहुंचा दिया, जहाँ समय का कोई अस्तित्व नहीं था। केवल शुद्ध अस्तित्व, शुद्ध चेतना, और दिव्यता का एक अनंत प्रवाह था।

कुछ समय पश्चात्, बाहरी जगत की ध्वनियाँ पुनः सुनाई देने लगीं और मैं ध्यान से बाहर आया। वहाँ उपस्थित सभी साधक आनंदित थे—सभी की आँखों में दिव्यता का अनुभव झलक रहा था। तालियाँ गूँज रही थीं, किंतु यह तालियाँ केवल साधना के लिए नहीं, बल्कि उस ब्रह्मांडीय शक्ति के प्रति आभार स्वरूप थीं, जिसने हमें अपने आलिंगन में समाहित किया।

इस पवित्र ध्यान के लिए, दिवाकर सर और लीना मैम के अलौकिक मार्गदर्शन हेतु, मैं अनंत कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। यह केवल एक साधना नहीं थी, बल्कि आत्मा के जागरण की यात्रा थी।

- मनोरथ मेश्राम





मेरे बच्ची के साथ एक दिव्य विश्राम: एक ब्रह्मांडीय अनुभव"



श्री विष्णु विद्या शिबिर के दौरान, मुझे अपने 9 महीने के बच्ची रोशी के साथ अपना पहला ध्यान सत्र करने का अवसर मिला।

दिलचस्प बात यह थी कि जब भी ध्यान शुरू होता था, रोशी सो जाती थी, जिससे मुझे निर्देशों पर ध्यान केंद्रित करने में मदद मिली।

एक गहरा अनुभव

शिबिर के दूसरे दिन, सुबह के सत्र में, मुझे एक अद्भुत अनुभव हुआ। जब मैंने ध्यान शुरू किया, तो मैंने एक विशाल सोते हुए विष्णु की मूर्ति देखी। अचानक, मैंने एक बड़े काले नाग, शेषनाग को देखा और उसके चिकने शरीर को छुआ, बिना किसी भय के। अनुभव और गहरा हो गया जब मैं विष्णु के चरणों तक पहुंची, उन्हें छुआ और उनके शरीर में प्रवेश किया।

ब्रह्मांड की खोज

विष्णु के शरीर के अंदर, मुझे एक विशाल ब्रह्मांड मिला, जिसमें खुला आकाश था। मैंने तारे, ग्रह, और काले अंतरिक्ष की





गहराइयों को देखा, जो सभी आयामों में अंतहीन रूप से फैले हुए थे। यह ऐसा महसूस हुआ जैसे मैं आकाश में तैर रही हूँ, एक विशाल और अंतहीन महासागर से घिरी हुई। मैं आसानी से चलती हुई महसूस कर रही थी, जैसे कि मैं ब्रह्मांड में तैर रही हूँ।

जब मैं प्रत्येक चक्र के माध्यम से यात्रा करती थी, तो मैंने विभिन्न रंगों और ऊर्जाओं का अनुभव किया। मैंने अपने चक्रों को संरक्षित महसूस किया। जब मैंने अंततः विष्णु की बड़ी आंखें देखीं, तो मुझे लगा कि वह मुझे अपने पास बुला रहे हैं या मुझे अपने सिर की ओर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। मैंने एक भव्य आकृति को मुकुट पहने देखा, और मैंने उसे छुआ और गहरी नींद में चली गई।

एक स्थायी प्रभाव

इस अनुभव ने मुझ पर एक स्थायी प्रभाव छोड़ा है। जब मैं इसके बारे में लिखती हूँ, तो यादें वापस आती हैं। चक्रों के माध्यम से यात्रा और विष्णु की ऊर्जा से जुड़ना वास्तव में परिवर्तनकारी था। हालांकि मुझे तीसरी आंख के बाद की हर चीज याद नहीं है, यह अनुभव मेरे साथ बना हुआ है।

सोनिया पानतावने -नारायणे, औरंगाबाद





सैक्रेड सर्कल के बारे में



हमारा मिशन

सैक्रेड सर्कल में हमारा उद्देश्य लोगों को सशक्त बनाना है। हम हर रविवार शाम 4:00 बजे निःशुल्क ऑनलाइन ध्यान सत्र आयोजित करते हैं। इन दो घंटे के सत्रों में हम स्वास्थ्य, तनाव और चिंता, संबंधों, करियर चुनौतियों और आध्यात्मिक प्रश्नों पर गहन चर्चा के लिए एक सहायक वातावरण प्रदान करते हैं।





क्वांटम भौतिकी की आधुनिक विज्ञान और **भारतीय एवं पश्चिमी आध्यात्मिकता** की गहरी विद्या द्वारा निर्देशित होकर, हम सरल लेकिन **अत्याधिक प्रभावी तकनीकों** को साझा करते हैं, जिससे प्रतिभागी जीवन की बाधाओं को स्पष्टता और सहजता से पार कर सकें। हमारा लक्ष्य **ध्यान को सुलभ और परिवर्तनकारी** बनाना है, ताकि **हर व्यक्ति** इन्हें आसानी से सीख सके, अभ्यास कर सके और अपने जीवन में लागू कर सके।

अपने **संकल्प के हिस्से** के रूप में, हम प्रतिभागियों के लिए ध्यान सत्रों के **रिकॉर्डिंग** भी उपलब्ध कराते हैं, ताकि वे इन तकनीकों का अभ्यास सत्रों के बाद भी जारी रख सकें। **सैक्रेड सर्कल** एक उन्नति, उपचार और **आत्म-खोज का पवित्र स्थान** है—पूर्णतः निःशुल्क, क्योंकि **कल्याण कोई विशेषाधिकार नहीं, बल्कि सभी का अधिकार** होना चाहिए।

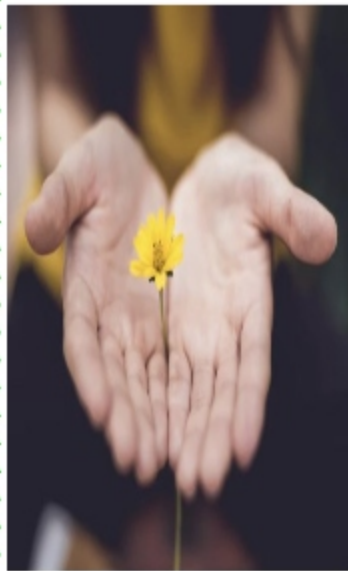




उपचार, अभिव्यक्ति और जागरूकता

हमारे कार्यक्रमों का अन्वेषण करें, जो **उपचार, अभिव्यक्ति, आध्यात्मिक विकास, उन्नत गुरुओं से जुड़ने** और बहुत कुछ को समर्पित हैं।

हम आपको उन शक्तिशाली तकनीकों से परिचित कराते हैं जो **स्वस्थ जीवन, सकारात्मक ऊर्जा और गहरी आध्यात्मिकता** की ओर मार्गदर्शन करती हैं। **आध्यात्मिक उत्थान** की इस यात्रा में, हम आपको **संतुलन, शांति और आत्म-खोज** में मदद करने के लिए यहां हैं।



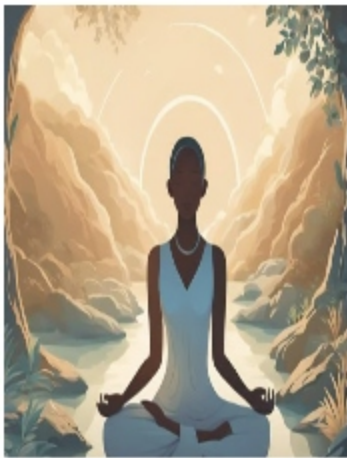
उपचार (हीलिंग)

शरीर, मन और आत्मा के उपचार के लिए सरल और प्रभावशाली तकनीकों का अन्वेषण करें। ये विधियाँ **स्वस्थ जीवन और सकारात्मक ऊर्जा** को बढ़ाने में मदद करती हैं। इसके अलावा, **पानी को ऊर्जा से भरने की प्राकृतिक और सरल विधियाँ** सीखें, जो बेहतर **स्वास्थ्य और पौधों की तेजी से वृद्धि** में सहायक होती हैं।





अभिव्यक्ति (मैनिफेस्टेशन)
बेहतर **संबंधों**, नौकरी और करियर के लिए **अभिव्यक्ति तकनीकों** की शक्ति को खोलें। ये विधियाँ आपके सपनों और लक्ष्यों को वास्तविकता में बदलने में मदद कर सकती हैं। अपने **सीमित विश्वासों** और अवचेतन अवरोधों को दूर करें, जो जीवन में प्रगति में बाधा डाल सकते हैं। सही दृष्टिकोण और ऊर्जात्मक तकनीकों से, आप अपने **सर्वोत्तम भविष्य** को आकार दे सकते हैं।



आध्यात्मिक विकास
अपने उच्चतर आत्म, संरक्षक देवदूतों, आत्मिक मार्गदर्शकों, दिव्य और ब्रह्मांडीय शक्तियों से जुड़ें और उनसे निरंतर मार्गदर्शन प्राप्त करें। ध्यान की शांति और समाधि के आनंद का अनुभव करें, जो आपको गहन आध्यात्मिक जागरूकता और आंतरिक संतुलन प्रदान करता है।





हमारे कार्यक्रम

हमारे ऑनलाइन सत्रों का अन्वेषण करें, जो विद्यार्थियों, युवाओं, गृहस्थों और आध्यात्मिक साधकों द्वारा सामना किए जाने वाले विभिन्न मुद्दों को संबोधित करते हैं।



शरीर और मन का उपचार

शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक पहलुओं में कल्याण को बढ़ावा देने और पुनर्स्थापित करने की प्रक्रिया।



अध्ययन में एकाग्रता

अकादमिक सामग्री को सकारात्मक रूप से समझने और सीखने के लिए ध्यान केंद्रित करने की क्षमता।



समृद्धि के लिए अभिव्यक्ति

योग्य नौकरी, करियर और समृद्धि आकर्षित करने के लिए कंटम विश्वास तकनीकों द्वारा सीमित विश्वासों को हटाना।



संबंधों की समस्याओं का समाधान

व्यक्तियों के बीच संघर्षों और चुनौतियों को दूर करके समझ और सामंजस्य को सुधारना।





सभी प्रकार के भय को दूर करना
ऊँचाई, पानी, आग, मृत्यु और चिंता
उत्पन्न करने वाले विचारों से उबरना।



अंतर्ज्ञान का विकास
बिना सचेतन तर्क या प्रमाण के
कुछ समझने या जानने की क्षमता
को बढ़ाना।



डीएनए सक्रियण
व्यक्ति के डीएनए में निहित क्षमता और
योग्यताओं को जागृत या बढ़ाना।



पूर्व जन्म स्मरण
पिछले जन्मों से जुड़े स्मरण और
अनुभवों का अन्वेषण करना।



आकाशिक अभिलेख
पूर्व जन्मों में घटित घटनाओं को
पहचानना और उन्हें हटाकर जीवन को
बेहतर बनाना।



**उच्चतर आत्म और "आई
एम" उपस्थिति से मार्गदर्शन**
अपने उच्चतर आत्म और आई एम
उपस्थिति से अंतर्दृष्टि और
मार्गदर्शन प्राप्त करें।





मर्कबा सक्रियण

शरीर के चारों ओर एक ऊर्जात्मक क्षेत्र सक्रिय करना, जिससे खगोलीय यात्रा (एस्ट्रल ट्रेवल) संभव हो सके।

महान केंद्रीय सूर्य से जुड़ना

उपचार और रूपांतरण के लिए शक्तिशाली और दिव्य ऊर्जा के साथ समन्वय स्थापित करना।



अमृत शक्ति द्वारा उपचार और आध्यात्मिक विकास

धन्वंतरि, सुश्रुत और वायलेट फ्लेम की शक्तिशाली उपचार ऊर्जा से स्वास्थ्य और आध्यात्मिक प्रगति को बढ़ावा देना।

उन्नत गुरुओं से जुड़ना

ऐसे दिव्य और प्रबुद्ध हस्तियों से जुड़ना, जिन्होंने शारीरिक अस्तित्व को पार कर लिया है और अब ज्ञान और मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।



गैलेक्टिक प्राणियों से सहायता

प्राप्त करना - अर्कटूरियन, प्लेइडियन, सिरियन, एंड्रोमेडियन जैसी गैलेक्टिक प्रजातियों से जुड़कर, इन उन्नत ब्रह्मांडीय प्राणियों से मार्गदर्शन और सहायता प्राप्त करना।

प्राचीन मिस्र की ऊर्जात्मक

यात्रा पिरामिड, स्फिंक्स और मिस्र के मंदिरों से उपचार और ज्ञान प्राप्त करना, तथा ओथ, ईसिस, ओसिरिस, सेखमेट जैसे प्राचीन मिस्री देवताओं से दिव्य आशीर्वाद ग्रहण करना।





Tachyon ऊर्जा

शून्य बिंदु क्षेत्र और टैक्यॉन ऊर्जा से जुड़कर उपचार, अभिव्यक्ति और आध्यात्मिक उत्थान को बढ़ावा देना।

हमसे संपर्क करने में संकोच न करें

यदि आपको कोई प्रश्न या चिंता हो,

✦ तो कृपया हमसे sacredcircle45@gmail.com पर संपर्क करें। हम आपके रुचि की सराहना करते हैं और आपकी बात सुनने के लिए उत्सुक हैं।

✦ हमारी वेबसाइट:

<https://sacredcirclegroup.com>

✦ हमारा YouTube चैनल:

<https://www.youtube.com/@sacredcircle8336> .

आपकी आध्यात्मिक यात्रा में सहायता करने के लिए हम यहाँ हैं!

